तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 4, मार्च 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

ज्ञान-विज्ञान का शिक्षण भी कौशलों का प्रशिक्षण भी

शिक्षा से उजियार कबीरा

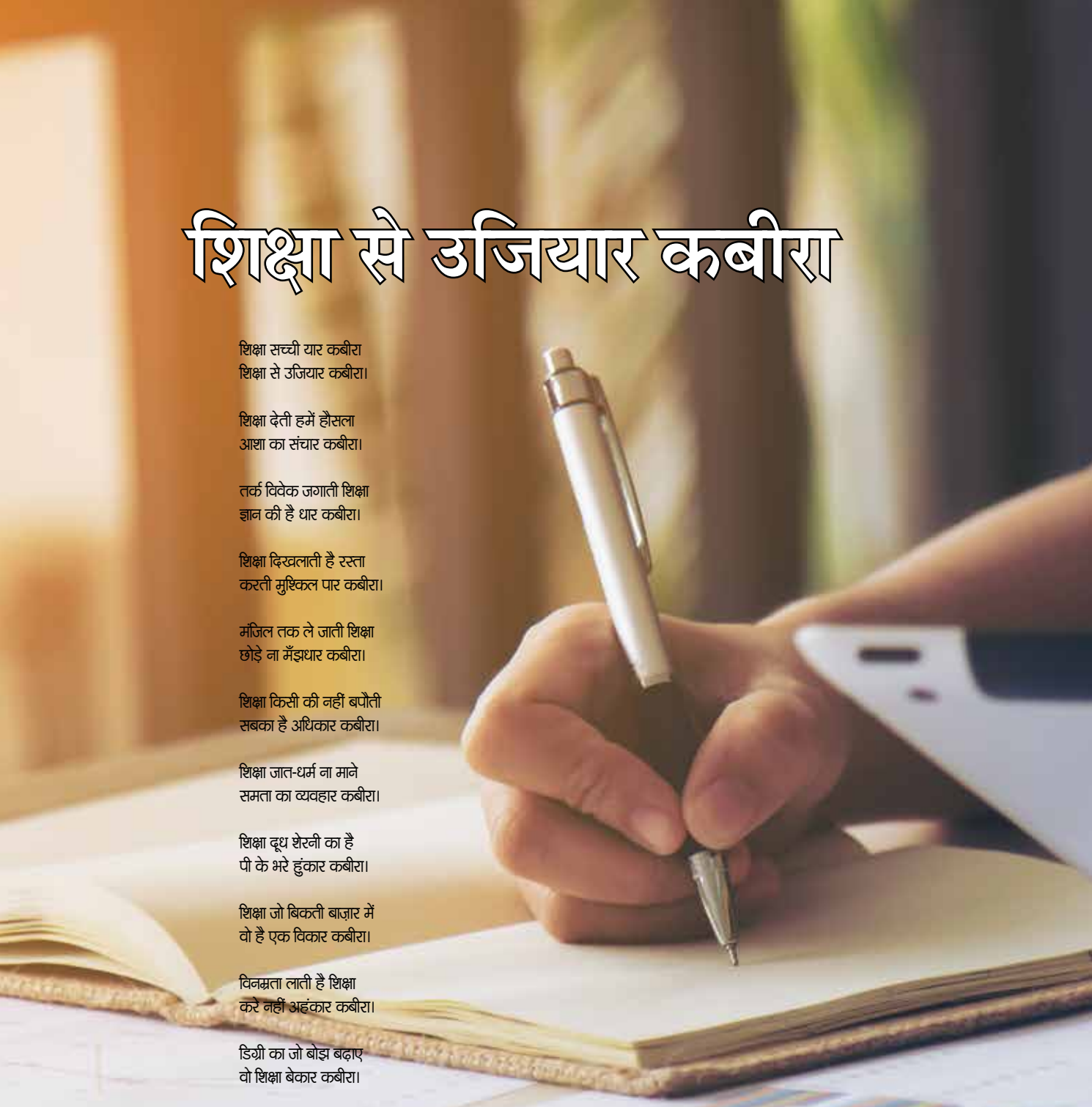

शिक्षा सच्ची यार कबीरा
शिक्षा से उजियार कबीरा।

शिक्षा देती हमें हौसला
आशा का संचार कबीरा।

तर्क विवेक जगाती शिक्षा
ज्ञान की है धार कबीरा।

शिक्षा दिखलाती है रस्ता
करती मुश्किल पार कबीरा।

मंजिल तक ले जाती शिक्षा
छोड़े ना मँझधार कबीरा।

शिक्षा किसी की नहीं बपौती
सबका है अधिकार कबीरा।

शिक्षा जात-धर्म ना माने
समता का व्यवहार कबीरा।

शिक्षा दूध शेरनी का है
पी के भरे हुंकार कबीरा।

शिक्षा जो बिकती बाज़ार में
वो है एक विकार कबीरा।

विनम्रता लाती है शिक्षा
करे नहीं अहंकार कबीरा।

डिग्री का जो बोझ बढ़ाए
वो शिक्षा बेकार कबीरा।

अरुण कुमार कैहरबा
हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, करेड़ा खुर्द
खण्ड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मार्च 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
नितिन कुमार यादव
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

संवर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"स्किल, रि-स्किल और अप-स्किल के मंत्र को जानना, समझना और इसका पालन करना हम सभी के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है।"
-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

- व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल 5
- तुम्हारा हुनर ही देश का सरमाया 7
- कौशल विकास में हरियाणा पूरे देश के सामने बना मिसाल 11
- व्यावसायिक व सामान्य शिक्षा का एकीकरण अत्यावश्यक 16
- कौशल केंद्रित हो शिक्षा का ताना-बाना 18
- हुनर : एक पहल 19
- करियर प्लानिंग: जितनी जल्दी हो उतनी बेहतर 20
- समाचार 21
- आकर्षण का केन्द्र बना राजकीय उच्च विद्यालय बहादुरपुर 22
- राष्ट्रीय कला-उत्सव में मुस्कान ने लहराया हरियाणा का परचम 25
- बाल सारथी 26
- पर्यावरण संरक्षण को समर्पित परियोजना-पैनों का हस्पताल 28
- उनकी आज़ादी में कम नहीं भारत का योगदान 30
- Is it necessary to rein in social media platforms? 32
- You deserve good... 34
- Compendium of Academic Courses After +2 35
- Out of my Depth 40
- Melodies of Our Universe 45
- Reopening of Schools 46
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

फ्रंट पेज फोटो: डॉ. प्रदीप राठौर
बैक पेज फोटो व कोलाज : ओम प्रकाश कादयान

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शैक्षणिक के साथ व्यावसायिक क्षमताओं का विकास

शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा तब तक अधूरी रहेगी, जब तक उसे रोज़गारोन्मुखी बनाने की बात नहीं होगी। एक सामान्य जन यही सोचकर शिक्षा ग्रहण करता है कि इसके माध्यम से वह आजीविका अर्जन करेगा। जब ऐसा नहीं हो पाता तब उसके भीतर अपार हताशा पनपती है और बेरोज़गारों की एक लंबी पंक्ति दिखाई देने लगती है। ऐसे में शिक्षा-व्यवस्था पर भी उंगली उठना लाज़िमी है। ऐसा नहीं है कि देश में आज़ादी के बाद शिक्षा को रोज़गारमुखी बनाने के प्रयास नहीं हुए। आईटीआई, पोलिटेक्निक तथा अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थान लगातार ऐसा कार्य करते रहे हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि व्यावसायिक शिक्षा को चरणबद्ध तरीके से विद्यालय स्तर से ही चलाने व उच्चतर शिक्षण संस्थानों में एकीकृत करने की दिशा में अभी भी काफी काम करने की दरकार है। सरकारी व व्यावसायिक क्षेत्रों में भी आजकल उच्च स्तर के कौशल की माँग जिस प्रकार से बढ़ रही है उसे देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि हर विद्यार्थी के भीतर कुछ कौशल भी विकसित किए जाएँ। विद्यालय स्तर पर ही मुख्यधारा की शिक्षा का सामंजस्य व्यावसायिक शिक्षा के साथ बिठाया जाए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा पर काफी बल दिया गया है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि आरंभिक शिक्षा से ही व्यावसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान करते हुए इसे चरणबद्ध ढंग से विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में मुख्यधारा की शिक्षा के साथ-साथ चलाया जाए। बालपन से ही विद्यार्थी न केवल कुछ व्यावसायिक कौशलों को सीखें बल्कि श्रम की प्रति गरिमा का पाठ भी पढ़ें। हालांकि हरियाणा एनएसक्यूएफ कार्यक्रम के तहत इस दिशा में काफी सराहनीय कार्य कर रहा है जो दूसरे राज्यों के लिए भी एक आदर्श बना हुआ है।

प्रस्तुत अंक 'विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षण' पर केंद्रित किया गया है। आपके अमूल्य विचारों व सुझावों की हमें हमेशा की तरह प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

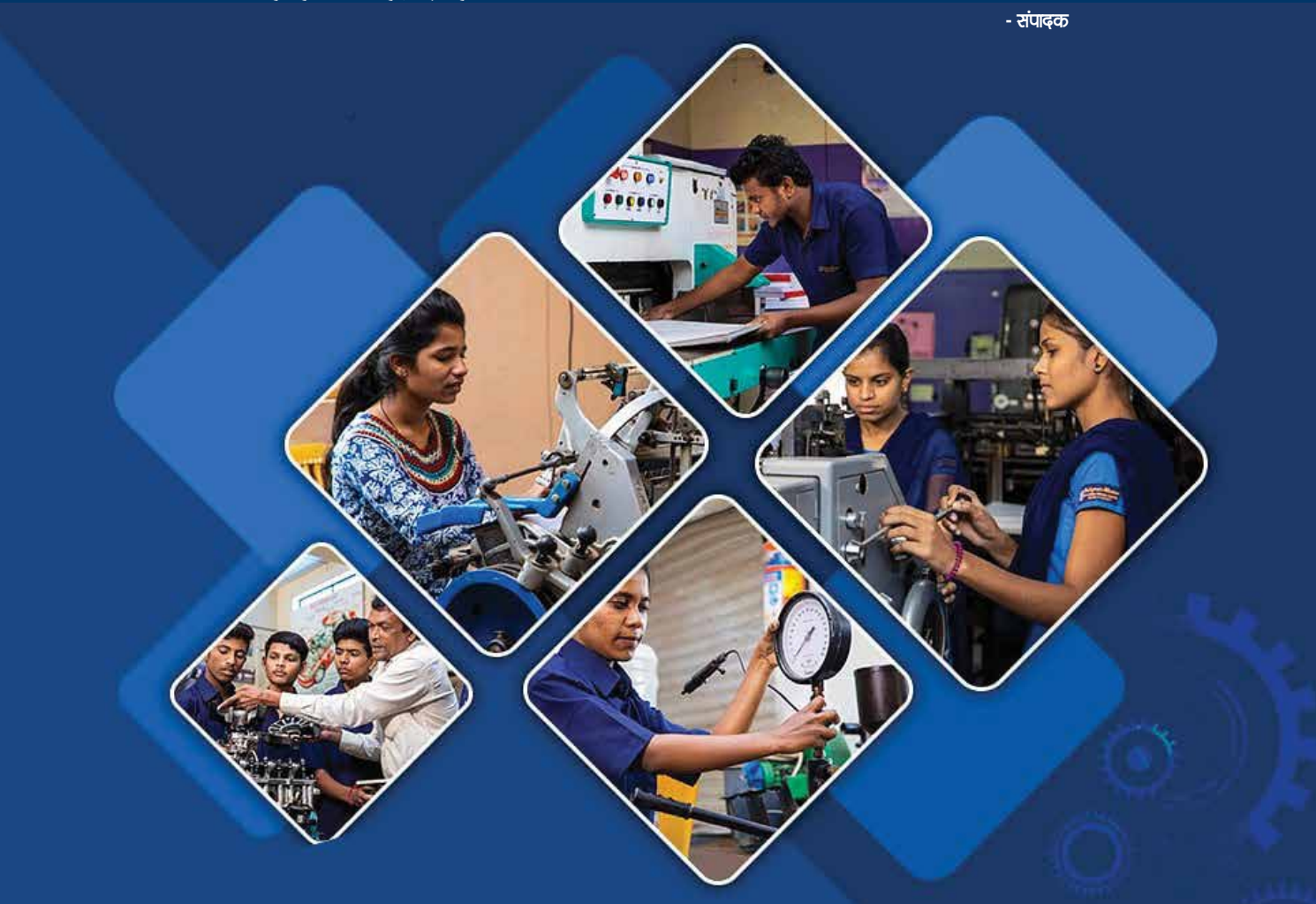

व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल

सुदेश रानी

नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा पर काफी बल दिया गया है। नीति में स्पष्ट कहा गया है कि इसका उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा से जुड़ी सामाजिक पदानुक्रम की स्थिति को दूर करना है और इसके लिए आवश्यक होगा कि समस्त शिक्षण संस्थान जैसे- स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में चरणबद्ध ढंग से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत किया जाए और इसकी शुरुआत आरंभिक वर्षों में व्यावसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान करने से हो जो कि फिर सुचारु रूप से उच्चतर प्राथमिक, माध्यमिक कक्षाओं से होते हुए उच्चतर शिक्षा तक जाए। इस तरह से नीति में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करना यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखे और अन्य कई व्यवसायों से परिचित हो। ऐसा करने के परिणामस्वरूप वह श्रम की महत्ता और भारतीय कलाओं सहित अन्य विभिन्न व्यवसायों के महत्त्व से परिचित होगा।

50 प्रतिशत विद्यार्थी पाएँगे व्यावसायिक प्रशिक्षण-

नई शिक्षा नीति में यह लक्ष्य रखा गया है कि वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जाए जिसके लिए लक्ष्य और समयसीमा के साथ एक स्पष्ट कार्य योजना विकसित की जाएगी। यह सतत विकास लक्ष्यों के लक्ष्य संख्या 4.4 के साथ संगतता रखते हैं, और भारत के जनसंख्या रूपी संसाधन के पूर्ण लाभ को प्राप्त करने में मदद करेगा। यह भी कहा गया है कि जीईआर के लक्ष्यों को तय करते वक्त व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों की संख्या को भी ध्यान में रखा जाए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि अब व्यावसायिक क्षमताओं का विकास और अकादमिक या अन्य क्षमताओं का विकास साथ-साथ होगा। अगले दशक में चरणबद्ध तरीके से सभी माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक विषयों में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत किया जाएगा। इसके लिए माध्यमिक विद्यालय, आईटीआई, पॉलिटेक्निक और स्थानीय उद्योगों आदि के साथ संपर्क और सहयोग करेंगे।

विद्यालयों में स्थापित होंगी कौशल प्रयोगशालाएँ-

नई शिक्षा नीति में इस बात को स्पष्ट रूप से कहा गया है कि स्कूलों में हब और स्पोक मॉडल में कौशल प्रयोगशालाएँ भी स्थापित की जाएँगी। इससे अन्य स्कूल

भी इस सुविधा का उपयोग कर सकेंगे। निश्चित तौर पर यह बहुत सराहनीय कदम है। हरियाणा ने तो इस दिशा में प्रयास आरंभ भी कर दिए हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क यानी एनएसक्यूएफ के तहत यह कार्य किया जा रहा है।

नीति में इस बात का उल्लेख किया गया है कि उच्चतर शिक्षा संस्थान स्वयं ही या फिर उद्योगों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करेंगे। वर्ष 2013 में शुरू की गई डिग्री बी. वोक पूर्व ही तरह ही जारी रहेगी, लेकिन इसके अतिरिक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रम अन्य सभी स्नातक डिग्री कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों के लिए उपलब्ध होंगे, जिसमें 4 वर्षीय बहु-विषयक स्नातक कार्यक्रम भी शामिल रहेगा। उच्चतर शिक्षण संस्थानों को सॉफ्ट स्किल्स सहित विभिन्न कौशलों में सीमित अवधि के सर्टिफिकेट कोर्स करने की भी अनुमति होगी। 'लोक विद्या' अर्थात् भारत में विकसित महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक ज्ञान से जुड़े विषयों को व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में एकीकरण के माध्यम से छात्रों के लिए सुलभ बनाया जाएगा। जहाँ भी संभव हो, ओडीएल मोड़ के माध्यम से भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को संचालित करने की संभावना तलाश की जाएगी।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्पष्ट कहा गया है कि अगले दशक में व्यावसायिक शिक्षा को चरणबद्ध ढंग से सभी विद्यालयों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों में एकीकृत किया जाएगा। व्यावसायिक शिक्षा के फोकस एरिया का चुनाव, कौशल अंतर विश्लेषण (स्किल गैप एनालिसिस) और स्थानीय अवसरों के आधार पर किया जाएगा। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय इस पहल की देखरेख के लिए उद्योगों के सहयोग से, व्यावसायिक शिक्षा के विशेषज्ञों और व्यावसायिक मंत्रालयों के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर एक राष्ट्रीय समिति नेशनल कमेटी फॉर द इंटीग्रेशन ऑफ वोकेशनल एजुकेशन (एनसीआईवीई) का गठन करेगा।

नीति में इस बात की आवश्यकता बताई गई हैं कि इस प्रक्रिया को आरंभ करने वाले संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे नवाचार के माध्यम से ऐसे मॉडल और प्रणालियों की खोज करें जो कि सफल हों और फिर उन्हें एनसीआईवीई द्वारा स्थापित तंत्र के माध्यम से अन्य संस्थाओं के साथ साझा करें, ताकि व्यावसायिक शिक्षा की पहुँच को विस्तार देने में सहायता मिल सके। व्यावसायिक शिक्षा और अप्रेंटिसशिप प्रदान करने वाले विभिन्न मॉडलों को उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा भी प्रयोग में लाया जाएगा। उद्योगों के साथ साझेदारी के तहत उच्चतर शिक्षा संस्थानों में इन्क्यूबेशन केंद्र स्थापित किए जाएँगे।

एनएसक्यूएफ को दिया जाएगा विस्तार

शिक्षा नीति में यह कहा गया है कि राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) को प्रत्येक विषय व्यवसाय/रोजगार के लिए अधिक विस्तारपूर्वक निर्मित किया जाएगा। इसके अलावा, भारतीय मानकों को अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बनाए गए व्यवसायों के अंतरराष्ट्रीय मानक वर्गीकरण के साथ जोड़ा जाएगा। यह फ्रेमवर्क पूर्ववर्ती शिक्षा की आवश्यकता के लिए आधार प्रदान करेगा। इसके माध्यम से ड्रॉपआउट हो चुके बच्चों के व्यावहारिक अनुभव को फ्रेमवर्क के प्रासंगिक स्तर के साथ जोड़कर उन्हें पुनः औपचारिक प्रणाली से जोड़ा जाएगा। क्रेडिट आधारित यह फ्रेमवर्क, छात्रों को 'सामान्य' से व्यावसायिक शिक्षा तक जाने को सुगम बनाएगा।

हिंदी अध्यापिका
रावमा विद्यालय बुंगा, जिला पंचकूला, हरियाणा

तुम्हारा हुनर ही देश का सरमाया

डॉ. प्रदीप राठौर

शिक्षा विभाग पर छात्र रूपी मानव संसाधन को समाज एवं उद्योग के लिए उपयोगी बनाने की बड़ी जिम्मेदारी है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सारा ज़ोर उपाधि या प्रमाणपत्र पर रहता है न कि छात्र को समाज एवं उद्योग के लिए उपयोगी मानव संसाधन बनाने पर। दसवीं या बारहवीं करने के बाद हाथ में जो प्रमाण-पत्र आता है वह किसी रोज़गार की गारंटी नहीं होता। कई बार तो ऐसी निराशा भी मन में आती है कि जीवन के कीमती 16-17 वर्ष व्यर्थ में ही बिता दिये। इसी कारण जब-जब बेरोजगारी की समस्या पर बात होती है तब-तब हमारे शिक्षा तंत्र की इस कमी का जिक्र भी होता है।

आखिर क्या लाभ ऐसे प्रमाण पत्रों का जो किसी रोज़गार की योग्यता न देते हों, जो अपने पैरों पर खड़ा होने में सबल न बनाएँ। क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि सभी विद्यार्थी दसवीं या बारहवीं कक्षा के बाद उच्च शिक्षा की ओर कदम बढ़ाएँ। हम अपने चारों ओर नज़र दौड़ाएँ तो कितने ही हुनर और कारोबार ऐसे हैं जिनके लिए अधिक अकादमिक ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं है, उनमें केवल उस क्षेत्र के प्रशिक्षण की जरूरत होती है। देश को एक नाभिकीय वैज्ञानिक की जितनी आवश्यकता है उतनी ही एक कुशल बढ़ई की भी। यदि विद्यार्थी आगे शिक्षा जारी रखने का इच्छुक नहीं, तब विद्यालय से निकलने पर प्रायः उद्योग की अपेक्षाओं पर वह खरा नहीं उतरता। उसे उद्योगों एवं समाज की जरूरतों के अनुसार काम करने के योग्य बनाने में समय लगता है। इस समय में कटौती करने की भी आवश्यकता है। स्पष्टतः शिक्षा को समाज, उद्योग एवं बाज़ार की माँग को समझते हुए इसके अनुरूप मानव संसाधन विकसित करने पर

सर्वाधिक ज़ोर देना चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता-

व्यावसायिक शिक्षा किसी राष्ट्र की आर्थिक ढाँचे को मज़बूती प्रदान करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है। व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा पर देश में एक सदी से बहस चल रही है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद देश में जितने आयोग और समितियाँ बनीं, लगभग सभी ने कार्य आधारित शिक्षा या व्यावयायिक शिक्षा की ज़रूरत महसूस की है।

शिक्षा आयोग 1964-66 ने कार्यात्मक साक्षरता, अनुवर्ती और निरंतर शिक्षा और पूर्ण शिक्षा के कार्यक्रम पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत 1976-77 में कई प्रदेशों में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा एक विकल्प के रूप में शुरू की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 में व्यावसायिक शिक्षा को एक विस्तृत एवं व्यवस्थित कार्यक्रम के रूप में चलाये जाने पर जोर दिया।

1988 में केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा योजना के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये और उसे सुचारु रूप से क्रियान्वित करने हेतु संकल्पना एवं वित्तीय साधन देने का प्रावधान किया गया।

अकादमिक शिक्षण के साथ चले व्यावसायिक प्रशिक्षण-

व्यावसायिक प्रशिक्षण विद्यालयों से आरंभ होना चाहिए। यह प्रक्रिया शिक्षा के साथ-साथ चलनी चाहिए। उच्च प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चे को भावी जीवन के बारे में सपने सँजोना सिखाना चाहिये, उनमें जीवन से जुड़ी सामाजिक एवं आर्थिक जरूरतों का पूरा करने के लिए कार्य के महत्त्व को समझने और कुछ बनने की ललक पैदा करनी चाहिए। इस चरण में स्वास्थ्य,खेलकूद, मनोरंजन, सौंदर्य विकास, रचनात्मक क्रियाकलाप तथा मूल्यों का रोपण आदि गुणों का कार्य शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए। शिक्षक को स्थानीय उपलब्ध स्रोतों का उपयोग करके एवं समुदाय के यथासंभव सहयोग से बच्चों में जीवन-कौशल विकसित करने के प्रयास करने चाहिये तथा बच्चों मे यह सोच पैदा करनी चाहिए कि उन्हें कुछ बनना है और कुछ करना है। इसके अलावा बच्चों में श्रम के प्रति प्यार, सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों का विकास भी करना होगा ताकि बच्चे का सामाजीकरण भली-भाँति हो पाए।

कक्षा 6 से 8 तक के चरण में कार्यशिक्षा के उद्देश्य छात्रों को कार्य की ओर उन्मुख करना होना चाहिए। इन कक्षाओं में कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को सुनियोजित ढंग से सामान्य शैक्षणिक विषयों के साथ सम्मिलित किया जाना चाहिए। इन कक्षाओं में जीवन कौशलों के साथ-साथ व्यावसायिक कौशलों का विकास किया जाना चाहिए, अर्थात् माध्यमिक विद्यालय का उद्देश्य बहुकौशल निर्माण होना चाहिए।

मिडिल स्तर पर पहुँचने पर उन्हें करियर मार्गदर्शन

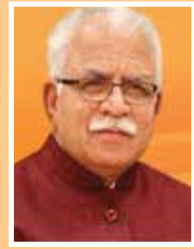

युवाओं के कौशल विकास के लिए सरकार प्रतिबद्ध : मुख्यमंत्री

हरियाणा सरकार मौलिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के स्तर पर शिक्षा के सार्वभौमीकारण पर बल देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाकर युवाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें रोज़गार योग्य बनाने और कुशल मानवशक्ति तैयार करके राज्य की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बदलने के लिए प्रतिबद्ध है। अनुसंधान व नवाचार में जिन श्रेष्ठ कार्यों की ओर अतीत में ध्यान नहीं दिया गया, हम उनकी ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। शिक्षा के साथ विद्यार्थियों की रोज़गारपरकता को बढ़ाने के लिए 1074 माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में 14 कौशल (रिटेल, एग्रीकल्चर, ऑटोमोबाइल, अप्पेरल फैशन डिजाइनिंग, आईटी/आईटीईएस, सिक्योरिटी, ब्यूटी एंड वैलनेस, पेशेंट केयर असिस्टेंट, फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स, बैंकिंग एंड फाइनेंस सर्विसेज, ट्रेवल एंड टूरिज्म आदि) विषयों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हरियाणा देश का पहला राज्य है जहाँ पर स्कूली स्तर पर एनएसक्यूएफ कार्यक्रम आरंभ किया गया था। आज यह कार्यक्रम बड़ी सफलता के साथ चल रहा है। शैक्षणिक सत्र 2020-21 तक 1 लाख 47 हजार से अधिक विद्यार्थी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हो चुके हैं।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

दक्षता विकास की दिशा में मील के पत्थर बनेंगे 'दक्ष' केंद्र

हरियाणा के युवाओं को अपने गृह नगर में ही रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् राज्य के चयनित विद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने जा रहा है। इसमें संबंधित जिले के कौशल शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को औद्योगिक वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही उन्हें सरकार की विभिन्न योजनाओं से भी अवगत कराया जायेगा, जिससे वे अपना स्वयं का स्टार्टअप शुरू कर आत्मनिर्भर बन सकें।

प्रथम चरण में 45 विद्यालयों में 50 इन्क्यूबेशन सेंटर(DAKSH) स्थापित किये जायेंगे जिसमे लगभग 21 हज़ार विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। इन 50 सेंटरों को संचालित करने में लगभग 17,95,16,168 रुपये खर्च आने का अनुमान है। यह खर्च शिक्षा मंत्रालय से स्वीकृत राशि से किया जाएगा। हरियाणा की यह पहल विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने में निश्चित रूप से मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

दिया जाना चाहिए। कोई अपने जीवन में किन-किन व्यवसायों मे जा सकता है, सभी व्यवसायों में जाने के लिए किन-किन विषयों में पारंगत होने की आवश्यकता होती है, उन विषयों में पारंगत होने के लिए किस प्रकार का पाठ्यक्रम पढ़ने की आवश्यकता होगी, कितना प्रयास करना होगा आदि की जानकारी उसे इसी स्तर पर दे दी जानी चाहिए। जीवन के दूरगामी लक्ष्य निर्धारण के बारे में चिंतन की प्रक्रिया इसी स्तर से आरंभ होनी चाहिये। उन्हें लगे कि वे किसी उद्देश्यहीन शिक्षा के साथ नहीं जुड़े, उन्हें शिक्षा की सार्थकता समझ आए।

कक्षा 9 से 10 तक के स्तर पर विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा के साथ-साथ साधारण बाज़ार संबंधी कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे छात्रों में व्यावसायिक रुचियों एवं अभिरुचियों का विकास हो सके और वे स्वयं की अभिरुचियों के अनुसार कार्य कर उत्पादकता को बढ़ा सकें। इस चरण में प्रशिक्षण इस स्तर का नहीं होना चाहिए, जिसे व्यावसायिक स्तर कहा जा सके, किंतु इससे भी छात्रों को पर्याप्त अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी, जिससे वे अपनी पसंद के कार्य-क्षेत्र का अन्वेषण कर सकें। यह मॉड्यूल आधारित होना चाहिए जिसमें स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप छात्रों को उनकी इच्छानुरूप तीन से चार क्रियाकलाप आधारित मॉड्यूल बताये जाने चाहिये। इसके अतिरिक्त इन छात्रों को अपनी योग्यता को निखारने के लिए कार्य-क्षेत्र में उपलब्ध साधनों का उपयोग करने का भी अवसर दिया जाना चाहिए। इन कक्षाओं में करियर मार्गदर्शन एवं परामर्श के माध्यम से विद्यार्थियों को रोज़गार चयन करने के लिए तथा प्राथमिक, उच्च प्राथमिक में दिखाये गये सपनों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए, ताकि उन्हें वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम चुनने में मदद मिल सके।

कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं में जॉब लिंकेज पाठ्यक्रम हो, जिसमें सैद्धांतिक विषय के साथ प्रायोगिक प्रशिक्षण भी हो। इस स्तर पर चुने गए करियर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जाए। इस प्रकार के प्रशिक्षण से बारहवीं पास करने के बाद हमारे पास एक दक्ष मानव-शक्ति तैयार हो जाएगी।

इस स्तर के बाद उसी क्षेत्र में आगे भी प्रशिक्षण व्यवस्था हो। जो विद्यार्थी किन्हीं कारणों से आगे पढ़ाई जारी रखने के इच्छुक नहीं हैं, वे अपने-अपने क्षेत्र में रोज़गार पा सकते हैं, या स्वरोज़गार आरंभ कर सकते हैं। इसमें कोई दोराय नहीं कि किसी प्रशिक्षण के साथ बारहवीं पास का प्रमाण-पत्र धारक विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थी की अपेक्षा कई गुणा आत्मविश्वास से भरपूर मिलेगा। उद्योग-धंधों को भी ऐसे प्रशिक्षित युवाओं की तलाश रहती है। एसोचैम के अध्ययन के अनुसार इस समय तक देश में लगभग 40 मिलियन कार्यरत पेशेवरों की कमी है। इसके अलावा लगभग 41 प्रतिशत नियोक्ता अभी भी कमी की वजह से पदों को भरने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं।

व्यावसायिक शिक्षा में कहाँ हैं हम-

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2028 तक चीन के मुकाबले भारत सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बनने की संभावना है। इसलिए समय की आवश्यकता के अनुरूप युवाओं को उत्पादक कार्यबल में बदलने के लिए प्रयास किए जाने चाहियें। निःसंदेह शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है लेकिन व्यावसायिक शिक्षा के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

12 वीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) के अनुमान के अनुसार 19-24 आयुवर्ग में आने वाले भारतीय कार्यबल के अत्यंत ही कम प्रतिशत (5 प्रतिशत से कम) लोगों ने औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त की, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में 52 प्रतिशत, जर्मनी में 75 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में अत्यंत अधिक 96 प्रतिशत पर यह संख्या काफी अधिक है। ये संख्या भारत में व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने की आवश्यकता को पूरी स्पष्टता से रेखांकित करती हैं।

व्यावसायिक शिक्षा की ओर रुझान क्यों नहीं-

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की कम संख्या होने के पीछे एक प्रमुख कारण यह तथ्य है कि पूर्व में व्यावसायिक शिक्षा मुख्य रूप से कक्षा 11-12 और कक्षा 8 और उससे बाद की कक्षाओं के ड्रॉपआउट विद्यार्थियों पर केंद्रित थी। इसके अलावा, व्यावसायिक विषयों के साथ 11वीं-12वीं पास करने वाले विद्यार्थियों के पास अक्सर उच्चतर शिक्षा में अपने चुने हुए व्यवसाय क्षेत्र में आगे बढ़ने का स्पष्ट मार्ग नहीं होता है। सामान्य उच्चतर शिक्षा के लिए प्रवेश मानदंड भी व्यावसायिक शिक्षा की योग्यता वाले विद्यार्थियों के लिए अवसरों की उपलब्धता को सुनिश्चित करने की दृष्टि से डिज़ाइन नहीं किए गए थे, फलस्वरूप वे अपने ही देश के अन्य लोगों के सापेक्ष 'मुख्य धारा की शिक्षा' या 'अकादमिक शिक्षा' से वंचित रहते थे। इसने व्यावसायिक शिक्षा के विषयों से संबंधित विद्यार्थियों के लिए शिक्षा में सीधे-सीधे आगे बढ़ने के रास्तों को पूरी तरह से बंद ही कर दिया। हालांकि राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के द्वारा इस ओर ध्यान देने का प्रयास किया गया।

व्यावसायिक शिक्षा की ओर समाज का अधिक रुझान न होने का कारण यह है कि इसे मुख्यधारा की शिक्षा से कम महत्त्व की शिक्षा माना जाता है। यह भी माना जाता है कि यह गरीब वित्तीय पृष्ठभूमि के लोगों के लिए है या फिर उन विद्यार्थियों के लिए है जो मुख्यधारा की शिक्षा के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते। अधिकांश माता-पिता को अपने बच्चों के लिए पारंपरिक डिग्री ही लुभाती है। उनका मानना है कि जो व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भाग लेते हैं उनका अच्छा भविष्य नहीं है। यह एक ऐसी धारणा है जो आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है, और विद्यार्थियों द्वारा चुने गए विकल्पों को प्रभावित करती है। सच तो है कि व्यावसायिक कोर्स करने वाले बच्चों का भविष्य ज्यादा उज्ज्वल होता है। लेकिन समाज की यह सोच गंभीर चिंता का विषय है, जिसे बदलने की आवश्यकता है।

व्यावसायिक शिक्षा के आशानुरूप विकास का एक अन्य कारण यह है कि सभी शिक्षण संस्थान जैसे- स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत नहीं करते। होना तो यह चाहिए था कि व्यावसायिक प्रशिक्षण की शुरुआत आरंभिक वर्षों में अनुभव प्रदान करने से हो जो कि फिर सुचारु रूप से उच्चतर प्राथमिक, माध्यमिक कक्षाओं से होते हुए उच्चतर शिक्षा तक जाए। लेकिन ऐसा हुआ नहीं है। इस तरह से व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करना अत्यावश्यक है। बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखे और अन्य कई व्यवसायों से परिचित हो।

आशा की किरण है एनएसक्यूएफ-

2012 में आरंभ हुई केन्द्र प्रायोजित योजना एनएसक्यूएफ के माध्यम से इस दिशा में काफी कार्य हुआ है। हरियाणा में पायलेट प्रोजक्ट के रूप में सबसे पहले इसकी शुरूआत हुई थी जब 40 विद्यालयों में 4 कौशल- रिटेल, सेक्योरिटी, आईटी तथा ऑटोमोबाइल आरंभ किए गए थे। इसमें कक्षा नौवीं से ही विद्यार्थियों को जोड़ा जा रहा है। छोटे स्तर से आरंभ हुई इस योजना का काफी प्रसार प्रदेश में हो रहा है।

2020-21 में 1074 विद्यालयों में कौशल चल रहे हैं, जिनके तहत अब तक 1,47,007 विद्यार्थी इस योजना से लाभान्वित होकर प्रशिक्षित हो चुके हैं या हो रहे हैं।

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा पर बेहद बल दिया गया है। वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जाने का लक्ष्य रखा गया है, जो बहुत ही सराहनीय सोच कही जा सकती है। निश्चित तौर पर यह देश के जनसंख्या रूपी संसाधन के पूर्ण लाभ को प्राप्त करने में मदद करेगा। व्यावसायिक क्षमताओं का विकास और शैक्षणिक सहित अन्य क्षमताओं का विकास साथ-साथ होगा। इसके माध्यम से अगले दशक में चरणबद्ध ढंग से सभी माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक विषयों में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए माध्यमिक विद्यालय, आईटीआई, पॉलिटेक्निक और स्थानीय उद्योगों आदि के साथ संपर्क की आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया है। स्कूलों में कौशल प्रयोगशालाएँ भी स्थापित करने की बात भी की गई है। उम्मीद करते हैं कि आने वाले वर्षों में हम विद्यार्थियों में रोज़गार के आधारभूत कौशल, सूचना कौशल, संप्रेषण कौशल, अंतर्व्यक्ति कौशल, उद्यम कौशल एवं मूल्यों का विकास करके उन्हें तेजी से बदलती और विकास करती हुई अर्थव्यवस्था के कौशल की माँग को पूरा करने में सक्षम बना सकेंगे।

drpradeeprathore@gmail.com

कौशल विकास में हरियाणा पूरे देश के सामने बना मिसाल

सुभीते से चल रहा है एनएसक्यूएफ कार्यक्रम

सचिन कुमार सैनी

यदि हम आज के समय की और विशेषकर भारत की बात करें तो जिस प्रकार भारत की जनसंख्या में बढ़ोतरी हो रही है उसी प्रकार आज बेरोज़गारी भारत के लिए एक बहुत बड़ी समस्या उभर कर सामने आ रही है। जो परिवार पूर्ण रूप से संपन्न हैं वे अपने आने वाली नई पीढ़ी को महँगी से महँगी शिक्षा उपलब्ध कराने में समर्थ हैं, परंतु यदि हम बात करें भारत के उस वर्ग की जो मध्यम और गरीब का है वह आज भी कहीं न कहीं रोज़गार के लिए महँगी शिक्षा की तरफ नहीं देख सकता। तो इसी समस्या को पूर्ण रूप से हल करने के लिए केंद्र सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय ने 2012 में एक ऐसे कार्यक्रम की नींव रखी जिससे शिक्षा रोज़गारमुखी बनी है। यह कार्यक्रम आज कहीं न कहीं युवाओं की पहली पसंद बना हुआ है।

मैं आपका ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ केंद्र सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय और हरियाणा सरकार द्वारा मिलकर चलाये गए एनएसक्यूएफ कार्यक्रम की तरफ, जिसका पूरा नाम नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क है। इसका मकसद ऐसी कौशल शिक्षा देना है जिससे आने वाली पीढ़ी को रोज़गार के अधिक अवसर मिलें। यह शिक्षा किसी स्नातक या किसी अलग संस्थान से शुरू न होकर हमारे विद्यालय स्तर पर शुरू हो। इसमें छात्र स्कूल स्तर पर ही इतने समर्थ होकर निकलें कि वे अपने रोज़गार के लक्ष्य को बड़ी आसानी से हासिल कर सकें और उनके पास कोई न कोई हुनर हो।

इसकी शुरुआत 2012 में हरियाणा के 5 जिलों के 40 स्कूलों में एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में हुई, जिसमें चार कौशल विषय शुरू किए गए। जो थे- आईटी, ऑटोमोबाइल, सिक्योरिटी और रिटेल। प्रथम वर्ष 2012 में इन 40 स्कूलों में 4840 विद्यार्थी इस व्यावसायिक शिक्षा को निःशुल्क ग्रहण करने लगे।

प्रथम वर्ष में इस प्रोजेक्ट ने बड़े ही महत्त्वपूर्ण ढंग से अपना प्रदर्शन किया जिसके सफलता को देखते हुए केंद्र सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय और हरियाणा सरकार ने अगले वर्ष यानी कि 2013 में 100 स्कूल और बढ़ा दिए जिनमें एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट शुरू किया गया। 2013 में 3 नए कौशल विषय और जोड़े गए जोकि थे- ब्यूटी एंड वैलनेस, पेशेंट केयर असिस्टेंट, फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स। 2013-14 सत्र में जब स्कूलों की संख्या 140 हो गई तो इस दौरान इन कौशल विषयों में 13,506 विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षा के गुर सीखने लगे।

उसके बाद 2014 में 100 स्कूल और बढ़ा दिए गए। इस समय तक 240 स्कूलों में एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट के अंतर्गत कौशल विषयों की शिक्षा 22,485 विद्यार्थियों को दी जाने लगी। 2015 में स्कूलों की संख्या 250 और बढ़ा दी गयी। 2015 में 490 स्कूलों में कौशल विषय पढ़ाए जाने लगे। 2015-16 सत्र में तीन और कौशल विषय हरियाणा के स्कूलों में शुरू किए गए जो थे- ट्रैवल एंड टूरिज़्म, एग्रीकल्चर, मीडिया एंटरटेनमेंट एंड एनिमेशन।

जैसे-जैसे हरियाणा सरकार एनएसक्यूएफ कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों को बढ़ा रही थी, वैसे-वैसे हरियाणा के जुझारू विद्यार्थी भी इसमें अपनी संख्या और अपनी रुचि बढ़ाने लगे। 2015-16 सत्र में बच्चों की संख्या 41,570 हो गई। अगले ही वर्ष यानी 2016 में कुछ नए स्कूलों में यह योजना आरम्भ की गई। इस सत्र में 500 स्कूल इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत लिए गए और अब तक स्कूलों की संख्या 990 हो गई जिनमें 9 कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। इस दौरान बच्चों की संख्या में दुगना इजाफा हुआ। 2016-17 सत्र में 8 1,747 विद्यार्थी इन कौशल विषयों में प्रशिक्षण पाने लगे। उसके बाद 2017 में 11 स्कूल और बढ़ाये गए। चार नए कौशल विषय- फैशन डिज़ाइनिंग, हेल्थ केयर विजन, बैंकिंग फाइनेंस एंड सर्विसेज और बैंकिंग एंड इंश्योरेंस सर्विसेज भी आरम्भ किये गए। इस सत्र तक कुल स्कूलों की संख्या का आँकड़ा एक हज़ार के पार हो गया था और व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या 1,7,630 के आँकड़ा छूने लगी।

2018 में स्कूलों की संख्या में 50 का इजाफा हुआ और 1052 स्कूलों में इन विषयों को पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या 1,18,958 हो गई । 2019 में 14 नए स्कूल एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट में जोड़े गए और इस समय तक 1,29,719 विद्यार्थी व्यावसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर लगे। इससे अगले वर्ष 2020 में 9 और स्कूल एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट के माध्यम से जोड़े गए अब इन स्कूलों की संख्या 1074 हो गई। अब हरियाणा के विद्यार्थी 14 कौशल विषयों में निःशुल्क कौशल अर्जित करने लगे। आँकड़ों के मुताबिक लगभग 1 लाख, 47 हजार 7 विद्यार्थी 2020-21 तक 14 भिन्न-भिन्न कौशल विषयों में व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या कर चुके हैं। आज हरियाणा में चल रहे एनएसक्यूएफ के 14 भिन्न-भिन्न कौशल विषय को मॉडल के रूप में लेकर अन्य राज्य जैसे आसाम,

पंजाब, केरल, हिमाचल प्रदेश इत्यादि हरियाणा की तर्ज पर अपने-अपने राज्यों में यह प्रोजेक्ट चला रहे हैं और अपने-अपने राज्य के विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण से लाभान्वित कर रहे हैं। जो व्यावसायिक अध्यापक इन 1074 स्कूलों में पढ़ा रहे है, वे भी स्वयं अपने-अपने कार्य में पूर्ण कुशल हैं ।

व्यावसायिक शिक्षा के दस स्तर -

व्यावसायिक शिक्षा को भिन्न-भिन्न 10 स्तरों में विभाजित किया है। प्रथम चार स्तरों का कौशल विद्यार्थी विद्यालय स्तर पर ग्रहण कर रहे हैं। नौवीं में पहला, दसवीं में दूसरा, ग्यारहवीं में तीसरा और बारहवीं में वे चौथा स्तर हासिल कर लेते हैं। इसके पश्चात तकनीकी शिक्षा विभाग से संचालित डिप्लोमा कोर्सेज में वह प्रवेश ले सकता है। ये कोर्स 3 वर्ष के होते हैं। यहाँ वह पाँचवाँ और छठा स्तर हासिल करता है। इसके पश्चात स्नातक के तीन वर्ष में अर्थात् महाविद्यालय में वह अपना सातवाँ स्तर, आठवाँ स्तर पूर्ण करेगा और नौवाँ स्तर वह अपनी मास्टर डिग्री में पूर्ण करेगा और पीएच-डी के अंदर वह अपना दसवाँ स्तर पूर्ण करेगा। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी आपके साथ साझा करना चाहूँगा कि इन सभी स्तरों का जो प्रमाण-पत्र जारी होगा वह आपके शिक्षण के साथ-साथ एक राष्ट्रीय स्तर का प्रमाण-पत्र भी होगा। जिसको राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, जिसे हम एनएसडीसी के नाम से जानते हैं, जारी करेगा। दिये गए प्रमाणपत्र की मान्यता हर राज्य में होती है।

गेस्ट लेक्चर, फील्ड विजिट, ऑन जॉब ट्रेनिंग-

विद्यालय स्तर के प्रशिक्षण में गेस्ट लेक्चर, फील्ड विज़िट, ऑन जॉब ट्रेनिंग जैसे कार्यक्रम भी होते हैं। वर्ष के अंत में इन कौशल विषयों की प्रायोगिक परीक्षाएँ भी आयोजित होती हैं। गेस्ट लेक्चर व्यावसायिक शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है। वर्तमान में हुनरमंद लोग रोज़गार कर रहे हों, उनको स्कूल में व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को गेस्ट लेक्चर देने के लिए बुलाया जाता है। वे विद्यार्थियों को बताते हैं कि जो ज्ञान वे अर्जित कर रहे हैं उसकी समाज में क्या उपयोगिता होगी। किस प्रकार उस ज्ञान का उपयोग रोज़गार के क्षेत्र में किया जा सकता है। बच्चे बहुत से सवाल भी इनसे पूछते हैं, जिनके जवाब बच्चों को दिए जाते हैं।

इस पाठ्यक्रम का एक और महत्त्वपूर्ण भाग है, वह है- फील्ड विज़िट। जिस विषय को व्यावसायिक विद्यार्थी सीख रहे हैं, उसका वर्तमान में कहाँ पर और किस प्रकार इस्तेमाल हो रहा है, उस वातावरण में बच्चों को ले जाया जाता है और बच्चे स्वयं अपने विषय से संबंधित और अपने रोज़गार से संबंधित कार्यशैली को देखते हैं। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल के बच्चों को जो किताबी ज्ञान उनके अध्यापक ने स्कूल में दिया वह किस प्रकार किसी ऑटोमोबाइल वर्कशॉप में इस्तेमाल किया जा रहा है और उस वर्कशॉप के अंदर गाड़ियों की मरम्मत किस प्रकार की जा रही है उन बच्चों को उस वातावरण में ले जाकर यह सब साक्षात दिखाया जाता है।

इसी व्यावसायिक शिक्षा को और आगे बढ़ाते हुए एक और पहल शुरू की जिससे स्टूडेंट ट्रेनिंग या ऑन जॉब ट्रेनिंग का नाम दिया गया। पाठ्यक्रम के इस भाग में बच्चे अपने तीसरे और चौथे स्तर पर जब शिक्षा ग्रहण करते हैं, अर्थात् जब वे बच्चे 11वीं और 12वीं कक्षा में कौशल विषयों के एडवांस स्तर पर आ जाते हैं तो उन्हें 80

शानदार करियर है आईटी क्षेत्र में

IT/ITes एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। IT/ ITes दो शब्दों के मेल से बना है- आईटी और ITes। आईटी यानि इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी को हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी कहा जाता है। ITes यानि IT enabled services को हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवाएँ कहते हैं। IT/ ITes एक तकनीकी क्षेत्र है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों, कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी का उपयोग या अध्ययन किया जाता है। इसमें जानकारी या सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, डेटा में बदलाब, संग्रह, परिवर्तन, प्रसार आदि का कार्य करने के लिए कम्प्यूटर आधारित सिस्टम और ऐप्लिकेशन का प्रयोग किया जाता है।

IT/ITes विषय लेने वाले विद्यार्थी वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट, डिजिटल प्रेजेंटेशन और डेटाबेस डेवलपमेंट सॉफ्टवेयर के बारे में शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसके अतिरिक्त इंटरनेट, ई-मेल, कम्प्यूटर नेटवर्क, वेब डिजाईनिंग, ई-मेल मेसेजिंग सॉफ्टवेयर के बारे में शिक्षा ग्रहण कर तकनीकी दुनिया में कदम रखने के लिए विद्यार्थी तैयार होते हैं।

IT/ITes विषय के बच्चों को गेस्ट लेक्चर, फील्ड विजिट, ऑन जॉब ट्रेनिंग आदि द्वारा वास्तविक तकनीकी दुनिया का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है। यह शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात विद्यार्थी विभिन्न संस्थानों में डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, हार्डवेयर स्पोट इंजीनियर आदि व्यवसाय में स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा विद्यार्थी स्वयं का रोज़गार भी शुरू कर सकते हैं। जो विद्यार्थी आगे पढ़ाई करना चाहते हैं वे पोलिटेक्निक में सीधे दूसरे वर्ष में दाखिला लेकर अपना एक वर्ष बचा सकते हैं।

आईटी के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन रोज़गार बढ़ रहा है। अतः विद्यार्थियों को अपने कौशल को निखारते हुए शिक्षा ग्रहण कर अपने स्वर्णिम भविष्य की तरफ कदम बढ़ाने चाहिये।

जसबीर सिंह
वोकेशनल टीचर
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मोहड़ी भानोखेड़ी
खंड-अम्बाला-1, जिला-अम्बाला, हरियाणा

रिटेल सेक्टर में प्रशिक्षित कर्मियों की बढ़ रही है माँग

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में जैसे-जैसे बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है। उस संदर्भ में परंपरागत विषयों के अध्ययन के साथ-साथ कौशल विकास संबंधित विषय एनएसक्यूएफ परियोजना के अंतर्गत चलाए जा रहे हैं, जिनमें एक महत्त्वपूर्ण विषय रिटेल है। मैं रावमा विद्यालय संभालखा, खंड-साहा, जिला अंबाला में गत 5 वर्षों से इसे सिखा रहा हूँ। विभिन्न प्रकार से उत्पादों का सीधा संबंध रिटेल से है। मौजूदा समय में संगठित रिटेलिंग का चलन जिस प्रकार बढ़ रहा है, उसी प्रकार उक्त संगठनों में प्रशिक्षित कर्मियों की माँग भी बढ़ रही है। रिटेल विषय इस माँग की प्रतिपूर्ति में सक्षम है। इस विषय में विद्यार्थियों को सेल्स, मार्केटिंग, कस्टमर सर्विस व कम्युनिकेशन, इवेंट मैनेजमेंट, सेल्ज़ मैनेजमेंट आदि की सैद्धांतिक व व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। उन्हें डिस्प्ले ऑफ स्टोक्स, डिलिवरी ऑफ गुड्स, स्टोर एंड नॉन स्टोर रिटेलिंग आदि की जानकारी दी जाती है। विभिन्न औद्योगिक संगठनों से अनुभवी उद्यमियों एवं कर्मचारियों को 'अतिथि व्याख्यान' हेतु विद्यालय में बुलाया जाता है। वे अपने अनुभवों से विद्यार्थियों के कौशल व ज्ञान में वृद्धि करते हैं। व्यावहारिक ज्ञान हेतु विभिन्न रिटेलिंग संस्थानों यथा- बिग बाज़ार, विशाल मैगा मार्ट व इज़ी-डे आदि में भ्रमण के लिए ले जाया जाता है। इस भ्रमण से विद्यार्थी संगठन में कार्यरत कर्मचारियों की कार्यशैली प्रत्यक्ष देखकर ज्ञान अर्जित करते हैं। लेवल-3 और लेवल-4 में विद्यार्थियों को सत्र में ऑनजॉब ट्रेनिंग कराई जाती है जिसमें विद्यार्थी संगठन के वास्तविक वातावरण को अनुभव करते हुए कौशल अधिगम करते हैं। अध्ययन पूर्ण करने पर विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र दिया जाता है, जिससे उन्हें रिटेल संस्थानों में रोज़गार प्राप्त करने में सुगमता होती है।

अनिल कुमार
वोकेशनल अध्यापक, रिटेल
रावमा विद्यालय संभालखा
खंड-साहा, जिला अंबाला, हरियाणा

घंटे की ट्रेनिंग के अंतर्गत किसी वर्कशॉप मल्टीनेशनल कंपनी या उस विषय से संबंधित कंपनी में जाकर अपने सीखे हुए व्यावसायिक गुर का प्रयोग करना होता है, जिसके लिए वह कंपनी उन बच्चों को 80 घंटे कार्य सीखने का प्रमाण पत्र जारी करती है।

यहाँ एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात आप सभी के साथ साझा करना चाहूँगा कि ये सभी पाठ्यक्रम चाहे वह स्कूलों की व्यावसायिक शिक्षा हो चाहे वह गेस्ट लेक्चर फील्ड विजिट और ऑन जॉब ट्रेनिंग हो, ये सभी पाठ्यक्रम उन व्यावसायिक विद्यार्थियों को देते हुए कोई भी शुल्क उनसे नहीं लिया जाता, यह पूर्ण तरह निःशुल्क शिक्षा है और बच्चों को यह शिक्षा देने में जो भी खर्च आता है, वह केंद्र सरकार और हरियाणा सरकार मिलकर उठाती हैं ताकि बच्चे बिना किसी आर्थिक दिक्कत के आसानी से ग्रहण कर सकें।

प्रशिक्षण की मूल्यांकन योजना-

एनएसक्यूएफ के जो कौशल विषय हैं उन विषयों का पाठ्यक्रम समय की माँग के अनुसार तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम निर्माण में पीएसएससीआईवीई, भोपाल की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है जिसे एनसीईआरटी द्वारा प्रमाणित किया जाता है। इनकी परीक्षा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा ली जाती है।

परीक्षा के दो भाग हैं- प्रायोगिक व लिखित। 50 प्रतिशत अंक प्रायोगिक परीक्षा के होते हैं। 50 अंक की लिखित परीक्षा होती है जिसमें से 30 प्रतिशत अंक लिए जाते हैं। प्रायोगिक परीक्षा सेक्टर स्किल कौंसिल द्वारा योग्य परीक्षकों द्वारा ली जाती है। 20 प्रतिशत अंक आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर दिए जाते हैं। इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जाता है के पुस्तकीय ज्ञान के साथ अपने कौशल का सम्पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थी लें।

ऑटोमोबाइलः दिनोंदिन बढ़ रहा रोज़गार क्षेत्र

ऑटोमोबाइल कोर्स में दोपहिया व चारपहिया वाहनों की तकनीकी जानकारी विद्यार्थियों को दी जाती है। वाहन की चैसिस, फ्रेम व इनके प्रकार, बॉडी, तथा इंजन की मोटी जानकारी विद्यार्थियों का प्रदान की जाती है। इंडस्ट्रियल विज़िट में विद्यार्थी अपनी आँखों के सामने इंजन के आंतरिक पुर्जों की कार्यप्रणाली से अवगत होते हैं, हर माह हर कक्षा में दो इंडस्ट्रियल एक्सपर्ट को बुलाया जाता है जो अपने अनुभव के आधार पर बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान देते हैं। विद्यालय में लेवल-4 का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के उपरांत अगर विद्यार्थी पोलिटेक्निक में प्रवेश लेना चाहें तो उन्हें सीधे द्वितीय वर्ष में प्रवेश मिल जाता है, यानी एक वर्ष का समय बच जाता है। इस कोर्स के उपरांत विद्यार्थी स्वरोज़गार तो कर सकते ही हैं, विभिन्न कंपनियों में रोज़गार की संभावनाएँ भी बनती हैं।

मनदीप
वोकेशनल टीचर (ऑटोमोबाइल)
रावमा विद्यालय, सैक्टर-6 पंचकूला, हरियाणा

बड़ी माँग है 'पेशेंट केयर असिस्टैंट' की

पेशेंट केयर असिस्टैंट एक ऐसा विषय है जिसके ज्ञान से विद्यार्थी रोगियों की भिन्न प्रकार से सहायता कर सकते हैं। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को वाइटल साईंस चैक करना, रोगियों को बैड केयर देना, बायोमैडिकल वेस्ट के बारे में जानकारी, प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी, टीकाकरण, अस्पतालों के विभिन्न विभागों, व्यक्तिगत स्वच्छता, चिकित्सा उपकरणों की जानकारी, शरीर के विभिन्न अंगों की कार्यप्रणाली आदि की जानकारी प्रदान की जाती है। इसके अलावा इन्हें नर्सिंग की भी आधारभूत जानकारी दी जाती है ताकि चिकित्सकों व नर्सों की सहायता कर सकें। विद्यार्थियों को निकटवर्ती अस्पतालों में ले जाया जाता है ताकि इस प्रकार की फील्ड विज़िट से वे व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। लेवल-3 और लेवल-4 में विद्यार्थियों को ऑनजॉब ट्रेनिंग कराई जाती है जिसमें उन्हें 10-15 दिन ट्रेनी स्टाफ की भाँति अस्पतालों में कार्य सिखाया जाता है, जिससे विद्यार्थियों को काफी लाभ मिलता है। इन्हें पेशेंट केयर असिस्टैंट की जॉब मिल सकती है। विद्यार्थी नर्सिंग में भी जा सकते हैं। प्राइवेट क्लिनिकों में भी इनकी माँग रहती है।

मनप्रीत कौर
वोकेशनल टीचर(पीसीए)
रावमा विद्यालय, संभालखा, जिला अंबाला, हरियाणा

ब्यूटी और वेलनेस स्किल लड़कियों की बन रहा है पहली पसंद

भारत में ब्यूटी और वेलनेस के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण यह उद्योग तेजी से विकास कर रहा है। बढ़ता उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण और भारतीय उपभोक्ताओं की बदलती जीवनशैली के साथ इस उद्योग की माँग बढ़ी है। इसी कारण इस क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों की माँग भी बढ़ी है।

एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट के तहत हरियाणा के काफी स्कूलों में 2013 से ब्यूटी एंड वैलनेस ट्रेड बहुत ही सफलता पूर्वक चल रही है। इसमें 2 जॉब रोल्स हैं, जिसमें लेवल-1 और 2 असिस्टेंट ब्यूटी थेरेपिस्ट और लेवल-3 और 4 ब्यूटी थेरेपिस्ट है।

छात्र व छात्राएँ ब्यूटी एंड वैलनेस के बारे में अपने सिद्धांत और व्यावहारिक कौशल को बढ़ाने के लिए कक्षा 9 वीं-10 वीं और 11 वीं-12 वीं में इस विषय का चयन करते हैं। ब्यूटी एंड वैलनेस लैब में बच्चों के लिए पूरा सामान व मशीनरी मुहैया करवाई जाती है, जहाँ बच्चे एक्सपर्ट टीचर्स से कार्य को सीखते हैं व अपने हुनर को और ज्यादा बढ़ाते हैं। इससे वे स्वयं का काम अथवा नौकरी कर सकते हैं, जो उन्हें भविष्य में स्व-रोजगार और स्वयं-उद्यमी बनने में मदद करता है।

इसके अलावा अन्य गतिविधियों जैसे-गेस्ट लेक्चर, फील्ड विज़िट, इंटर्नशिप के द्वारा भी बच्चों के ज्ञान व रोजगार कौशल को बढ़ाया जाता है जो उन्हें प्रोफेशनल तरीके से काम करने में मदद करती हैं। सेशन के अंत में जॉब प्लेसमेंट प्रोग्राम का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें काफी बच्चे हिस्सा लेते हैं।

इसके अतिरिक्त एनएसक्यूएफ द्वारा समय-समय पर स्किल महोत्सवों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। जिला व राज्य स्तर पर मॉडल व प्रोजेक्ट की प्रतियोगिता करवाई जाती है, जिससे उनकी इस विषय को लेकर और अधिक रुचि सामने आती है।

जहाँ तक ब्यूटी और वेलनेस स्किल की बात है, तो इस बारे में कहना होगा कि खास कर छात्राएँ इस विषय को लेने के लिए बहुत इच्छुक होती हैं। इस विषय में विभिन्न प्रकार के कैरियर विकल्प हैं जिससे विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार मेहँदी, हेयर केयर, स्किन केयर, मेकअप या नेल केयर की लाइन में आगे जा सकते हैं तथा उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज में बी. वॉक ले सकते हैं। यह विषय प्रोफेशनल तथा पर्सनल तौर पर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास व कम्युनिकेशन स्किल को भी बढ़ाता है।

कुल मिलाकर, हरियाणा सरकार द्वारा शुरू किया गया यह एनएसक्यूएफ वोकेशनल सब्जेक्ट विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ रोज़गार के अवसर भी प्रदान करता है जो उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अनिवार्य है।

अनुराधा कटारिया
ब्यूटी एंड वैलनेस वोकेशनल टीचर
सार्थक राजकीय समेकित मॉडल सीनियर
सैकेंडरी स्कूल
सैक्टर- 12ए, पंचकूला

सक्सेस स्टोरी

स्किल ने बदली मेरे जीवन की दिशा

मैंने राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर-15 पंचकूला से शिक्षा ग्रहण की है। जब मैं नौंवी कक्षा में थी, तब ब्यूटी एंड वैलनेंस विषय पहली बार हमारे विद्यालय में आरंभ हुआ था, हमारी कक्षा अध्यापिका ने इसके विषय में बताया। हमारी ब्यूटी एंड वैलनेंस विषय की टीचर आरती वर्मा मैम थे, जिन्होंने मुझें (हमें) नौंवी कक्षा से बारहवीं तक ये विषय पढ़ाया। मैंने ब्यूटी एंड वैलनेस को ऐच्छिक विषय के रूप में चुन लिया।

क्योंकि मैं मैडिकल की विद्यार्थी थी, इसलिए अनेक लोगों ने कहा कि मैडिकल का इस स्किल के साथ कोई मेल नहीं है। तुम्हें केवल मैडिकल पर ही ध्यान देना चाहिए। लेकिन मुझे तो यह विषय मैडिकल की पढ़ाई से भी अधिक भाने लगा। सबने विरोध किया, सिवाय मेरे पापा के। उन्होंने कहा कि तुम अपने मन की बात सुनो। मैंने इसी स्किल को विकसित करने की ठान ली। बारहवीं के बाद वीएलसीसी से डिप्लोमा इन कॉसमैटालॉजी किया। अभ्यास के लिए एक सैलून में जाना आरंभ कर दिया। मुझे यहाँ 15 हज़ार रुपये मासिक मिलते हैं। घर की आर्थिक हालत में इस राशि से काफी सहयोग होता है। मैं काम भी करती हूँ और पत्राचार से आगे की पढ़ाई भी। मेरी बड़ी बहन ने भी मुझ से पहले मैडिकल संकाय को ही चुना था, वह अभी भी कॉलेज में पढ़ती है। मैं अपनी पढ़ाई का खर्च अपने कमाए पैसों से ही करती हूँ। कई बार बड़ी बहन की भी सहायता करती हूँ।

इस हुनर ने मेरे आत्मविश्वास को कई गुणा बढ़ा दिया है। जल्दी ही पिता जी के सहयोग से मैं अपना सैलून खोलने का विचार कर रही हूँ। इस स्किल ने मेरे जीवन की दिशा को बदल दिया है।

पूनम कुमावत
पूर्व छात्रा, ब्यूटी एंड वैलनेंस
राकवमा विद्यालय, सैक्टर-15, पंचकूला

खोला गया सेंटर ऑफ एक्सीलेंस-

इस वर्ष फरीदाबाद के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना भी की गई है। इसमें सात स्किल हैं। ये हैं-आईटी सिक्योरिटी, रिटेल, ऑटोमोबाइल, ब्यूटी एंड वैलनेस, फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स और पेशेंट केयर असिस्टेंट। इस सेंटर को अप्लाइड लर्निंग स्किल सेंटर के नाम से भी जाना जाएगा। इस सेंटर में नौवीं से बारहवीं के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए स्किल विषय अनिवार्य किए गए हैं।

खोले जा रहे हैं इन्क्यूबेशन सेंटर (DAKSHA)-

2020-21 के इस सत्र में हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् नेशनल स्किल क्वालीफिकेशन फ्रेमवर्क के अंतर्गत वोकेशनल शिक्षा के लिए नई शिक्षा नीति के तहत विद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेंटर (DAKSHA) स्थापित करने जा रहा है ताकि वोकेशनल एजुकेशन और बेहतर विकल्प संपन्न हो सके और प्रत्येक विद्यार्थी आत्मनिर्भर बन सके। वर्तमान में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कौशल बनाम नौकरी की आवश्यकता के कारण आर्थिक गतिविधियों में शामिल नहीं हो पा रहा है। यह न केवल अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, बल्कि बड़े पैमाने पर समाज के लिए गंभीर परिणाम देने वाला भी है। हरियाणा के युवाओं को रोज़गारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् राज्य के चयनित विद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने जा रहा है। इसमें संबंधित जिले के कौशल शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को औद्योगिक वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही साथ उनको सरकार की

डिग्री बोले या न बोले, हुनर ज़रूर बोलता है

आज के ज़माने की बात करें तो नौजवानों के पास डिग्री तो है लेकिन काम नहीं है। कागज़ की डिग्री अमूमन काम दिलाने का सर्टिफिकेट नहीं होती। आजकल तो डिग्रियाँ भी इस प्रकार से हासिल की जाती हैं कि क्या कहने। परीक्षा के कुछ दिन पूर्व कुंजियों-गाइडों से कुछ प्रश्न रट कर परीक्षा पास कर ली जाती है। जो डिग्री हासिल की जाती है उस विषय का विस्तृत ज्ञान भी आमतौर पर नहीं होता। फिर हम दोष देते हैं कि देश में बेरोज़गारी बहुत ज्यादा है, पढ़े-लिखे लोगों को रोज़गार नहीं मिलता। ये तो यही बात हुई- **उम्र भर गलती करते रहे, धूल चेहरे पर थी और आइना साफ करते रहे।** दूसरे शब्दों में हुनर हमारे पास नहीं है और हम व्यवस्था को दोष देते रहते हैं। अपने देश में हाथ से काम करने वालों को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता। हमारे ही युवा जब विदेशों में जाते हैं तो वहाँ खुशी-खुशी झाड़ू लगाने जैसा कार्य करने में भी संकोच नहीं करते। ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहाँ लोग शीर्ष पर नहीं पहुँचे हैं। अनेक बार तो शीर्ष तक वे लोग पहुँचे हैं, जिनके पास कोई डिग्री भी नहीं थी। देश को डॉक्टर, इंजीनियर की जितनी आवश्यकता है उतनी ही एक नाई और धोबी की। काम कोई भी छोटा नहीं होता। कहीं पढ़ा था- **किरदार ऐसा हो कि दुश्मन भी तारीफ करने को मजबूर हो जाए।** मैंने एक चाय वाले को देखा है जिसकी चाय पीने लोग दूर-दूर से आते हैं। आज इसी कारोबार से वह लाखों रुपये कमा रहा है। इसलिए ज़िंदगी में सिर्फ कागज़ी डिग्रियाँ बटोरने के पीछे मत भागिये, ज्ञान अर्जित कीजिए, कौशल अर्जित कीजिए, कला सीखिए। ध्यान रहे शहनाई ने ही उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को पहले पद्मश्री, फिर पद्मभूषण और फिर देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' दिलवाया है।

कृष्ण मलिक, वोकेशनल टीचर,
रायपुररानी, जिला अंबाला, हरियाणा

विभिन्न योजनाओं से भी अवगत कराया जायेगा, जिससे वे अपना स्वयं का काम आरंभ करने में सक्षम बनें। इसके पहले चरण में 45 विद्यालयों को लिया गया है, जिनमें 50 इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने की योजना बन रही है।

सीडब्ल्यूएसएन बच्चे भी बन पाएँगे इस कार्यक्रम का हिस्सा-

वर्तमान सत्र से एक और सकारात्मक बदलाव एनएसक्यूएफ कार्यक्रम में देखने को मिल रहा है। कुछ विशेष प्रकार से सीडब्ल्यूएसएन विद्यार्थी भी कौशल विकास के स्किल विषयों का चुनाव करके इनमें योग्यता हासिल कर पाएँगे। निश्चित तौर पर इससे समावेशी शिक्षा और मज़बूत बनेगी।

विद्यार्थियों की कराई जा रही है प्लेसमेंट-

व्यावसायिक विद्यार्थियों को जिन्होंने अपने चार स्तर विद्यालय स्तर पर पूरे किए हैं और वे किसी घरेलू आर्थिक मंदी की वजह से आगे अपनी पढ़ाई जारी न रख पाए, उन सभी को रोज़गार उपलब्ध कराने का भी काम एनएसक्यूएफ प्रोजेक्ट ने पूर्ण किया। आँकड़ों के मुताबिक 2012 से लेकर 2018 -19 के सत्र तक 1500 विद्यार्थियों को एनएसक्यूएफ के तहत भिन्न-भिन्न कंपनियों में प्लेसमेंट करवाई गई है।

जो विद्यार्थी अपना भविष्य उच्च स्तरीय शिक्षा के अंदर बनाना चाहते हैं उनकी अलग से काउंसलिंग की जाती रही है। आशा करते हैं कि एनएसक्यूएफ कार्यक्रम दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे और विद्यार्थी इससे लाभान्वित होते रहें।

व्यावसायिक अध्यापक, आईटी
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
मोरनी हिल्स, जिला पंचकूला, हरियाणा

'राज्य स्तरीय कौशल महोत्सव' में दिखा विद्यार्थियों का कौशल

विद्यार्थियों के कौशल निखार के लिए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना के सौजन्य से कौशल महोत्सवों का आयोजन किया जाता है। गत महोत्सव पंचकूला में आयोजित हुआ। जिसमें प्रदेश के 22 जिलों से करीब 1100 विद्यार्थियों ने शिरकत की। राज्य स्तरीय महोत्सव में 14 कौशलों के जिला स्तर पर प्रथम आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। ये कौशल थे- आईटी, सिक्योरिटी, ऑटोमोबाइल, रिटेल, ब्यूटी एंड वैलनेस, पेशेंट केयर अस्सिटेंट, फिजिकल ऐजुकेशन एंड स्पोर्ट्स, ट्रैवल एंड टूरिज्म, ऐग्रीकल्चर, मीडिया ऐनटरटेनमैंट, बैंकिंग एंड फाइनेंस सर्विसिज़, बैंकिंग एंड इंशोरेंस, हैल्थकेयर, ऐपरल फैशन डिजाइनिंग। महोत्सव में प्रतिभागियों का खूब उत्साह देखने को मिला। महोत्सव में बहुत से वर्किंग मॉडल भी थे, जो सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र बने।

ये रहे परिणाम-

ब्यूटी एंड वेलनेस स्किल में प्रथम स्थान राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रोहतक, दूसरा स्थान राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ओल्ड मंडी फरीदाबाद, तृतीय स्थान राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत व सांत्वना पुरस्कार राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-6 ने प्राप्त किया। एग्रीकल्चर स्किल में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नूंह, तिलपत फरीदाबाद, रामगढ़ पंचकूला व घिमाना, जींद ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। विजन टेक्नीशियन स्किल में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाबा लबाना कैथल, अनखीर फरीदाबाद, बरवासनी सोनीपत ने क्रमशः पहला, दूसरा व तीसरा स्थान हासिल किया। पेशेंट केयर असिस्टेंट स्किल में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तलवंडी राणा हिसार, मोहनपुर रेवाड़ी और नारनौल महेंद्रगढ़ ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान अर्जित किया। एपरेल फैशन डिजाइनिंग में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नाथूवास भिवानी, धातन साहिब नरवाना, लोहारी झज्जर व धूकरा सिरसा संयुक्त तौर पर व गुढ़ा लाडवा कुरुक्षेत्र ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

-शिक्षासारथी डेस्क

व्यावसायिक व सामान्य शिक्षा का एकीकरण अत्यावश्यक

अरुण कुमार कैहरबा

शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह हमें जीवन के साथ नहीं जोड़ पाती। समाज की जरूरतें अलग होती हैं और शिक्षा किसी अन्य दिशा में यात्रा करती रहती है। हमारी शिक्षा किताबी अधिक है। इसके किताबी स्वरूप की वजह से यह अच्छी किताबों से भी कट जाती है। पाठ्य-पुस्तकों से शुरू हुई यात्रा उच्च कोटि की अन्य किताबों के अध्ययन-मनन से होते हुए व्यवहार तक जानी चाहिए। लेकिन ऐसा होता हुआ दिखाई नहीं देता। पाठ्य-पुस्तकों से छिटक कर यह शिक्षा आसान कहाने वाली कुंजियों तक जाती है। उसके बाद महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के बने-बनाए उत्तरों का रट्टा लगाया जाता है। यह सब कवायद अधिकाधिक अंकों के लिए की जाती है। साधन को उपेक्षित करके परीक्षा पास करने के ध्येय के लिए परीक्षाओं में नकल की स्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं। इस तरह से शिक्षा न व्यवहार बदलती है, न सोच और न विचार, जोकि शिक्षा का मुख्य काम है। जीवन से मिलकर उसे बदलने की बजाय शिक्षा समानांतर धारा का निर्माण करती है, जिसमें अधिक शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति अधिक अहंकारी व अव्यावहारिक होता है। कई बार तो उसे सामान्य व्यवहारों का भी पता नहीं होता है।

शिक्षा क्रियाशील बनाने की बजाय आरामपरस्त बना देती है। व्हाइट कॉलर जोब का चस्का जगाती है और कौशलों से काट देती है। पढ़े-लिखे व्यक्ति को शारीरिक श्रम करके कमाने में शर्म महसूस होती है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति आमतौर पर श्रम के प्रति हेय दृष्टि बना लेता है। समाज में भी हम ऐसी कहावतें कहते हुए आम सुनते हैं कि डिग्री करने के बाद वह तो नौकरी ही लगेगा। ऐसा शिक्षा की बनाई गई छवि के कारण ही होता है। शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम में इतना अधिक अंतर यह शिक्षा खड़ा कर देती है कि समाज में विघटन की दीवारें खड़ी हो जाती हैं।

इस दूरी को पाटने के लिए और समाज की जरूरतों के साथ शिक्षा को जोड़ने के लिए सामान्य शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा का समावेश अत्यधिक आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा किसी भी आत्मनिर्भर समाज का आधार है, जो विद्यार्थियों को श्रम से जोड़ती हुई श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करती है। व्यावसायिक शिक्षा में नए दौर के समाज की जरूरतों का अध्ययन करके विद्यार्थियों के सामने ऐसे काम-धंधों के विकल्प प्रदान किए जाते हैं, जिनसे वे आने वाले समय में अपनी आजीविका भी कमा सकें। अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसमें बाजार की प्रवृत्तियों के अनुसार आधुनिक तकनीक का प्रयोग करना सिखाया जाता है। वस्तुओं का निर्माण, मरम्मत, क्रय-विक्रय आदि का अभ्यास भी कराया जाता है।

देश व दुनिया के शिक्षा-शास्त्रियों, राजनीतिज्ञों व समाज सुधारकों ने व्यावसायिक शिक्षा पर पर्याप्त बल दिया है। हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आज़ादी की लड़ाई के दौरान अपने जीवन व व्यवहार के माध्यम से ऐसी शिक्षा की कल्पना करते हैं, जोकि विद्यार्थियों का एकांगी नहीं, सर्वांगीण विकास करे। विद्यार्थियों को कुटीर उद्योगों से जोड़े। वे ब्रिटेन में वकालत की पढ़ाई करके आए थे। एक केस के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ पर गांधी जी को सिर्फ इसलिए अंग्रेजों द्वारा रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिया जाता है क्योंकि वे काले थे। गोरे अंग्रेज अपने आप को श्रेष्ठ मानते थे। वहाँ पर वे अहिंसा व सत्याग्रह के द्वारा काले लोगों के साथ होने वाले भेदभाव व अन्याय का विरोध करने लगते हैं। भारत में आकर वे आज़ादी की लड़ाई के साथ जुड़ते हैं। वे देश भर की यात्रा करते हैं। लोगों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों का अध्ययन करते हैं। अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त किए हुए मोहनदास महात्मा बन जाते हैं और देश को आत्मनिर्भरता का मूलमंत्र प्रदान करते हैं। वे स्वयं चरखा चलाकर सूत कातते हैं। स्वदेशी का वे केवल प्रचार ही नहीं करते, व्यवहार भी करते हैं।

गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा में स्वावलंबन पर बल दिया और इसके लिए शिक्षा में आधारभूत शिल्प को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। इससे श्रम के प्रति विद्यार्थियों में स्वस्थ दृष्टिकोण तो पैदा होगा ही, साथ ही सीखा गया शिल्प जीविकोपार्जन का जरिया भी बनेगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम, ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्प व व्यवसाय से घनिष्ठ रूप से जुड़नी चाहिए। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के संतुलित विकास पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के तात्कालिक व दूरगामी उद्देश्यों पर समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षा के बाद बालक आत्मनिर्भर बनना चाहिए। उसके ऊपर बेरोजगारी का बोझ नहीं होना चाहिए, ताकि वह अपने सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विकास पर भी ध्यान दे सके। उन्हीं के शब्दों में- 'शिक्षा बच्चों के लिए बेरोज़गारी के विरुद्ध बीमा होनी चाहिए।'

हमारे देश के दूसरे जाने-माने दार्शनिक, शिक्षाविद व साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने तत्कालीन शिक्षा के दोषों को रेखांकित किया। स्वयं शांतिनिकेतन की स्थापना करके शिक्षा में अपने विचारों को क्रियान्वित किया। उन्होंने शिक्षा के अनेक प्रयोग किए। वे स्वयं व्यावसायिक

शिक्षा पर बल देते थे। शिक्षा में विद्यार्थियों को हस्तशिल्प से जोड़ने की उन्होंने कोशिश की। उनका मानना था कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है, इसलिए विद्यार्थियों को कृषि शिक्षा, बागवानी व पशु पालन आदि से जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने प्राकृतिक माहौल में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया।

आज़ादी के बाद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में बनाए गए भारतीय शिक्षा आयोग ने सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के समन्वय पर बल देते हुए कहा- 'हम देख रहे हैं कि शिक्षा की भावी प्रवृत्ति सामान्य तथा व्यावसायिक शिक्षा के उपयोगी समन्वय में होगी। सामान्य शिक्षा में प्री-व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा के कुछ तत्व सम्मिलित होंगे और व्यावसायिक शिक्षा में सामान्य शिक्षा के तत्व सम्मिलित होंगे। आगामी वर्षों में हम जिस प्रकार के समाज में रहेंगे, उसमें दोनों को अलग-अलग रखना असंभव होगा।' इस आयोग ने व्यावसायिक शिक्षा को संपूर्ण शिक्षा का एक भाग बनाने, विद्यार्थियों को व्यावसायिक जानकारी एवं निर्देशन प्रदान करने, शिक्षा के व्यावसायीकरण की सफलता के लिए स्थानीय पहल को रेखांकित किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 व प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 ने भी व्यावसायिक शिक्षा को एक अलग धारा के रूप में विकसित करने की बात कही। नीति ने प्रशिक्षण पर आधारित व्यवसाय संबंधी विषयों को अधिक विद्यार्थियों तक सुलभ बनाने की बात कही और केन्द्र, राज्य व जिला स्तर पर विभिन्न संस्थाओं के गठन व उचित तालमेल का प्रावधान किया। वर्ष 2000 में बेरोज़गारी की बढ़ती समस्या को ध्यान में रखते हुए योजना आयोग ने दसवीं योजना के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर पृथक कार्यदल गठित किया था। आज़ादी के बाद से व्यावसायिक शिक्षा व शिक्षा के व्यावसायिकरण की दिशा में अनेक प्रयास किए गए हैं।

2013 में राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) की घोषणा के बाद स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास के नए अध्याय की शुरूआत हुई। इस कार्यक्रम के तहत स्कूलों में नए व्यावसायिक शिक्षा के कोर्स शुरू किए गए। इसके लिए स्कूलों में प्रयोगशालाएँ बनाई गई। ये कोर्स नौवीं कक्षा से शुरू होते हैं। सामान्य शिक्षा के साथ विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। इस कार्यक्रम ने व्यावसायिक शिक्षा और सामान्य शिक्षा को जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। कार्यानुभव व नियमित अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं और रुचियों का विकास करने का अवसर मिलता है। भावी जीवन के लिए ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उन्हें रोजगार व स्वरोजगार के साथ भी जोड़ सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत करते हुए 2050 तक 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान करने का संकल्प किया गया है। इसके लिए मौजूदा दशक में चरणबद्ध तरीके से सभी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षणिक विषयों में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत किया जाएगा। इसके लिए माध्यमिक विद्यालय आईटीआई, बहुतकनीकी संस्थानों व स्थानीय उद्योगों के साथ संपर्क व सहयोग करेंगे। प्रत्येक विद्यार्थी किसी न किसी कौशल को स्कूली स्तर पर जरूर सीखे। कृषि शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, तकनीकी, प्रबंधन सहित व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विशेष बल देते हुए शिक्षा नीति में समावेशी व एकीकृत दृष्टिकोण के साथ काम करने की जरूरत को रेखांकित किया गया है।

आशा है भविष्य में सामान्य अकादमिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को हम आपस में जुड़ा हुआ देखेंगे। बौद्धिक ज्ञान से जुड़े व्यक्ति कौशल विकास व श्रम के साथ भी जुड़ेंगे और व्यावसायिक शिक्षा भी एकांगी नहीं रहेगी। माध्यमिक स्तर पर ऐसे प्रयोग से समृद्ध नई पीढ़ी अपनी रुचियों-अभिरुचियों के अनुसार विशेषज्ञताओं की ओर बढ़ेगी। ऊर्जावान युवा खाली हाथ नहीं रहेगा और उसकी ऊर्जा व शक्ति समाजोपयोगी कामों में लग पाएगी।

हिन्दी प्राध्यापक,
राजकीय उच्च विद्यालय, करेड़ा खुर्द
खंड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

रंगों का उपहार होली

फागुन का त्योहार होली,
गुलालों की बहार होली।

जगह-जगह मृदंग बजे है,
हर गली हुड़दंग मचे है।
जिसे देखो उसके भीतर,
तन-मन में उमंग बसे हैं।

सदा बढ़ाती प्यार होली,
फागुन का त्योहार होली।

आपस में उड़ाते गुलाल,
चेहरे सब के हुए लाल।
नाच कूद कर उत्साह भर,
गाएँ गीत मिलाकर ताल।

जोड़े मन के तार होली,
फागुन का त्योहार होली।

जात मजहब भेद मिटाकर,
गिले शिकवे सभी हटाकर।
एक दूजे के गले मिले,
खुश होते अबीर लगाकर।

रंगों का उपहार होली,
फागुन का त्योहार होली।

गोविन्द भारद्वाज
प्राचार्य
राजस्थान शिक्षा सेवा
4/254, पितृकृपा, बी-ब्लॉक
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पंचशील नगर
अजमेर, राजस्थान

कौशल केंद्रित हो शिक्षा का ताना-बाना

राष्ट्र की उन्नति में सहभागिता व युवाओं को रोजगार जैसी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति के लिए छात्रों में उद्यमी भावना का होना अति आवश्यक है तथा यह भावना कौशल शिक्षा के द्वारा ही विकसित की जा सकती है। छात्रों में स्वरुचि-कौशल को भली-भाँति जान लेने की योग्यता प्रारंभिक शिक्षा (स्कूली शिक्षा) के दौरान ही उन्नत करने की नितान्त जरूरत है एवं ऐसी जरूरत की पूर्ति के लिए प्रथम स्तर पर स्किल-एजुकेशन-सिस्टम तैयार किया जाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

21वीं शताब्दी के लिये एक शैक्षिक परिवर्तन का विषय अनुशासन एवं सामग्री-शिक्षा से दूर हटकर क्षमता-विस्तार का होगा। विश्व के उन्नत एवं उन्नतिशील देशों द्वारा इस दिशा में कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। दक्षता पैदा करके ही विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बराबरी तक ले जा सकता है, जिसके लिए क्षमताओं की पहचान कर कौशल शिक्षा का स्तर सुनिश्चित किया जाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। कौशल के विभिन्न क्षमता-स्तरों को प्राप्त करके ही विद्यार्थी भविष्य में कार्य निष्पादन में प्रभावी प्रदर्शन कर सकते हैं। ज्ञान की समझ तथा कौशल के विकास उपरांत ही छात्र में खोज करने जैसी गहरी समझ अर्जित हो सकती है। इसमें प्रारंभिक स्तर पर शुरुआत करके ज्ञान की गहराई को बेहतर तरीके से जाना जाता है तथा निपुणता जल्द प्राप्त होती है। इसमें क्लास-रूम शिक्षा के साथ ही इंडस्ट्रियल/प्रेक्टिकल ट्रेनिंग पर आधारित कौशल गहराई के साथ दक्षता पैदा करने में अधिक योगदान देता है। समय के साथ-साथ विकसित देशों में इस तरीके का शिक्षा चलन निरंतर बढ़ता जा रहा है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में अच्छी समझ का निर्माण करने के लिए समस्या सुलझाने और विश्लेषण करने जैसी विधा का अपनाना हमेशा उपयोगी होता है जो कि कार्य-स्थल/प्रयोगशाला/इंडस्ट्री में ही संभव है। उच्च स्तरीय कौशल शिक्षा का उपलब्धि स्तर हैंड स्किल जोब रोल को निर्देशन का काम करके उसमें गुणात्मक सुधार सकता है, लेकिन वास्तविक कार्य निष्पादन में हस्तकौशल सदा ही बेहतर प्रदर्शन करने की स्थिति में रहता है।

स्कूल लर्निंग के दर्शन और इतिहास में एक बहुत बड़ी कड़ी शुरुआती सोच निर्माण है। सोच को उच्च स्तर तक ले जाकर छात्रों में जो विशेषज्ञता विकसित की जा सकती है वह सीधे उच्च अध्ययन में मिल पाना कम संभव हो पाता है। विषय को सीखने के प्रगतिशील तरीके ही उच्च स्तर की पारंगतता को प्राप्त करने में सहायक होते हैं तथा यह तरीका हाथ एवं बुद्धि के बेहतर कंबिनेशन पर आधारित होता है। अधिकतम हाथों को काम करने का मौका मिले, इसके लिए पारंपरिक तरीके छोड़ कर स्कूली स्तर पर सेवा प्रदायकी तथा निष्पादन शिक्षा एवं जीवन कला के पाठ्यक्रमों के पठन-पाठन की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है तथा वैश्विकता के दौर में कौशल का गहन ज्ञान और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। वर्तमान स्कूली शिक्षा की व्यवस्था में कौशल की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता विश्व भर में अनुभव की जा रही है क्योंकि विकास के साथ उपभोक्ता बाज़ार भी अत्यधिक बढ़ रहा है।

तकनीकों के माध्यम से सीखने, उपयोग के माध्यम से परखने तथा विश्लेषण के माध्यम से नियंत्रित करने जैसे प्रयोग तकनीकी युग के कुछ जरूरी आयाम हैं, जिन्हें अपनाए बिना हम समस्याओं के समाधान के शत-प्रतिशत स्तर पर नहीं पहुँच सकते जो कि किसी भी युग के मानव समाज की एक महती आवश्यकता रहती है। विशेषीकृत कौशल शिक्षा को प्रारंभिक स्तर पर लागू किये जाने की दिशा में यदि आगे बढ़ने की कोशिश की जाती है तो इसमें हमें लचीली प्रवेश पद्धति तथा सुलभ उपलब्धता को ध्यान रखते हुए वर्तमान बहु-आयामी ज्ञान प्रदायकी स्कूली शिक्षा में बदलाव लाने की जरूरत होगी। अतः पारंपरिक प्रणाली में यथाशीघ्र परिवर्तन वांछित हैं। अंतरिक्ष के इस्तेमाल, डिज़ाइनिंग संबंधी विचार, बेहतर उपयोग की सोच जैसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों को चरित्र निर्माण जैसी अंतरिम विधाओं से कम करके देखा जाना समय से बिछुड़ जाने जैसी बात होगी, क्योंकि जीवन के लिए महत्त्व आज इन सभी में समान दिखाई दे रहे हैं।

'शिक्षा इंडस्ट्रीज' के मद में भी अन्य क्षेत्रों की भाँति लागत, समय और ऊर्जा का कम प्रयोग किया जाना अनुभव किया जा रहा है तथा इसमें कम खर्च पर कौशल प्रणाली को विकसित करना समय की जरूरत है तथा इसके लिए अध्यापन का ताना-बाना भी कौशल केंद्रित ही रखना होगा। छात्रों की जरुरतों के अनुसार औद्योगिक सेक्टर से यांत्रिक सहायता लेने के लिए एकमुश्त नियमावली विकसित करने की भी जरूरत है ताकि कौशल सुगम हो जाये एवं उद्योगों की आवश्यकता के मध्यनज़र ही पाठ्यक्रम/कार्यक्रम बनें। शोध से पाई गई जरूरतों के अनुसार जानकारी दिये जाने की नई रणनीति और सिस्टम को शैक्षिक कार्यक्रमों में शामिल किए जाने की प्रक्रिया भी निरंतर चलाई जानी चाहिए तथा नए-नए विषय क्षेत्रों को जोड़कर ही सेवाकारी सुखद भविष्य की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा परियोजना प्रबंधन में नवीनतम दृष्टिकोण का उपयोग किया जाना हमेशा से होता रहा है तथा इसके परिणाम भी अच्छे निकले हैं, लेकिन इस फ्रेमवर्क का बार बार पुनर्निरीक्षण करते हुए बदलते समय की उपयोगी आवश्यकताओं के अनुसार निरंतर संशोधन की आवश्यकता होती है। हाथों से काम करने वाली एक बड़ी वर्कफोर्स भारतवर्ष जैसे देश के लिए अधिक महत्त्व की है क्योंकि हमारे पास सेवा-प्रदायगी सेक्टर्स के लिए बड़ी जनसंख्या है। अतः व्यावहारिक कौशल की शिक्षा को किसी भी प्रकार नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

भविष्य के बाजार की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे एक प्रयोग की शृंखला में एनएसक्यूएफ (नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क) स्किल-शिक्षा आधारित प्रोग्राम एक अच्छी शुरुआत है। नौ वर्ष पूर्व देशभर में प्रथमतः हरियाणा प्रदेश में इस परियोजना के संचालन की शुरुआत प्रदेश के लिए एक गौरव का विषय तो है ही साथ ही युवा-शक्ति को चेनेलाइज करने तथा राष्ट्र निर्माण की धारा में आगे बढ़ाने का एक शानदार अवसर भी है। एनएसक्यूएफ पद्धति कक्षा नौवीं के स्तर पर प्रदेश में चौदह स्किल-सब्जेक्ट्स शुरू करके एक नींव स्थापित किया जाना वास्तव में हमें सुखद भविष्य की ओर अग्रसर करेगा तथा आशान्वित रहने की आवश्यकता है कि भविष्य में स्किल-शिक्षा की शुरुआत नौवीं से नहीं, छठी कक्षा से ही किया जाना संभव हो सकेगा।

नीरू काल्हेर, रिटेल अध्यापिका, गुड़गाँव

'हुनर : एक पहल'

दिव्यांग विद्यार्थियों के कौशल विकास का अनूठा कार्यक्रम

वित्त वर्ष 2019-20 में एमएचआरडी, भारत सरकार ने कुल 158.29 लाख रुपये- हुनर: एक पहल के अन्तर्गत समग्र शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा 9वीं से 12वीं में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों के करियर के लिए प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करने हेतु अनुमोदित किए हैं। उपरोक्त बजट में से 2 तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम दिव्यांग कक्षा 9वीं से 12वीं में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए दो संस्थानों - खुशबू एवं स्वाद विकास केन्द्र (एफएफडीसी) मकरंद नगर, कन्नौज (उत्तर प्रदेश) तथा राष्ट्रीय व्यवसाय सेवा केन्द्र लुधियाना (पंजाब) के द्वारा आयोजित किये जाते हैं।

1. खुशबू एवं स्वाद विकास केन्द्र (एफएफडीसी) मकरन्द नगर, कन्नौज (उत्तर प्रदेश) - यह संस्थान कक्षा 9वीं से 12वीं में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों को धूपबत्ती, अगरबत्ती, हवन-सामग्री तथा गुलाल, फेसपेक, गुलाबजल, गुलकन्द, सुगन्ध एवं आवश्यक तेल इत्यादि बनाने के लिए क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाओं का आयोजन करता है।

2.राष्ट्रीय व्यवसाय सेवा केन्द्र लुधियाना (पंजाब)- यह संस्थान कक्षा 9वीं से 10वीं में अध्ययरत दिव्यांग विद्यार्थियों को रोज़गार प्रदान करने हेतु सिलाई, वेल्डर, ड्रेस मेकिंग, सिलाई तकनीक, पेपर बेग व लिफाफा बनाना तथा बिजली का काम आदि के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

खुशबू एवं स्वाद विकास केन्द्र (एफएफडीसी) मकरंद नगर, कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के द्वारा प्रशिक्षण-

वित्त वर्ष 2019-20 में, परिषद् द्वारा हरियाणा राज्य के 11 जिले- भिवानी, चरखी दादरी, फरीदाबाद, गुरुग्राम, झज्जर, महेन्द्रगढ़, नूंह, पलवल, रेवाड़ी, रोहतक तथा सोनीपत के कक्षा 11वीं तथा 12वीं में अध्ययनरत 154 दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए धूपबत्ती, अगरबत्ती, गुलाबजल, गुलकन्द, सुगन्ध एवं आवश्यक तेल बनाने के लिए 10 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नवम्बर, दिसम्बर, 2019 तथा जनवरी, 2020 में जिला रोहतक, रेवाड़ी, तथा फरीदाबाद में खुशबू एवं स्वाद विकास केन्द्र (एफएफडीसी) मकरन्द नगर, कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के विशेषज्ञों के माध्यम से करवाया गया।

वित्त वर्ष 2020-21 में, 10 दिवसीय उपरोक्त आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कक्षा नौवीं से बाहरवीं में अध्ययनरत 450 दिव्यांग विद्यार्थियों तथा 81 विशेष अध्यापकों, फरवरी 2021 में उपरोक्त संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा जिला रोहतक, हिसार, कुरुक्षेत्र तथा रेवाड़ी में सफलतापूर्वक किया गया है।

राष्ट्रीय व्यवसाय सेवा केन्द्र लुधियाना (पंजाब) के द्वारा प्रशिक्षण-

राष्ट्रीय व्यवसाय सेवा केन्द्र लुधियाना के द्वारा रोज़गार प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। परिषद् द्वारा 11 जिलों -अम्बाला, फतेहाबाद, हिसार, जींद, कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र, पंचकूला, पानीपत, सिरसा तथा यमुनानगर के कक्षा नौवीं तथा दसवीं में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों को उपरोक्त संस्थान द्वारा विभिन्न ट्रेडों जैसे- सिलाई, वेल्डर, ड्रेस मेकिंग, सिलाई तकनीक, पेपर बेग व लिफाफा बनाना तथा बिजली का काम आदि में 6 महीने की अवधि में 300 घंटों का प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया गया। जिसके अन्तर्गत प्रथम चरण में इन जिलों के विशष अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला कुरुक्षेत्र में आयोजित किया गया। उसके पश्चात इन अध्यापकों को एनसीएससी, लुधियाना द्वारा एक दिवसीय प्रयोगात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया गया। लुधियाना में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद इन विशेष अध्यापकों को अम्बाला तथा सिरसा जिले में 9वीं तथा 10वीं कक्षा के दिव्यांग छात्रों का दिव्यांगता अनुसार चयन करने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। 11 जिलों में से 8 जिलों के कुल 201 दिव्यांग छात्रों का चयन इन विशेष अध्यापकों द्वारा एनसीएससी, लुधियाना के विशेषज्ञों के सहयोग से विभिन्न ट्रेडों जैसे- सिलाई, वेल्डर, ड्रेस मेकिंग, सिलाई तकनीक, पेपर बेग व लिफाफा बनाना तथा बिजली का काम इत्यादि में किया गया। फरवरी/मार्च, 2020 में प्रशिक्षित आईटीआई व्यावसायिक प्रशिक्षक के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जाना था, परन्तु सम्पूर्ण भारत में कोविड-19 के फैलने के कारण लॉकडाउन लगा दिया था तथा जिसके परिणामस्वरूप सभी

विद्यालयों को मार्च, 2020 से बन्द कर दिया गया था। जिसके कारण एनसीएससी तथा आईटीआई के विशेषज्ञों की अनुपलब्धता के कारण उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूर्ण नहीं किया जा सका। जिसको 2021-22 वित्त वर्ष में फिर से शुरू किया जाएगा।

रजनीश शर्मा
कॉडिनेटर (समावेशी शिक्षा)
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला

करियर प्लानिंगः जितनी जल्दी हो उतनी बेहतर

अगर आप ट्रेन में सफर कर रहे हैं और आपको मंजिल का पता नहीं तो आप कहाँ पहुचेंगे? निश्चित रूप से वहाँ पहुँचेंगे, जहाँ ट्रेन आपको लेकर जाएगी। दूसरी तरफ अगर आपने अपनी मंजिल पहले से तय कर रखी है और आप सम्बन्धित ट्रेन से सफर करते हैं तो इस बात की अधिक संभावना होती है कि आप अपनी तय मंजिल पर पहुँचेंगे। करियर प्लानिंग का मतलब भी अपनी मंजिल, रास्ते और साधनों का प्लान करना है।

करियर सम्बन्धित निर्णय विद्यार्थी जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णयों में से एक है। जहाँ उचित करियर चयन जीवन को सार्थक बनाते हैं और धनात्मक दिशा प्रदान करते हैं, वहीं गलत या अनुपयुक्त करियर चयन जीवन में नकारात्मकता और नीरसता लाता है। करियर प्लानिंग न केवल छात्रों के भविष्य परिवार और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है बल्कि निर्धारित भी करता है। वर्तमान समय में छात्रों में करियर प्लानिंग सम्बन्धित उत्सुकता और जागरुकता पहले की तुलना में बढ़ी है पर अभी भी अधिकतर छात्रों का करियर सम्बन्धित निर्णय अभिभावकों द्वारा ही लिया जाता है। वहीं ऐसे भी छात्रों की कमी नहीं जो जानकारी के अभाव में केवल प्राप्तांकों के आधार पर दूसरों की देखा-देखी या किसी से प्रभावित होकर करियर का चयन कर लेते हैं।

वैज्ञानिक तकनीकी और औद्योगिक विकास के साथ करियर के नए-नए अवसर बने हैं और विभिन्न क्षेत्रों में करियर के अवसर बढ़े हैं। ऐसे में उचित करियर प्लानिंग से औसत दर्जे के छात्रों के लिए भी आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर मौजूद हैं।

करियर प्लानिंग के महत्त्वपूर्ण चरण

आत्म मूल्यांकन- अपने आपको समझना ही करियर प्लानिंग का प्रथम चरण है। सर्वप्रथम अपने आपको जानने-समझने की कोशिश करें। अपनी इच्छाओं, व्यक्तित्व ताकत, कमजोरियों, रुचियों, मूल्यों आदि को गहराई से जानने की कोशिश करें। मैं कौन हूँ? मेरी पसंद या नापसंद क्या है, कौन से विषय या प्रोफेशन मुझे आकर्षित करते हैं, किन चीजों में मुझे बिल्कुल भी रुचि नहीं है? अथवा मैं किन गतिविधियों में बहुत अच्छा हूँ? आदि प्रश्नों के जवाब अपने आप से पूछें। यह काम पूरी ईमानदारी से करें। जल्दबाजी न करें। इस काम में अपने अभिभावकों मित्रों तथा अध्यापकों का सहयोग अवश्य लें।

करियर ऑप्शंस की जानकारी- अपने पसन्द के विषय से सम्बन्धित करियर ऑप्शंस की जानकारी एकत्रित करना करियर प्लानिंग का दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण है। इंटरनेट पर आप विभिन्न ऑप्शंस के विषय में सम्पूर्ण जानकारी, जैसे- आवश्यक न्यूनतम शैक्षिक पात्रता, जॉब रोल और रिस्पोंसिबिलिटी, भविष्य में उस करियर के ग्रोथ की सम्भावना इत्यादि प्राप्त कर सकते हैं। समाचार-पत्र, मैगजीन्स आदि भी इस काम में आप की मदद कर सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा ऑप्शंस सर्च करने की कोशिश करें। अन्त में अपने पसन्द के क्रम में इनकी लिस्टिंग करें। ऐसे पारिवारिक सदस्य रिश्तेदार या पड़ोसी जो जॉब में हों, से बातचीत के माध्यम से भी कार्यक्षेत्र की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

निर्णय- एक बार करियर ऑप्शंस की सारी जानकारी एकत्रित करने के बाद आप अपने करियर का चयन कर सकते हैं। आपका यह निर्णय किसी दबाव, विवशता, जल्दबाजी या दूसरों की नकल के आधार पर न होकर आपके व्यक्तित्व, अभिक्षमता तथा रुचि के आधार पर होना चाहिए। सर्वोत्तम करियर के स्थान पर उपयुक्त करियर का चयन करें। ध्यान रखें कि कोई भी करियर सर्वश्रेष्ठ नहीं होता।

रोडमैप तैयार करना- इस स्टेप में आपको अपने चयनित करियर के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मसलन सम्बन्धित कॉलेज, कम्पिटीटिव इग्जाम फीस इत्यादि की जानकारी एकत्रित करनी होती है। साथ ही स्टडी प्लान और शॉर्ट टर्म तथा लांग टर्म गोल तय करना होगा।

कार्यान्वयन- यह अन्तिम पर सबसे महत्त्वपूर्ण स्टेप है। आपको अपने द्धारा बनाए गए प्लान को कार्यान्वित करना होता है।

करियर प्लानिंग के लिये उपयुक्त समय-

करियर प्लानिंग एक लांग टर्म प्रक्रिया है। शुरुआत एक सपने से होती है कि आप अपने आपको कुछ सालों के बाद कहाँ और किस रूप में देख रहे हैं। यह स्वप्न ही लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करता है। करियर प्लानिंग की शुरुआत कभी भी की जा सकती है पर जितनी जल्दी यह प्रक्रिया प्रारम्भ होती है उतना बेहतर होता है। कक्षा 8वीं तक आप अपने ऑप्शंस ओपन रख सकते हैं। लेकिन बेहतर होगा अगर आप 11वीं कक्षा में प्रवेश के पहले तक अपनी स्ट्रीम (विज्ञान कला अथवा कामर्स) का निर्णय ले लें, क्योंकि यही वह समय होता है जब आप अपने आपको विषयों के चौराहे पर खड़ा पाते हैं और आपको किसी एक रास्ते का चयन करना होता है ।

करियर चयन के महत्वपूर्ण बिन्दु-

अपनी आवश्यकताओं व्यक्तित्व अभिक्षमता, रुचि तथा मूल्यों के आधार पर करियर का चयन करें।

सर्वोत्तम करियर के स्थान पर उपयुक्त करियर का चयन करें। कोई भी करियर 'फिट फॉर ऑल' नहीं है ।

'व्यक्तिगत भिन्नता' के नियम को ध्यान में रखें। इस नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक और मानसिक गुणों में दूसरों से भिन्न होता है। अतः किसी और से अपनी तुलना करने से बचें। जो करियर दूसरों के लिये अच्छा है, जरुरी नहीं कि आपके लिये भी उपयुक्त हो। किसी दबाव में कोई भी निर्णय न लें। जल्दबाजी से बचें। अपना समय लें।

अभिभावकों की भूमिका-

बच्चों के करियर संबधित निर्णयों में मार्गदर्शक की भूमिका निभाएँ न कि निर्णायक की। अपनी आकांक्षाएँ स्वप्न या विचार थोपने से बचें।

बच्चों को पाठ्येतर (एक्सट्राकरीकुलर) किग्राकलापों में भाग लेने को प्रोत्साहित करें।

बच्चों की सृजनात्मक आदतों को बढ़ावा दें, अभिप्रेरित करें ।

बच्चों की करियर सम्बन्धित जिज्ञासाओं को ध्यानपूर्वक सुनें और मार्गदर्शन करें। उन्हें और अधिक जानकारी एकत्रित करने को प्रोत्साहित करें।

बच्चों की करियर सम्बन्धित इच्छाओं और विचारों का सम्मान करें और उन्हें हतोत्साहित करने से बचें। भले ही आप उनके विचारों से सहमत न हों।

डॉ. प्रदीप श्याम रंजन
मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक परामर्शदाता

एनरोलमेंट ड्राइव: शिक्षक घर-घर जाकर कर रहे हैं सर्वेक्षण

एनरोलमेंट ड्राइव के तहत शिक्षा विभाग व सरकार ने नये शिक्षा सत्र (2021-22) में ऐसे बच्चों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया है जिन्होंने आज तक स्कूल नही देखा या फिर ड्रॉपआउट हो गये हों। विभाग की कोशिश यही है कि कोई भी विद्यार्थी अपने शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। स्कूल के शिक्षक घर-घर जाकर ऐसे बच्चों की पहचान के लिए सर्वे में जुट गये हैं। सर्वे 4 चरणों में पूरा किया जाएगा। शिक्षकों के इस काम में सरपंच, आँगनबाड़ी वर्कर, एसएमसी भी सहायता कर रहे हैं। योजना के अनुसार इस सर्वे में 6-14 आयु वर्ग के बच्चों को शामिल किया गया है। सरकार का उद्देश्य है कि कोई भी बच्चा पढ़ाई से छूट न जाये। अब शिक्षकों ने घरों का दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया है। सर्वेक्षण को समयबद्ध ढंग से पूरा करने के लिए विभाग प्रयास कर रहा है।

सर्वेक्षण चार स्तर पर पूरा किया जाएगा, जिसके तहत 4 मार्च तक स्कूल स्तर, 4 से 8 मार्च कलस्टर स्तर, 9 व 10 मार्च को खंड स्तर व 12 से 15 मार्च तक जिला स्तर पर आँकडे एकत्रित किए जाएँगे। इस सर्वे का उद्देश्य यह भी होगा कि बच्चे के नजदीक स्कूल कौन-सा है ताकि उन्हें वहाँ भेजा जा सके। **-शिक्षा सारथी डेस्क**

फिरोजपुर झिरका की छात्रा दिव्या ने रचा इतिहास

राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करेंगी शोध पत्र

प्रदेश के शैक्षणिक रूप से पिछड़े क्षेत्र मेवात के गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल की छात्रा दिव्या ने इतिहास रचा है। पहली बार उसे राष्ट्रीय स्तर पर शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए चुना गया है। रोहतक में 31 जनवरी को भारत सरकार के डिपार्टमैंट ऑफ साइंस एंड़ टेक्नोलोजी एवं हरियाणा विज्ञान मंच द्वारा आयोजित प्रदेश स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए चुना है।

नीति आयोग के अनुसार प्रदेश का नूँह जिला एक अति पिछड़ा जिला है, जहाँ पर स्वास्थ्य एवं शिक्षा में अनेक बाधाएँ हैं। ये चुनौतियाँ यहाँ कार्य करने वाले अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए एक अवसर का कार्य करती हैं। इसी चुनौती को स्वीकार करते हुए गवर्नमेंट सीनियर सैकेंडरी स्कूल फिरोजपुर झिरका के साइंस प्रवक्ता डॉ.पवन कुमार एवं कुसुम मलिक के सफल दिशानिर्देशन में इसी स्कूल की होनहार छात्रा दिव्या ने ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की है।

मेवात में 2018 में प्रथम बार तत्कालीन जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी अनूप जाखड़ के मार्गदर्शन से ऐतिहासिक शुरुआत की थी। जिला नूँह की राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस टीम की संयोजिका कुसुम मलिक एवं अकादमिक संयोजक डॉ.पवन कुमार की मेहनत एवं लगन से इस वर्ष भी जिले से पाँच टीमों ने प्रथम चरण में ऑनलाइन माध्यम से अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए थे। जिसके उपरांत दो टीमें रोहतक में होने वाली राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस के लिए चयनित की गईं, जिनमें एक हसनपुर तावडू की तथा दूसरी टीम में फिरोजपुर झिरका की थी। जिसमें दिव्या ने शहरी वर्ग के सीनियर केटेगरी में 'मेवाती खाना-पोषण का स्रोत' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसे राष्ट्रीय स्तर के लिए चुना गया है।

दिव्या ने अपने शोध के बारे में बताते हुए कहा कि उसने मेवाती खाने पर एक संतुलित डाइट चार्ट तैयार किया है जो गर्भवती माताओं एवं बच्चों के लिए लाभप्रद हो सकेगा। **('गुड़गाँव टुडे' से साभार)**

सुपर-100 के करनाल केंद्र का शुभारंभ

हरियाणा सरकार ने शिक्षा की गुणववाा को लेकर एक नई पहल की है। इसके तहत अब सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए सुपर-100 योजना के तहत प्राइवेट स्कूलों के बच्चों के साथ कंपीटिशन में तैयारी करने के लिए कोचिंग का प्रावधान किया गया है। सरकार ने वर्ष 2018 में रेवाड़ी व पंचकूला में दो सेंटर शुरू किए थे, जिनके बेहतरीन परिणामों को देखते हुए मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस वर्ष दो और नए सेंटर करनाल व हिसार में खोलने का निर्णय लिया है। करनाल में बीते दिनों उपायुक्त निशांत कुमार यादव ने डाइट शाहपुर करनाल में स्थापित कोचिंग सेंटर का शुभारंभ किया। इसके अलावा इन बच्चों के ठहरने, खाने-पीने की व्यवस्था के लिए डाइट शाहपुर में ही बने छात्रावास का भी लोकार्पण किया।

इस मौके पर उपायुक्त ने उपस्थित बच्चों को संबोधित करते हुए सुपर-100 में सिलेक्ट बच्चों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि वे सभी बहुत भाग्यशाली हैं जिन्हें सरकारी खर्चे पर कोचिंग निःशुल्क मिलेंगी। उन्होंने कहा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए बच्चों को लक्ष्य को सामने रखकर कड़ी मेहनत करनी चाहिए। सफलता आपको जरूर मिलेगी। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार ने शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर एक नई शुरूआत की है, जिसके तहत सरकारी स्कूलों के सुपर-100 बच्चों को कोचिंग दिलाकर इंजीनियरिंग और मेडिकल के क्षेत्र में आगे बढ़ने का सुनहरा मौका दिया है।

इस मौके पर जिला शिक्षा अधिकारी राजपाल चौधरी और कार्यक्रम में डाइट शाहपुर के प्रिंसिपल रवीन्द्र चौधरी ने बताया कि सुपर-100 योजना के तहत सरकारी स्कूलों के प्रतिभावान बच्चों को इंजीनियर व मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए कंपीटिशन की तैयारी करवाई जाएगी। इस योजना के तहत 11वीं व 12वीं के बच्चों को तैयार किया जाएगा। इस योजना के लागू होने से अब सरकारी स्कूल के जो बच्चे कोचिंग के अभाव में मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लेने से वंचित रह जाते थे, उन्हें लाभ मिलेगा। **-शिक्षा सारथी डेस्क**

आकर्षण का केन्द्र बना राजकीय उच्च विद्यालय बहादुरपुर

अरुण कुमार कैहरबा

बहुत से स्कूल सौंदर्यीकरण की राह पर चलते हुए समुदाय के आकर्षण का केन्द्र बन गए हैं और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। यमुनानगर जिला और खंड जगाधरी के गाँव बहादुरपुर का राजकीय उच्च विद्यालय भी उन्हीं में से एक है। 2019-20 में पहले स्कूल ने मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता में खंड स्तर पर प्रथम स्थान हासिल किया। उसके बाद जिला स्तर पर प्रथम आने का गौरव प्राप्त किया। शिक्षा में सुधार के लिए भी स्कूल ने खूब नाम कमाया है।

आज़ादी के बाद गाँव में पढ़ाई के लिए खूब आकर्षण देखा गया। गाँव के पहले सरपंच चौ. साधुराम कांबोज के अथक प्रयासों से गाँव में 1954 में प्राथमिक पाठशाला की शुरूआत हुई। स्कूल भवन बनने से पूर्व गाँव में मा. चुन्नी लाल जी के घर पर और अन्य स्थानों पर कक्षाएँ लगाई गईं। बाद में पंचायत व ग्रामीणों ने स्कूल के लिए निर्धारित जगह होने की जरूरत महसूस की। बताते हैं कि सरपंच व गाँव के मौजिज लोग तत्कालीन बीईओ से मिले। ग्रामीणों के उत्साह को देखकर बीईओ भी खुश हुए। गाँव के बुजुर्ग याद करते हुए बताते हैं कि स्कूल की स्थापना के समय तत्कालीन बीईओ स. जगजीत सिंह साइकिल पर सवार होकर गाँव में आए थे। स्कूल की स्थापना में उनका बड़ा योगदान रहा। स्कूल के लिए निर्धारित ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल बनाने और भवन बनाने में पंचायत ने सहयोग किया। इस तरह से गाँव में सरकारी स्कूल शुरू हो गया। गाँव के बुजुर्गों ने बताया कि गाँव के पहले शिक्षक शिव कुमार थे। उन्होंने स्कूल को शुरू करने और बच्चों को पढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया। शिक्षा मंत्री देशराज कांबोज के कार्यकाल में प्राथमिक पाठशाला माध्यमिक स्कूल में बदल दी गई। 1981 में स्कूल अपग्रेड होकर उच्च विद्यालय बना।

हिन्दी प्राध्यापक विनय कुमार स्कूल में 22 अगस्त, 2019 में स्थानांतरित होकर आए। उस समय स्कूल का द्वार अच्छी हालत में नहीं था, जिससे गली से गुजरने वाले लोगों पर स्कूल का प्रभाव नकारात्मक ही पड़ता था। स्कूल के रास्ते भी खराब थे। पहली से पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों की संख्या 50 थी, जोकि आज 74 हो गई है। इसी प्रकार छठी से दसवीं तक विद्यार्थियों की संख्या 67 थी, जोकि आज 74 हो गई है। आते ही विनय जी को मुखिया की जिम्मेदारी मिली। उन्होंने सरपंच राजेन्द्र कांबोज से मिलकर पंचायत से स्कूल के द्वार व रास्तों की दशा सुधारने का अनुरोध किया। पंचायत ने सहर्ष स्कूल का सहयोग करना शुरू कर दिया।

स्कूल सकारात्मक दिशा में आगे बढ़े, इसके लिए स्टाफ की सुविचारित योजना, पंचायत व अभिभावकों का सहयोग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्याध्यापक विनय कुमार, गणित अध्यापक रवि कुमार उत्तम, पीटीआई प्रदीप कुमार, पंजाबी अध्यापिका देवेन्द्र कौर, हिन्दी अध्यापिका गीता, सामाजिक विज्ञान अध्यापिका गीता, प्राथमिक पाठशाला में मीना कुमारी, मुकेश, अनिल कुमार सहित समस्त स्टाफ ने मिलकर कार्य किया। अध्यापकों के अनुरोध पर पंचायत ने स्कूल के मुख्य द्वार

के सौंदर्यीकरण का कार्य कर दिया। गेट से लेकर स्कूल भवन के तीनों हिस्सों तक जाने के लिए पक्की गलियों का निर्माण किया गया। गलियों के साथ-साथ पेड़-पौधे लगाए गए। आज मुख्य द्वार की सुंदरता और अंदर प्रवेश करते हुए पक्के मार्ग पर लगी टाइलें और पेड़-पौधों व शिक्षाप्रद बोर्डों की सुंदरता आगंतुकों को सहज ही आकर्षित करती है।

स्कूल के बीचों बीच बेकार पड़े कमरे पर अध्यापकों की नजर गई। कमरे पर आँगनवाड़ी का कब्जा था। यहाँ आँगनवाड़ी नहीं लगती थी। कमरा बेकार पड़ा था और उसमें कूड़ा-कबाड़ा भरा हुआ था। उन्होंने कमरे को खुलवाकर उसकी सफाई की और उसे मुख्याध्यापक के कार्यालय के रूप में विकसित किया। गेट में प्रवेश करते हुए कुछ ही दूरी पर दाईं तरफ मुख्याध्यापक का कार्यालय होने से सारे स्कूल पर मुखिया की नजर रहती है और स्कूल की प्राथमिक, मिडल और उच्च विंग सहित तमाम पहलुओं का संयोजन करने में आसानी भी रहती है। बाहर से आए अभिभावकों व मेहमानों को भी मुख्याध्यापक का कार्यालय ढूँढ़ने में मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ता है। स्कूल में इन्वर्टर तो था, लेकिन वह बंद पड़ा था। अध्यापकों ने बंद पड़े इन्वर्टर को शुरू किया। शौचालयों की मरम्मत करवाई गई।

शीघ्र ही स्कूल सौंदर्यीकरण और पढ़ाई के मामले में आगे बढ़ गया। मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण योजना के तहत पुरस्कार के लिए आवेदन की बात आई तो स्कूल के ही अध्यापकों को इस उपलब्धि मिलने के बारे में यकीन नहीं था। स्कूल ने आवेदन किया और उसके लिए तैयारियों को भी तेज कर दिया। स्कूल का मूल्यांकन करने के लिए अधिकारी आए तो उन्होंने थोड़े समय में सुधार करने की सराहना की। स्कूल ने पहले खण्ड स्तर पर सौंदर्यीकरण पुरस्कार प्राप्त किया। इससे स्कूल मुखिया व अध्यापकों का हौसला बढ़ गया। उन्होंने सौंदर्यीकरण के पैमानों पर स्कूल को निखारने में ऊर्जा लगाई और जिला स्तर पर भी स्कूल को पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

अध्यापकों ने बताया कि कमरों को विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार सजाया गया। स्कूल में हर्बल पार्क का निर्माण करवाया गया, जिसमें अनेक प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए गए हैं। प्रातःकालीन सभा में विद्यार्थियों की प्रेरणा की मुख्य गतिविधि बनाई गई। सामान्य ज्ञान की प्रश्नोत्तरी हर रोज आयोजित की जाती रही। कोरोना काल में विद्यार्थियों के साथ संपर्क करने और उनका मार्गदर्शन

करने की चुनौती थी। इस पर अध्यापकों ने जरूरत के अनुसार घर-घर संपर्क किया। जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्ट फोन की सुविधा नहीं थी, उनको शिक्षा मित्र के साथ जोड़ा गया। बोर्ड के परीक्षा परिणाम में स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। इसके लिए अध्यापकों ने रविवार के दिन भी कक्षाएँ लगाईं।

पंचायत सहयोग के लिए हमेशा तैयार-

गाँव के सरपंच राजेन्द्र कांबोज ने बताया कि वे खुद इसी स्कूल से पढ़े हैं। अपने बाल्यकाल में अध्यापकों के नेतृत्व में उन्होंने क्यारियाँ बनाई हैं। जब गाँव के नेतृत्व का उन्हें मौका मिला और अध्यापकों ने उनसे स्कूल में कार्य करवाने का अनुरोध किया तो उन्हें स्कूल में काम करवाने पर बहुत खुशी हुई। उन्होंने कहा कि अध्यापकों को कहने की देरी है, वे काम करवाने में देरी नहीं करते। उन्होंने कहा कि कुछ ही समय में पंचायत ने गेट, गलियों की सजावट के लिए स्कूल में सहयोग किया है।

शिक्षा के साथ संस्कार में भी सरकारी स्कूल के बच्चे अव्वल-

सरपंच ने राजेन्द्र कांबोज ने कहा कि शिक्षा में ही

नहीं संस्कार में भी सरकारी स्कूल के बच्चे पीछे नहीं हैं। अध्यापक इस पर विशेष बल देते हैं। उन्होंने कहा कि निजी स्कूलों के बच्चे दुआ-सलाम तक नहीं करते। सरकारी स्कूल के बच्चे बड़ों को नमस्ते, राम-राम व दुआ-सलाम करके पास से गुजरते हैं। इससे उन्हें व ग्रामीणों को खुशी होती है। उन्होंने कहा कि निजी स्कूल के बच्चे अंग्रेजी में चाहे कुछ भी बोलते हों। लेकिन गाँव के लोग बच्चों की शिक्षा का आकलन उनके व्यवहार से करते हैं। निजी स्कूल के बच्चे इस मामले में फिसड्डी हैं। इस मामले में सरकारी स्कूल के बड़े से लेकर छोटे बच्चे भी अपने व्यवहार से लोगों का दिल जीत लेते हैं।

गाँव की खूबी-

नंबरदार सुरेन्द्रपाल सिंह, ग्रामीण बालकृष्ण कांबोज, साधुराम, मा. कुमेर सिंह, पूर्व सरपंच ओम प्रकाश, अब जिस स्थान पर गाँव की गौचरान की भूमि है, बहुत पहले वहीं पर गाँव रहा होगा। मिट्टी के लिए खुदाई करने पर कई प्राचीन वस्तुएँ वहाँ से मिल चुकी हैं। इसी गाँव से ही नजदीक ही स्थित जयपुर गाँव भी निकला है। जयपुर कभी इसी पंचायत का हिस्सा होता था। गाँव की आबादी दो हजार के आसपास है। गाँव में हिन्दू, मुस्लिम, सिख व सभी जातियों के लोग मिलजुल कर रहते हैं।

अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया का अहम किरदार: राजपाल चौधरी

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी (अब जिला शिक्षा अधिकारी करनाल) राजपाल चौधरी ने बताया कि शिक्षा एक बहु आयामी प्रक्रिया है। शिक्षा समाज में दिखावे का साधन नहीं है, बल्कि बदलाव का जरिया है। अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण किरदार है। उन्हें खुशी है कि बहादुरपुर स्कूल के अध्यापकों ने अच्छा प्रदर्शन किया है और स्कूल को सौंदर्यीकरण में नाम दिलाया है। उन्होंने अध्यापकों से मिलजुल कर स्कूलों को सुंदर बनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सुधार लाने का आह्वान किया।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, करेड़ा खुर्द
खण्ड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

राष्ट्रीय कला-उत्सव में मुस्कान ने लहराया हरियाणा का परचम

जिला कैथल के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नौच की बारहवीं कक्षा की छात्रा मुस्कान ने कला-उत्सव 2020-21 में राष्ट्रीय स्तर पर एकल लोक गायन (रागिनी) प्रतियोगिता मे द्वितीय स्थान अर्जित किया। इससे पूर्व खंड, जिला, राज्य स्तर पर मुस्कान ने परंपरागत लोकगायन एकल गायन वर्ग में अपने गायन का लोहा मनवाते हुए प्रथम स्थान अर्जित किया था। प्रदेश के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि इस वर्ष ऑनलाइन आयोजित कला-उत्सव में राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने वाली इकलौती प्रतिभागी थी।

राष्ट्रीय स्तरीय कला उत्सव 2020-21 एनसीईआरटी दिल्ली में गत 11 जनवरी 2021 से 22 जनवरी 2021 तक आयोजित की गई, जिसमें राज्य स्तर पर प्रथम विजेता रही टीमों ने भाग लिया, जिसका परिणाम भारत सरकार में शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल द्वारा ऑनलाइन घोषित किया गया।

मुस्कान ने जो रागिनी गाई थी वह हरियाणा के सुविख्यात सांगी धनपत सिंह के सांग बनदेवी से ली गई थी। रागिनी के बोल थे- **'दई सुसरे साब ने काड, जरा सा करया ना मेरा ख्याल, रोवती बनदेवी चाली।'** मुस्कान जिस दर्द भरे अंदाज़ में इस गाती है उससे बनदेवी की व्यथा मानो मूर्त हो जाती है और श्रोताओं की आँखें नम हुए बिना नहीं रहतीं।

मुस्कान अत्यंत साधारण परिवार से संबंध रखती है। गायन उनके परिवार का पुश्तैनी धंधा रहा है, हालांकि बदलते युग में अब केवल इसी के माध्यम से परिवार का भरण-पोषण सरल नहीं। संभवतः यही सोचकर उनके पिता सुरेश कुमार अपने व निकटवर्ती गाँवों में मज़दूरी करने जाते हैं। बचपन से ही मुस्कान को परिवार में ऐसा माहौल मिलने के कारण उसका भी गायन में रूझान हो गया। पिता ने भी प्रेरित किया तो इस क्षेत्र में उसने अपनी विशेष पहचान बनानी आरंभ कर दी। जब वह पाँचवीं कक्षा में थी, तब पहली बार विद्यालय के एक कार्यक्रम में उसने 'इक मीरा इक राधा' गीत गाया था। उस समय अध्यापकों द्वारा उसे जो प्रशंसा मिली, उसने उसे इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद मुस्कान ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जब वह सातवीं कक्षा में पहुँची, तब कला-उत्सव के कक्षा 6-8 आयु-वर्ग में उनके विद्यालय का समूह-गीत राज्य स्तर पर प्रथम आया। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' थीम पर आधारित इस गीत में वह प्रमुख भूमिका में थी। लेकिन उसकी अपनी इच्छा एकल गायन के क्षेत्र में नाम अर्जित करने की थी, जबकि कला-उत्सव में उन दिनों एकल गायन नहीं होता था। उसकी साध गत वर्ष पूरी हुई जब उसने प्रदेश स्तर पर कला-उत्सव में एकल गायन में पहला स्थान अर्जित किया।

मुस्कान विद्यालय की एक मेधावी छात्रा है। गायन के साथ-साथ शैक्षणिक क्षेत्र में भी वह बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है। दसवीं कक्षा में भी उसने 79 प्रतिशत अंक अर्जित किए थे। मुस्कान की प्रतिभा को तराशने में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर, जिला कैथल के तबला इस्ट्रक्टर सुमित भार्गव व राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क, जिला कैथल में तबला प्रशिक्षक के पद पर कार्यरत अनिल भारती की भी विशेष भूमिका रही है।

अनिल बताते हैं कि गत वर्ष के कला उत्सव में भी मुस्कान ने अपने वर्ग में राज्य में प्रथम रह कर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्थान बनाया था। 'शिक्षा सारथी' की ओर से मुस्कान को अनेकानेक शुभकामनाएँ।

डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

शिक्षा मंत्री ने किया डॉ. शिवा की पुस्तकों का विमोचन

शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल ने डॉ.शिवा अग्रवाल की दो पुस्तकों का बीते दिनों विमोचन किया। ये पुस्तकें हैं- समभाव तथा चित्रभाषा : स्मार्ट शिक्षण कला। डॉ. शिवा अग्रवाल अंबाला जिले के राजकीय आदर्श संस्कृति वमा विद्यालय समलेहड़ी में फाइन आर्ट्स की प्राध्यापिका हैं।

प्रथम पुस्तक एक काव्य संग्रह है जिसमें वे रचनाएँ पिरोई गई हैं जो सत्यं, शिवं और सुंदरम् के भावों को अपने में समाहित किए हुए हैं। भाव जो अपने आप में पूर्ण हैं, भाव जो प्रेम से परिपूर्ण हैं। दूसरी पुस्तक जो हरियाणा ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई है, शिक्षा ग्रहण करते समय विद्यार्थियों के मनोभावों को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा ग्रहण करते समय उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों पर विचार करते हुए लिखी गई है। यह पुस्तक विशेष रूप से शिक्षा में, विभिन्न विषयों में कला/चित्रभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालती है। हर विषय चाहे वह गणित है या विज्ञान, मनोविज्ञान सामाजिक शास्त्र, अंग्रेजी या हिंदी, सभी विषयों में बच्चों को पढ़ाते हुए यदि चित्रभाषा या किसी भी अन्य सृजनात्मक एवं कलात्मक गतिविधि कला का समावेश किया जाए तो बच्चों के लिए शिक्षा ग्रहण करना सहज हो जाता है आकर्षक बन जाता है उन्हें विषय आसानी से समझ आता है। छात्रों के मन पर पड़े बोझ को कला कम करती है छात्रों के रटने की प्रवृत्ति को रोकती है। कला को सभी विषयों में जोड़ने से वह उन्हें सुंदर, आकर्षक, मनोहारी बनाती है। चित्रभाषा छात्रों की मनोवृत्तियों को प्रभावित करती है उनकी संवेदनाओं से जुड़ी है।'शिक्षा सारथी' की ओर से लेखिका को हार्दिक बधाई।

-शिक्षा सारथी डेस्क

प्यारे बच्चो!

गत वर्ष पूरे विश्व ने कोरोना त्रासदी को झेला है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। अचानक हम सबको पता चला कि स्कूल बंद हो रहे हैं। हमें घरों में कैद होने के लिए कह दिया गया। अपने अध्यापकों से, सहपाठियों से हमारा मेलजोल नहीं हो पाया।

लेकिन अब विद्यालय खुल रहे हैं, स्थितियाँ धीरे-धीरे सामान्य हो रही हैं, लेकिन अभी भी अपने अध्यापकों द्वारा दिये गये निर्देशों का आपको गंभीरता से पालन करना है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूंगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

पहेलियाँ

1.जंगल में हो या पिंजरे में,
रौब सदा दिखलाता,
मांसाहारी भोजन जिसका,
वनराज कहलाता।

2.गोल-गोल हैं जिसकी आँखें,
भाता नहीं उजाला,
दिन में सोता रहता हरदम
रात विचरने वाला।

3.हमने देखा अजब अचंभा,
पैर हैं जैसे कोई खंभा,
थुलथुल काया, बड़े हैं कान,
सूंड इसकी होती पहचान।

4.सरस्वती की सफेद सवारी,,
मोती जिनको भाते,
करते अलग दूध से पानी
बोलो कौन कहाते।

5.कान बड़े हैं काया छोटी,
कोमल-कोमल बाल,
चौकस इतना पकड़ सके न,
बड़ी तेज़ है चाल।

उत्तर- 1.शेर 2.उल्लू 3.हाथी 4.हंस 5.खरगोश

दीनदयाल शर्मा

सामान्य ज्ञान

प्रश्न-1. तिरंगे के तीन रंग किस चीज के प्रतीक होते हैं?
उत्तर- केसरिया- त्याग और बलिदान का, सफेद- शांति का, हरा हरियाली का
प्रश्न-2. भाखड़ा नंगल बाँध किस राज्य में है?
उत्तर- पंजाब में
प्रश्न- 3. मिसाइल मैन के नाम से कौन जाने जाते हैं?
उत्तर- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम
प्रश्न- 4. आजाद हिंद फौज के संस्थापक कौन थे?
उत्तर- नेताजी सुभाष चंद्र बोस
प्रश्न- 5. आजाद हिंद फौज की स्थापना कहाँ हुई थी?
उत्तर- सिंगापुर में
प्रश्न- 6. जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का स्थान कौन सा है?
उत्तर- दूसरा
प्रश्न- 7. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई थी?
उत्तर- 1945 में
प्रश्न- 8. महाभारत किसने लिखी थी?
उत्तर- वेद व्यास ने
प्रश्न- 9. भगवान बुद्ध के बचपन का नाम क्या था?
उत्तर- सिद्धार्थ
प्रश्न- 10. माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला कौन थी?
उत्तर- बछेंद्री पाल

आश्चर्यजनक परंतु सत्य

- रुकी हुई घड़ी भी दिन में दो बार सही समय दिखलाती है।
- हँसने से 50 प्रतिशत तक मानसिक दवाब कम होता है।
- 'TYPEWRITER' सबसे लम्बा शब्द है जो की-बोर्ड पर एक ही लाइन पर टाइप होता है।
- सुअरों के लिए आकाश की तरफ देखना असंभव है।
- औसत एचबी पेंसिल 35 मील लम्बी लकीर खींच सकती है और 50,000 शब्द लिख सकती है।

कबड्डी

खेल कबड्डी सुनकर,
सारे बच्चे खुश हो जाते हैं।
हम भी खेलेंगे खेलेंगे,
कहते हमसे जाते हैं।।
खेल कबड्डी....

न्यारा कैसा खेल कबड्डी,
सब मिल धूम मचाते हैं।
असलम राघव डेविड लक्खा,
सब मिल टीम बनाते हैं।।
खेल कबड्डी....

सात- सात के दो दल बनते,
पाला बीच बनाते हैं।
बीस- बीस मिनटों की पाली,
रेड- डिफेंड कर जाते हैं।
खेल कबड्डी....

छल कबड्डी, छल कबड्डी,
कहते सब खो से जाते हैं।
इसको मारा देखो पकड़ा,
बात यही बतलाते हैं।।
खेल कबड्डी....

भारत का है खेल कबड्डी
जन प्रिय हो समझाते हैं।
विश्व में नाम कबड्डी हो,
हम ऐसे स्वप्न सजाते हैं।।
खेल कबड्डी....

नवनीत कुमार शुक्ल
सहायक अध्यापक,प्राथमिक विद्यालय
भैरवां द्वितीय
शिक्षा क्षेत्र- हसवा
जनपद- फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

मन को रंग लो

तितली सोच रही है मन में।
पड़ी हुई है वह उलझन में।
सोच समझ भौंरे से बोली।
कैसे खेलूँ तुमसे होली।

हाथ नहीं रँगने को बढ़ता।
कोई रंग न तुम पर चढ़ता।
कैसे रंग अबीर लगाऊँ।
यही सोच कर सूखी जाऊँ।

सुनो, सुनो ओ तितली रानी।
मेरी भी सुन लो हैरानी।
कैसे तुमसे खेलूँ होली।
पहले से तुम रँगी रँगीली।

पंख तुम्हारे रंग-रँगीले।
नीले, पीले और सजीले।
दूर नहीं तुम मुझसे भगना।
रँगे रँगाये को क्या रँगना।

बात सुनो ओ तितली प्यारी।
छोड़ो रंग और पिचकारी।
रंग कैमिकल मिलकर आते।
हानि बहुत तन को पहुँचाते।

फूलों का रस पी इतराएँ।
आओ हम तुम झूमें गाएँ।
मैं नाचूँगी तितली बोली।
मन को रंग लो, हो गई होली।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता
हिन्दी
अशोक उमा विद्यालय,
लहार
जिला-भिंड (मप्र)

भूमि पर गिरी चीजें उठाकर मत खायें

खाते समय कई बार हमारे हाथों से महँगी दवाई या महँगे काजू बादाम अखरोट फर्श पर गिर जाते हैं, हम उसे बेझिझक उठा कर खा लेते है जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत बुरा होता है। खुली खिड़कियों से, हमारे जूतों से, या खुले दरवाजों से धूल मिट्टी हमारे घर में प्रवेश करती है। ये धूल मिट्टी कीटाणुओं से युक्त होती हैं। ये हमारे घर के फर्श को दूषित करती है। जब खाद्य वस्तु फर्श पर गिरती है तो ये भी दूषित हो जाती है। परंतु अक्सर लोग ये सोचते हैं कि यदि झट से गिरी खाद्य वस्तु को उठा लिया जाए तो ये दूषित होने से बच जाती है, पर विज्ञान का शोध इसे गलत बताता है। एक शोध में ये पाया गया कि जैसे ही खाने की वस्तु फर्श पर गिरती है तो वह 5 सेकंड में ही दूषित हो जाती है। शोधकर्ता ने पहले फर्श को ई. कोलाई नामक बैक्टीरिया से दूषित किया फिर उस पर भोजन गिरा कर जाँच की तो ये पाया कि भोजन 5 सेकंड में ही दूषित हो गया। ये खाना यदि कोई व्यक्ति खा ले तो वो बीमार हो सकता है। इसलिए हमें नीचे गिर गए भोजन का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए चाहे वो जितना भी महँगा हो।

सुनील अरोरा
पीजीटी (रसायन विज्ञान)
राजकीय उच्च विद्यालय समलेहरी
पंचकूला, हरियाणा

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित परियोजना-

पैनों का हस्पताल

दर्शन लाल बवेजा

यहाँ राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैम्प यमुनानगर में लागू एक ऐसी परियोजना का वर्णन किया जाएगा। जिसे अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के सहयोग से इसे सभी विद्यालयों में लागू किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों को लाभ होगा व पर्यावरण संरक्षण भी होगा। इस परियोजना से विद्यार्थियों में यह समझ भी बढ़ेगी कि हमारे एक छोटे से प्रयास से किस प्रकार हम अपने पैसे बचा सकते हैं और प्लास्टिक प्रदूषण से धरती को राहत भी दे सकते हैं।

प्रोजेक्ट पैन बैंक

बात उस दिन से शुरू करते हैं जब एक छात्र के पैर से खून निकल रहा था। उसे बहुत दर्द भी हो रहा था। बहुत से बच्चे उसे घेर कर खड़े थे और शोर मचा रहे थे कि इसके पैर में चोट लग गई। उस छात्र से पूछने पर पता लगा कि उसके पैर में कुछ चुभ गया जो कि उसके पीटी शूज को फाड़ते हुए अंदर गया। तब जाँचने पर पता लगा कि वह एक टूटा हुआ पैन था। जो नोकदार था और भागते हुए उस बालक के पैर में चुभ गया था। फर्स्टएड से बच्चे को राहत देकर फिर उसका उपचार कराया गया। अब बच्चों को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि ग्राउंड में जितने भी पुराने पैन बिखरे पड़े है उन्हें खोज कर चुना जाए। उनको एक लिफाफे में एकत्र किया जाए। थोड़ी ही देर में बहुत से पैन एकत्र हो गए। ज्यादातर पैन प्लास्टिक के यूज एंड थ्रो प्रकार के थे। कुछ पैन टूट-फूट चुके थे, कुछ मिट्टी के सने थे। इन पैनों मे से कुछेक एकदम नए दिखने वाले थे। बस उनका रिफिल बदल देने से वह प्रयोग में लाने लायक हो जाते।

यहीं से प्रोजेक्ट पैन बैंक-पैनों का हस्पताल के विचार की शुरुआत हुई। बच्चों से विचार को साझा करके तय हुआ कि हम सब अब बेकार हुए पैनों को यहाँ वहाँ नही फेकेंगे। इन वेस्ट पैनो को एकत्रित करेंगे। इस परियोजना के लिए लकड़ी के ढक्कनदार कुंडे-ताले वाले तीन बक्से बनवाये गए। इन बक्सों को दीवार पर भी लटकाया सकता है और किसी मेज पर भी रखा जा सकता है। पेंटर से इन तीनों बक्सों पर निम्न पंक्तियाँ लिखवाई गईं-

1. **अप्रयुक्त पैन इस बॉक्स में डालें।**
2. **नापसन्द पैन इस बॉक्स में डालें।**
3. **खाली हो चुका पैन इस बॉक्स में डालें।**

इस प्रकार हमारे पास तीन प्रकार के पैन तीन अलग अलग बॉक्स में एकत्र हो जाते हैं। पहले बॉक्स में वे पैन आये जिनको प्रयोग करते समय उस पैन का कोई पार्ट टूट चुका हो, परन्तु वह चालू हालत में हो। इस प्रकार प्राप्त स्क्रेप को हमने अन्य पैनों को रिपेयर करते हुए स्पेयर पार्ट्स के रूप में प्रयोग किया। जो स्क्रेप बच गयी उसे अन्य प्लास्टिक स्क्रेप के साथ कबाड़ी को बेच दिया गया।

दूसरे बॉक्स में भी बहुत से चालू हालत वाले वे पैन मिले जो किसी बच्चे ने खरीद तो लिया परन्तु उसे वह

पसंद नही था। इस बॉक्स में कुछ एकदम नए पैन भी मिले जो शायद किसी विद्यार्थी या अध्यापक ने गुप्तदान तौर पर बॉक्स में डाले होंगे। तीसरे बॉक्स में बहुत अधिक संख्या में सस्ते-महँगे प्रकार के वे पैन मिले जिनके रिफिल्स (इंक कार्टेज) खाली हो चुके थे। विद्यार्थियों द्वारा इसी प्रकार के सभी पैन, पैन बैंक की स्थापना से पूर्व अपने कक्षा कक्ष में या इधर उधर फेंक दिए जाते थे।

आजकल पैन कम्पनियाँ एकल इस्तेमाल (सिंगल यूज़) पैन अधिक बनाती हैं। पैन में रिफिल्स बदलने का तो रिवाज उत्पादकों व उपभोक्ताओं दोनों के द्वारा त्याग दिया गया है। जबकि कुछ वर्षों पूर्व तक पैन के साथ मुफ्त रिफिल्स के सेट भी आया करते थे। एक बार पैन खरीद कर उसके टूटने तक उसका रिफिल बदला करते थे। आजकल अगर हम 5 रुपये वाले पैन का रिफिल बदलें तो हमे प्रत्येक 5 रुपयों में से 3 रुपयों की बचत होगी। इसी गणना को आधार बनाते हुए हमने स्टेशनरी की थोक दुकान से 1200 रुपयों में 9 प्रकार के 750 बालपोइन्ट व जेल पैनो के नए रिफिल्स खरीदे। दुकानदार भी खुश हुआ कि आपने इतने सारे रिफिल्स ख़रीदे। विक्रेता ने हैरानी पूर्वक यह कहा कि अब तो कोई भी पैन खरीदते समय अतिरिक्त रिफिल्स की माँग ही नहीं करता। स्टूडेंट्स जो पैनों के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं, अगर वो दुकानदार से वही पैन खरीदे जिसके अतिरिक्त रिफिल्स उपलब्ध हों तो मजबूर होकर उत्पादकों को ऐसे पैन बनाने होंगे जिनको रिफिल्ड किया जा सके।

अब समय था पैनों के हस्पताल में इलाज शुरु करने का। पहले दौर में 178 पैन रिपेयर व रिफिल्ड किये गए। प्रत्येक कक्षा के मोनिटर को 5-5 पैन दिए गए कि अगर किसी विद्यार्थी के पास पैन न हो तो वह उसको दे दे। विद्यार्थी के जन्मदिन पर भी इन्हीं पैनों में से एक पैन उसे उपहार दे दे। यदि किसी अध्यापक को आवश्यकता है तो उन्हें भी एक पैन दे दें।

विद्यार्थी इस परियोजना में रुचि लेने लगे। उन्हें आभास हो गया था कि इस प्रकार रिफिल को बदल कर तो उन्हें बहुत लाभ हो सकता है, क्योंकि उनका एक पैन 3 या 4 दिन तक ही चलता है। महीने में 5 पैनों की औसत खरीद 25 रुपयों के खर्च पर अब वह 12 रुपयों की बचत कर सकते हैं। अब दुकानदारों को भी अतिरिक्त रिफिल्स रखने पड़े।

अप्रत्यक्ष लाभ में पर्यावरणीय संरक्षण के तहत पहले जो पैन यहाँ वहाँ बिखरे पड़े होते थे अब यदा कदा ही नजर आते हैं। यदि फिर भी कोई पैन पड़ा मिल जाये तो कोई न कोई विद्यार्थी उसे साफ करके उचित बॉक्स के सुपुर्द कर ही देता है।

प्रदूषण निवारण की ये एक पहल सच मे विचारणीय लगी। छात्र-छात्राओं में मितव्ययता व संसाधनों का उचित प्रयोग करने की सोच विकसित हुई। जरूरतमंदों की सहायता व उपहारस्वरूप विद्यालय से पैन मिलने की खुशी मिली। पैन बैंक का मैनेजर कक्षा 12 के छात्र आनंद को बनाया गया था, जिसे अब छात्र विकास सैनी अपनी टीम सनिश, खुशवंत व अमन, खुशबू व ज्योति के साथ सम्भाल रहे हैं। अध्यापक के रूप में मार्गदर्शन मेरा खुद का रहेगा।

छात्रा खुशी, मेहर, अनुष्का, दिव्या, अनुष्का, यश, अरुण, सौरव, यशोदा व विशाल ने इन बक्सों को प्रत्येक कक्षा में घुमाया व विद्यार्थियों को उचित बॉक्स में उचित पैन ड्रॉप करने की अपील सभी से की।

इस परियोजना को शुरू करने का वित्तीय वहन विद्यालय निधियों, इको क्लब/साइंस क्लब अनुदान, अध्यापकों द्वारा सहयोग राशि, दानकर्ताओं के सहयोग किया जा सकता है। विद्यालयों में यह परियोजना बहुत कम लागत में छात्रों द्वारा ही अर्थशास्त्र विषय के परियोजना कार्य के अंतर्गत सहकारी समितियों, स्टार्टअप या अन्य थीम पर शुरू की जा सकती है। इस परियोजना में वो रीपेयर्ड व रिफिल्ड पैनों को नए से आधे मूल्य पर अन्य विद्यार्थियों, अध्यापकों व दुकानदारों को भी बेच सकते हैं। इस परियोजना से विद्यार्थियों में व्यवसाय, उद्यमता, सहकारिता, मरम्मत, पुनः प्रयोग, मितव्ययता, पर्यावरणीय चेतना व सहयोग की भावना का विकास होगा। बड़े स्कूलों में तो स्कूल कैंटीन से इन्हीं पैनों की खरीद को अनिवार्य किया जा सकता है।

कुल मिलाकर हमारे विद्यालय में इस परियोजना बारे विद्यार्थियों में बहुत उत्साह है। विद्यार्थी व अध्यापक अपने या अपने प्रियजन के जन्मदिवस अवसर पर कुछ नए पैन भी इन बॉक्स में डालते हैं, ताकि उनका जरूरत पर उचित प्रयोग हो सके।

इसी प्रकार की एक पेपर बैंक परियोजना भी अन्य विद्यार्थियों द्वारा स्वयं के बल पर चलाई जा रही है जिसका जिक्र अगले अंकों में करेंगे। मेरा सभी अध्यापक साथियों से अनुरोध है कि वे भी अपने नवाचारों से इस परियोजना का मूल्य संवर्धन करते हुए इसे अपने विद्यालयों में लागू करें।

साइंस मास्टर, सह विज्ञान संचारक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर, हरियाणा

पैनो की मरम्मत का समय-

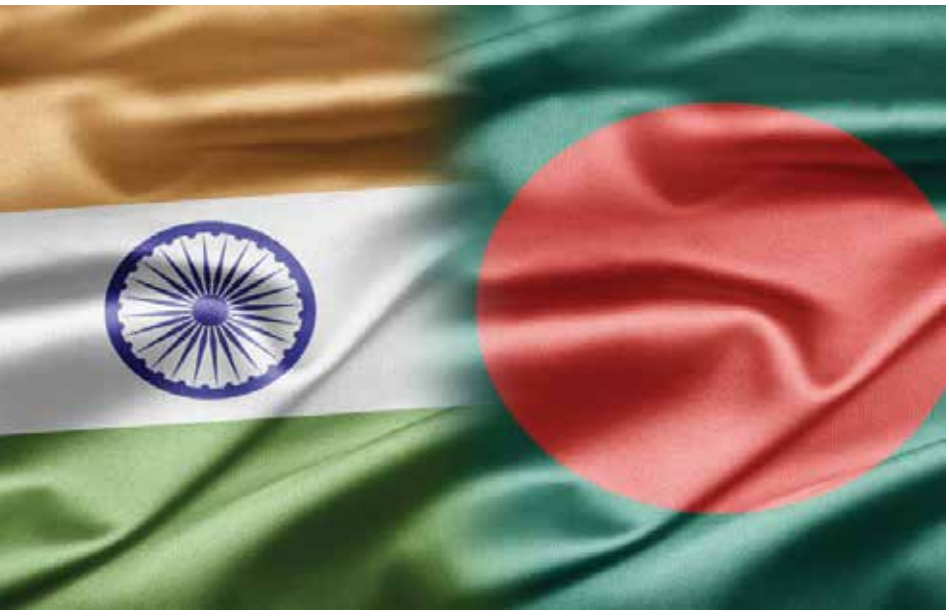

उनकी आज़ादी में कम नहीं भारत का योगदान

डॉ. योगेश वासिष्ठ

हमारे पड़ौसी देश बांग्लादेश के लिए मार्च मास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस मास की 26 तारीख को इस देश की स्वाधीनता के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। जब मुझे वहाँ दो से अधिक वर्ष रहने का सुअवसर मिला तो यह तथ्य मालूम हुआ कि यह देश 16 दिसम्बर को विजय दिवस के रूप में मनाता है और 26 मार्च को स्वाधीनता दिवस। इसके स्वाधीनता दिवस का मैंने जो रहस्य जाना, उसे आपके साथ साझा करता हूँ।

जब भारत अंग्रेजों से आज़ाद हुआ तो हम सब जानते हैं कि इस देश के दो टुकड़े हुए- भारत व पाकिस्तान। पाकिस्तान भारत के पश्चिम में भी था, आज ही की तरह, जो पश्चिमी पाकिस्तान कहलाता था और पूर्व में भी था, जो पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था। इन दोनों भागों की जनता का धर्म इस्लाम था, जिसके आधार पर इसका विभाजन हुआ किन्तु इनके बीच की दूरी लगभग 1600 किलोमीटर थी। यह मात्र भौगोलिक दूरी नहीं थी अपितु इससे भी अधिक सांस्कृतिक दूरी थी। अतः जब पाकिस्तान की आज़ादी के बाद इसकी भाषा उर्दू घोषित की गई तो पूर्वी पाकिस्तान में इसका यह कहकर विरोध हुआ कि हम तो बंगाली हैं और बंगाली ही हमारी भाषा है। हम पर कोई भाषा जबरन लादी नहीं जा सकती। इस कड़ी में 21 फरवरी 1952 को बंगालियों (पूर्वी पाकिस्तानियों) ने विरोध प्रदर्शन भी किया, जिसमें अनेक बंगाली शहीद हो गए। अपनी भाषा के प्रति शहादत के इसी महत्त्वपूर्ण दिवस को यूनेस्को द्वारा 1999 में अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया गया। बांग्लादेश में इस दिवस के अवसर पर शहीद मीनार पर प्रतिवर्ष श्रद्धांजलि कार्यक्रम सहित विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के लिए मातृभाषा में अभिव्यक्तिपरक आयोजन किए जाते हैं।

पूर्वी पाकिस्तान के साथ इसी भाषा विवाद के कारण अनवरत भेदभाव होता रहा। इसके वित्तीय व अन्य सरकारी सेवाओं में कटौती होती रही। साथ ही पूर्वी भाग हमेशा राजनीतिक रूप से उपेक्षित रहा और कभी उचित प्रतिनिधित्व नहीं पा सका। यहाँ तक कि 1970 के चुनाव में शेख मुजीब की पार्टी अवामी लीग के इधर लगभग सभी सीटों पर विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त बहुमत में होने के बावजूद उन्हें पाकिस्तान का प्रधानमंत्री न बनाकर जेल में डाल दिया गया। इसी प्रकरण से पाकिस्तान के विभाजन की नींव पड़ी और 7 मार्च 1971 को शेख मुजीब ने ढाका में ऐतिहासिक भाषण देकर बांग्लादेश की आज़ादी का बिगुल बजाया, 'इस बार का संघर्ष हमारी मुक्ति के लिए है। इस बार का संघर्ष आज़ादी के लिए है।' आन्दोलनकारी इसके समर्थन में सड़कों पर उतर आए। 25 मार्च को शेख मुजीब को नज़रबंद कर दिया गया। इसी दिन सेना व पुलिस के द्वारा ढाका में नरसंहार होने पर इस भाग के पाकिस्तानी सैनिकों में जबर्दस्त रोष उत्पन्न हुआ। ऐसे में उन सैनिकों ने अपनी अलग मुक्तिवाहिनी बना ली। उसी रात (26 मार्च) बांग्लादेश की स्वाधीनता की घोषणा कर दी गई। पाकिस्तानी सेना के ऑपरेशन सर्चलाइट के जवाब में अपनी आज़ादी की रक्षा के लिए वहाँ की सेना ने बगावत कर लड़ाई जारी रखी तो इस नरसंहार के बीच वहाँ अर्द्धसैनिक बलों सहित सभी वर्गों ने भी इस मुक्तियुद्ध में भागीदारी की। यह समस्त गाथा बांग्लादेशियों के लिए गर्व और दर्द की, बहादुरी और बलिदान की, रक्त और आँसुओं की ऐसी कहानी है, जिसका स्मरण कर उस देशवासियों के मन में आज भी रोमांच व सिहरन उत्पन्न होती है। उस वक्त हथियारविहीन व निरपराधी आमजन इस अत्याचार के फलस्वरूप पलायन को भी विवश हुआ। लगभग एक करोड़ शरणार्थियों ने भारत में शरण ली। भारत ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस स्थिति को सब देशों के सामने रखा। कुछ राजनेताओं ने मिलकर 1757 के प्रसिद्ध प्लासी के युद्धक्षेत्र के पास 17 अप्रैल 1971 को आम के मैदान में शपथ ली और अत्पकालीन सरकार का गठन किया। इसमें शेख मुजीब को राष्ट्रपति और ताजुद्दीन अहमद को प्रधानमंत्री चुन लिया गया। कोलकाता की 8 थियेटर रोड़ (अब शक्सपियर सरणि) में बांग्लादेश सरकार का दफ्तर स्थापित किया गया। कुछ देशों ने बांग्लादेश को मान्यता भी प्रदान कर दी। इस कड़ी में 6 दिसम्बर 1971 को भारत ने भी पड़ौसी देश बांग्लादेश को अलग राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया और मित्रवाहिनी के रूप में मुक्तिवाहिनी का साथ देते हुए 16 दिसम्बर की ऐतिहासिक तिथि को 90 हजार से अधिक पाकिस्तानी सैनिकों को घुटने टेकने के लिए विवश कर दिया।

मेरी बांग्लादेशी छात्रा मुशफीका बेगम लिखती है, 'हम बहुत भाग्यशाली अनुभव करते हैं कि हमारी आज़ादी की लड़ाई में, हमारे उस कठिन समय में भारत जैसा मित्र हमारे साथ दृढ़ता से खड़ा था। जिनका समस्त योगदान अविस्मरणीय है। इस लड़ाई में जिन भारतीय शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी, उन्हें हम हमेशा श्रद्धा से याद रखेंगे। जिस तरह से उन्होंने हमारी मदद के लिए हाथ बढ़ाए, विश्व के इतिहास में वह अद्वितीय है।'

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.धर्मवीर भारती जो उस वक्त धर्मयुग के सम्पादक थे, इस संग्राम के दौरान अनेक स्थलों पर स्वयं जाकर इसका आँखों देखा वर्णन धर्मयुग के विविध अंकों में कर रहे थे। जिस कारण भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। वे बांग्लादेश की आज़ादी प्राप्ति के बाद विष्णुकान्त शास्त्री के साथ

वहाँ की प्रसिद्ध साहित्यकार सूफिया कमाल से मिलने गए तो सूफिया कमाल ने इन्दिरा गाँधी के सम्मान में बांग्लादेशियों के भावों की अभिव्यक्ति करती एक कविता सुनाई। जिसके शब्द याद न होने पर भी भावों का स्मरण कर डॉ.भारती लिखते हैं, 'ओ बेटी! तुम हृदय से माता हो, तुमसे दूसरे का दुःख देखा नहीं जाता। अर्द्धरात्रि में खूँखार नर पशु घोंसलों में आग लगाने आए। सोए विहग शिशुओं की गर्दन मरोड़ने लगे, तब हे पक्षी माता! तुम आकाश से उतरकर उन पर झपट पड़ीं। तुमने अपने विशाल डैने फैलाकर उनके शिशुओं को छिपा लिया, उन्हें आश्रय दिया, दाना-पानी दिया और हत्यारों को भगाकर प्राणिमात्र को अभय प्रदान किया और उन्हें फिर पंख देकर उड़ने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया। तुम जैसा और कौन होगा, हे पक्षी माता।' उस समय इन्दिरा जी को अनेक अभिनन्दनात्मक संज्ञाएँ मिलीं, पर उस सारे शोर शराबे में सूफिया कमाल द्वारा कहे गए अनूठे काव्य शब्द 'पक्षी माता' न केवल उनकी उस ऐतिहासिक भूमिका की अभिव्यक्ति करते हैं बल्कि डॉ.भारती लिखते हैं कि वे काँपते बूढ़े स्वर उनके मन में गूँजते हैं।

प्रसिद्ध बांग्ला कवि काज़ी नजरुल इस्लाम का गीत 'चोल चोल चोल' सभी देशवासियों के मन में मुक्तियुद्ध के दौरान राष्ट्ररक्षा का जोश भर रहा था। जिन्हें बाद में बांग्लादेशी नागरिकता प्रदान कर वहाँ का राष्ट्रकवि घोषित किया गया। माना जाता है कि लगभग 30 लाख बांग्लादेशी इन नौ महीनों के दौरान शहीद हो गए और अगणित स्त्रियाँ बलात्कार का शिकार हुईं। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह शहादत व बलिदान देश की आजादी प्राप्त करने के लिए नहीं अपितु देश की आज़ादी की रक्षा के लिए हुआ। इस तरह बांग्लादेश ने भारतीय सहयोग से पाकिस्तानी सेना पर विजय अवश्य 16 दिसम्बर को प्राप्त की किन्तु आज़ादी तो स्वतः घोषित तिथि 26 मार्च को ही पा ली थी। इस तरह के स्वाधीनता दिवस का अनोखा उदाहरण बांग्लादेश का ही नहीं है अपितु अमेरिका भी इसी प्रकार स्वतन्त्रता की स्वघोषित तिथि 4 जुलाई को अपनी आज़ादी का पर्व मनाता है।

शेख मुजीब जो बांग्लादेश के प्रथम राष्ट्रपति बने, उन्हें देश का राष्ट्रपिता होने का गौरव भी प्राप्त हुआ। इनका जन्म मार्च मास की ही 17 तारीख को हुआ था। इस कारण मार्च मास का महत्त्व बांग्लादेश के लिए और बढ़ जाता है। संयोग से यह वर्ष जहाँ इस देश की आजादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है, वहीं शेख मुजीब का जन्म शताब्दी वर्ष भी। भारत सतत रूप से बांग्लादेश का मित्र देश रहा है। हमारे आपसी सौहार्द की अनेक मिसालें हैं। बांग्लादेश की आज़ादी के स्वर्ण जयन्ती व उनके राष्ट्रपिता के जन्म शताब्दी वर्ष के इस ऐतिहासिक अवसर पर सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की ओर से हार्दिक बधाई।

अध्यापक शिक्षा विभाग
एससीईआरटी, हरियाणा, गुरुग्राम

प्रश्न बैंक

प्यारे बच्चो! 8 मार्च 2021 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया है। इस प्रश्नमाला में महिलाओं से संबंधित प्रश्न हैं। सभी बच्चे ध्यानपूर्वक प्रश्नों के उत्तर देंगे एवं अपना मूल्याकंन स्वयं करेंगे। ये प्रश्न परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करनें में भी सहायक होंगे-

प्र.1 प्रति वर्ष अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस किस दिन मनाया जाता है?
क. 5 मार्च ख. 6 मार्च ग. 7 मार्च घ. 8 मार्च

प्र.2 संयुक्त राष्ट्र संघ ने अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरूआत कब की ?
क. 1975 ख.1978 ग. 1982 घ. 1908

प्र.3 स्वतंत्र भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री कौन थी?
क. सरोजिनी नायडू ख. इन्दिरा गांधी
ग. ताराबाई सिंधे घ. सुषमा स्वराज

प्र.4 भारत में महिलाओं की साक्षरता दर कितने प्रतिशत है?
क. 64. 46 ख. 68. 82 ग. 74. 04 घ. 82.14

प्र.5 संसार की पहली दृष्टिबाधित दिव्यांग महिला जो माऊंट एवरेस्ट चर चढ़ी?
क. गगन दीप संधु ख. मांडवी गर्ग
ग. सुधा चन्द्रन घ. अरुणिमा सिन्हा

प्र.6 भारत की प्रथम महिला शासक कौन थी?
क. रजिया सुल्तान ख. हजरत बेगम
ग. तारा चेरिपन घ. जयंती पटनायक

प्र.7 नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली की संसार की पहली महिला कौन थी?
क. युशूफ मलाला ख. मदर टेरेसा
ग. आशा पूर्णसिंह घ. इंदिरा गांधी

प्र.8 भारत कोकिला के नाम से किस कवयित्री को जाना जाता है?
क. सरोजिनी नायडू ख. सीमा चित्रा
ग. लता मंगेशकर घ. अनुराधा पोडवाल

प्र.9 प्रथम बार ओलंपिक में किस भारतीय महिला ने पदक जीता?
क. कर्णम मल्लेश्वरी ख. साक्षी मलिक
ग. पीटी उषा घ. गीता फोगाट

उत्तर : 1.घ 2.क 3.ख 4.क 5.ख 6.क 7.ख 8.क 9.क

- हर्ष कुमार 'गुरु जी'
प्राध्यापक समाज शास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर, रेवाड़ी

2021

मार्च माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

3 मार्च-	विश्व श्रवण दिवस
4 मार्च-	राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
8 मार्च-	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
11 मार्च-	शिवरात्रि
15 मार्च-	विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस
22 मार्च-	विश्व जल दिवस
20 मार्च-	विश्व गौरेया दिवस
23 मार्च-	भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का शहीदी दिवस
24 मार्च-	विश्व क्षय रोग दिवस
29 मार्च-	होली

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Is it necessary to rein in social media platforms?

Dr. Satyavan Saurabh

Social media plays an important role in subjects like communication, collaboration and education. As a result social media platforms ensure the participation of public and government officials consider it important. Today we need to understand the responsibility of keeping social media safe and protected so that it works as a progressive tool for society. With increasing users on these platforms, there is a growing technology and a growing tendency for misuse. The social media environment is creating many threats that demand an immediate solution.

Social media is different from traditional media in that it has a wide reach. Negotiation and instant information exchange is generally free and lacks any entry barriers. Today the social network is one of the fastest-growing industries in the world with an estimated 34% annualized. In almost two decades, social media has become a completely entertaining tool. In almost every aspect of our daily life such as dialogue, interaction, and sociality, it has made a huge impact on the social fabric of our society and the nature of social relationships.

In the modern digital world, social media has given voice to people. Social media is cultivating global collaboration and facilitating a better world. Nevertheless, we need to understand how social media has brought different sections of society to profit or loss over the years. Should social media be regulated? What are the challenges related to social media regulation? And how can we make social media useful and purposeful for a more responsible emerging digital age?

Based on the real facts that social media has accepted, social media platforms must bear responsibility. But despite having an internal mechanism to deal with illegal and inappropriate content, social media companies have failed to ensure that social media remains a safe place and is not misused. The social media platform calls for its

control in the interests of users and the overall social media space. There is growing concern that these platforms contribute to the social polarization that creates 'hyper-privatization bias' or eco-chambers. Like people opposing ideas about current events. Sharing information on social media makes it very difficult to protect privacy, especially for children and adolescents who do not know how to protect it. Their personal information on the web has resulted in unethical and undesirable behavior, which has increased morale and privacy concerns for them.

Democratic institutions that protect free speech and other fundamental rights, but Twitter handlers regularly indicate to follow those who hold a similar view. This affects not only voter behavior but also everyday personal interactions. Where people are falling prey to online scams through social media, they are subject to online molestation, cyber bullying, provocative or offensive posts violating human rights, content and trolling, to tarnish the dignity of a person for political and personal purposes For online abuse and defamation users are being denied rights over their meta-data. Their data is being collected or used with little clear knowledge or consent.

Social media platforms should be regulated due to the effects of social media on human behavior and social functioning. The adverse effect of social media on mental health has been linked to psychological issues. The cases of apathy, anxiety, severe isolation, Internet addiction, cyber bullying and online shaming are increasing day by day. The blue whale is linked to suicide in children through games. Research has shown that the use of social media is different from face to face interaction which has led to a change in human behavior.

Due to social media, false news, fake news, rumor, hate speech, etc. have spread in the society, which is going viral every second through platforms like WhatsApp, Facebook, Twitter. Social media is a widely used institution and is a boon and a curse at the same time. Freedom of expression on social media is an integral part of a healthy, thriving democracy. But the above-mentioned problems are a hindrance in enabling and trusting social media. To ensure the use of social media in the right way, right approach, the right purpose, and right way, we have to make new rules.

The proliferation of these platform missteps can be prevented by taking steps for content moderation. It would also be beneficial to implement measures that limit the diversity of misleading content. Give users the option to decide what information they want to see and how to target them. Building society capacity for better use of social media by redefining the role of government, encouraging social media companies to define and periodically update content standards and enforcement guidelines, clearly illegal content making social media platforms accountable can be clean and useful. It can be made useful by involving everyone and promoting participation and digital literacy and awareness.

Freelance Journalist
Bhiwani, Haryana

You deserve good...

Dr. Himanshu Garg

Our personal power lies in the way we perceive our deservability. When we don't believe that we deserve good, we will knock the pinnings out from under ourselves, which we can do in a variety of ways. We can create chaos; hurt ourselves, lose things, and have accidents or physical problems. We have to start believing that we deserve all the good that life has to offer.

Once a frustrated man asked to God, "God, Why did You let so much stuff happen to me today?" God listened to his voice and started replying. God asked "What do you mean?" The Man told God that today, I woke up late. My car took forever to start and at lunch they made my sandwich wrong and I had to wait. On the way home, my phone went DEAD, just as I picked up a call. And on top of it all off, when I got home, I just wanted to soak my feet in my new foot massager and relax. BUT it wouldn't work!!! Nothing went right today! Why did You do that? God waited for some time. After seeing his past events, He replied that the death angel was at your bed this morning and I had to send one of My Angels to battle him for your life. I let you sleep through that. I didn't let your car start because there was a drunk driver on your route that would have hit you if you were on the road. The first person who made your sandwich today was sick and I didn't want you to catch what they have, I knew you couldn't afford to miss work. Your phone went dead because the person that was calling was going to give false witness about what you said on that call, I didn't even let you talk to them so you would be covered. Then God justified about the foot massager, it had a shortage that was going to throw out all of the power in your house tonight. I didn't think you wanted to be in the dark. The Man was embarrassed and felt ashamed. He said sorry to God. God replied, "Don't be sorry, just learn to Trust Me in All situations- good or bad and don't doubt that My plan for your day is always Better than your plan. Clean your mind and store good thoughts of daily routine rather bad experiences. Your deservability depends on you only. These bad experiences faded your good experiences of today's routine. You met with your childhood friend today after 15 years. You find an important file in your office today; you have been searching for that file for a month and many more.

So our thinking is the most powerful attributes that makes us realize how powerful we are. When we really want to hold something, it serves us in some way. Sometimes we are not ready to let the problems go from our life by thinking again and again about the problems that happened. If we still have a habit that we haven't released, try to start with some of these good thoughts-

"I am deserving... "
"I am worthwhile... "
"I love myself... "

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind

Compendium of Academic Courses After +2

SIDDHA

Introduction

Siddha is one of oldest Indian systems of medicine which has its roots in south India and is popular worldwide. Therapeutic in nature, the system works on the belief that human body is made of five basic elements namely, earth, water, fire, air and sky and the treatment deals with balancing these elements for healthy and disease free life . The Central Council of Indian Medicine controls the education of Siddha system in the country.

Courses

1. Siddha Courses

2. Bachelor of Siddha Medicine & Sciences – BSMS
3. MD - Siddha Medicine

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry and Biology/Botany

Institutes/Universities

1. The Tamil Nadu Dr. M.G.R. Medical University, Channai
2. Government Siddha Medical College, Arumbakkam, Chennai
3. Government Siddha Medical College, Tirunelveli, Tamilnadu
4. Sri Sai Ram Siddha Medical College, Sriperumputhur, Tamil Nadu
5. Kerala University of Health Sciences, Thrissur, Kerala

UNANI

Introduction

Unani means Greece where the Unani System of Medicine originated. BOKHRATH (Hippocrates) founded it in 460 BC approximately and is called as Father of Unani Medicine. Unani medicine works on the basis of 'humoral theory' (relating to four bodily fluids) where each humour denotes a precise disposition in a human being. In Unani medicine, the plants, minerals and animal products are used for healing purposes and for restoration of a person's original humoral constituents. Unani System is one of internationally accepted treatments of medicine in present day also.

Courses

1. Bachelor of Unani Medicine and Surgery (BUMS)
2. Kamil-e-Tob-o-Jarahat
3. Mahir-e-Tibb
4. MD/MS/PG (Unani)

Eligibility

For BUMS – 10+2 or equivalent certification with Science

After BUMS/Graduation

AIAPGET -2018 can apply for admission to

MD/MS (Unani)

Institutes/Universities

1. National Institute of Unani Medicine, Bangaluru
2. Delhi University (Faculty of Ayurvedic & Unani Medicine)
3. A & U Tibbia College & Hospital, Delhi
4. Rajiv Gandhi University of Health Sciences, Bengaluru, Karnataka
5. Dr NTR University Of Health Sciences, Vijayawada, AP
6. Kaloji Narayana Rao University of Health Sciences, Telangana, Warangal
7. Aligarh Muslim University, Aligarh

ANTHROPOLOGY

Introduction

Anthropology is the study of humans, past and present in their cultural and biological conditions. This combination sets anthropology apart from other humanities and natural sciences. In simple terms, anthropology deals with determining what humans are, how they evolved, and how they differ from one another.

Courses

1. B. A. / B. Sc.

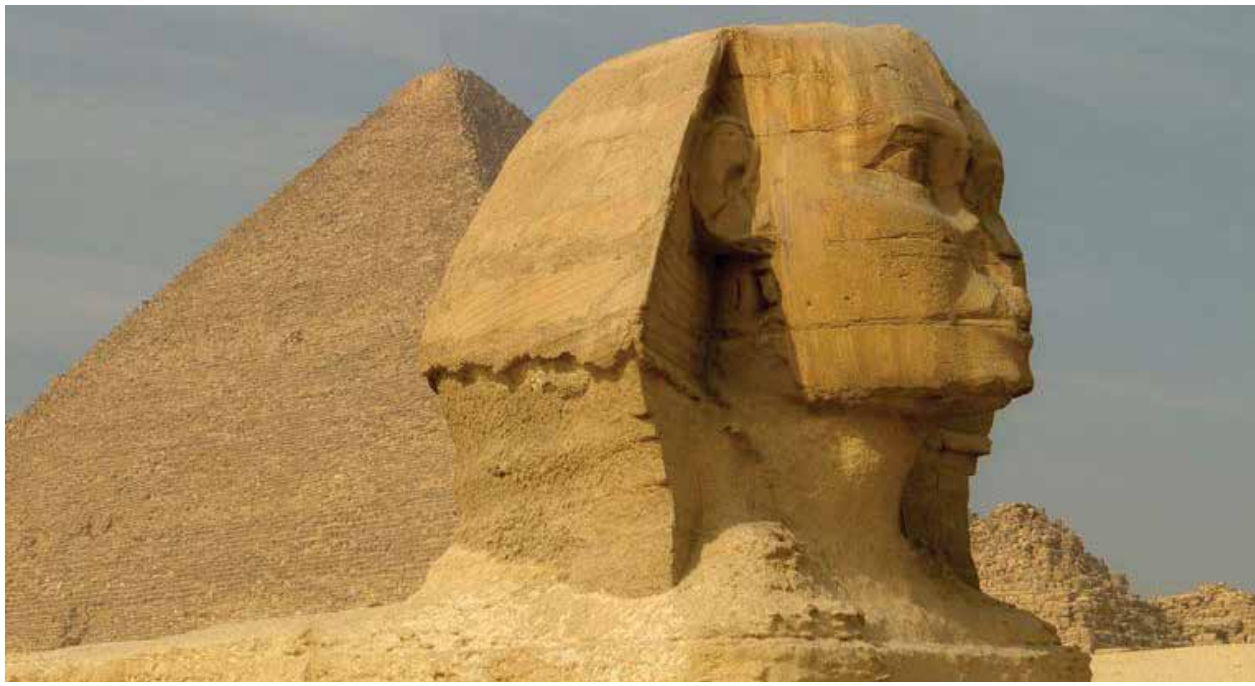

2. M. A. / M. Sc.
3. M. Phil.
4. Ph. D

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry, Biology and/ or Mathematics as main subjects.

Colleges/Institutes/Universities

1. Banaras Hindu University, Varanasi
2. AU - Andhra University Visakhapatnam
3. Panjab University, Chandigarh
4. Dibrugarh University, Assam
5. Guwahati University, Guwahati
6. Karnataka University, Dharwad
7. Sambalpur University, Orissa
8. Institute of Archaeology, New Delhi,

ARCHAEOLOGY

Introduction

The course is a subfield of anthropology. It exposes students to reconstruct extinct cultures from the artefacts as it studies the ancient and recent human past through material remains.

Courses

1. Bachelors of Arts in Ancient Indian Culture.
2. Bachelors of Arts in Ancient Indian History and Archaeology
3. Bachelors of Arts Archaeology and Museology
4. Master of Arts in Archaeology
5. Master of Arts in Museology

Eligibility

10+2 with History

Institutes/Universities

1. Institute of Archaeology, New Delhi
2. National Museum Institute, New Delhi
3. Delhi Institute of Heritage Research and Management, New Delhi
4. MSG University, Baroda
5. University of Madras, Chennai
6. Tamil University, Thanjavur

ART RESTORATION

Introduction

Art restoration is a specialized course which involves inspection, documentation, treatment and precautionary care of the art objects.

Courses

1. Bachelor's degree in art history, studio art, anthropology, archaeology
2. M. A. in art history, studio art, anthropology, archaeology
3. PhD in Art Conservation

Eligibility

Pass 12th class in any stream

Institutes/Universities

1. Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh
2. Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana
3. Mysore University, Mysuru, Kanataka
4. University of Madras, Chennai, Tamil Nadu
5. National Museum, New Delhi
6. University of Allahabad, Allahabad, Uttar Pradesh

CURATION

Introduction

A curator is a manager or overseer of a cultural heritage institution such as gallery, museum, library, or archives in charge of content and institution's collections and involved with the interpretation of heritage material.

Courses

1. M.A.
2. Ph.D

Eligibility

10+2 and Bachelor's degree in art, history, archaeology, museum studies or a related field

Institutes/Universities

1. National Archives of India, Director General of Archives, National Archives of India (School of Archival Studies), New Delhi
2. National Museum Institute, History of Art, Conservation and Museology (Deemed to be University), New Delhi

EDUCATIONAL/VOCATIONAL SCHOOL COUNSELLOR

Introduction

The course deals in techniques of counseling individuals and providing group educational and vocational guidance services, crisis intervention for students, how to resolve behavioural, academic, and other problems.

Courses

1. Advanced Diploma in Child Guidance and Counselling
2. Diploma Course in Guidance and Counselling
3. Certificate Course in Counselling and Guidance
4. BA /MA in psychology, child development or social work

Eligibility

Graduate/ Master's degree (Social Work /Psychology/Child Development/Community Resource Management/ Development Communication Extension/Nursing/Special Education/ M. Ed. / B. Ed. with experience

of teaching/working with children. The candidates applying for admission should be proficient in English.

Institutes/Universities

1. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)
2. Ambedkar University, Delhi
3. Dr. B.R. Ambedkar Open University, Telangana
4. University of Delhi
5. National Institute of Public Cooperation and Child Development, New Delhi
6. National Council of Educational Research and Training, New Delhi

MONUMENTS AND SCULPTURE

RESTORATION

Introduction

Restoration (cultural heritage), is the process through which trained professionals clean, repair and restore a damaged artwork. These types of art work could include paintings to sculptures to even manuscripts. These ancient artefacts, monuments and paintings are maintained and are given a new life by art conservators and art restoration or by Monuments and Sculpture restoration experts.

Courses

1. Bachelor's Degree- in archaeology, ancient and medieval history, world history, studio art, fine art, art history, or a related field.
2. M. A. in Conservation, Preservation and Heritage Management
3. Ph. D

Eligibility

10+2 with History

Institutes/Universities

1. National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property - NRLC, Lucknow
2. Delhi Institute of Heritage Research and Management, New Delhi.
3. Sinhgad College of Architecture, Pune

Out of My Depth

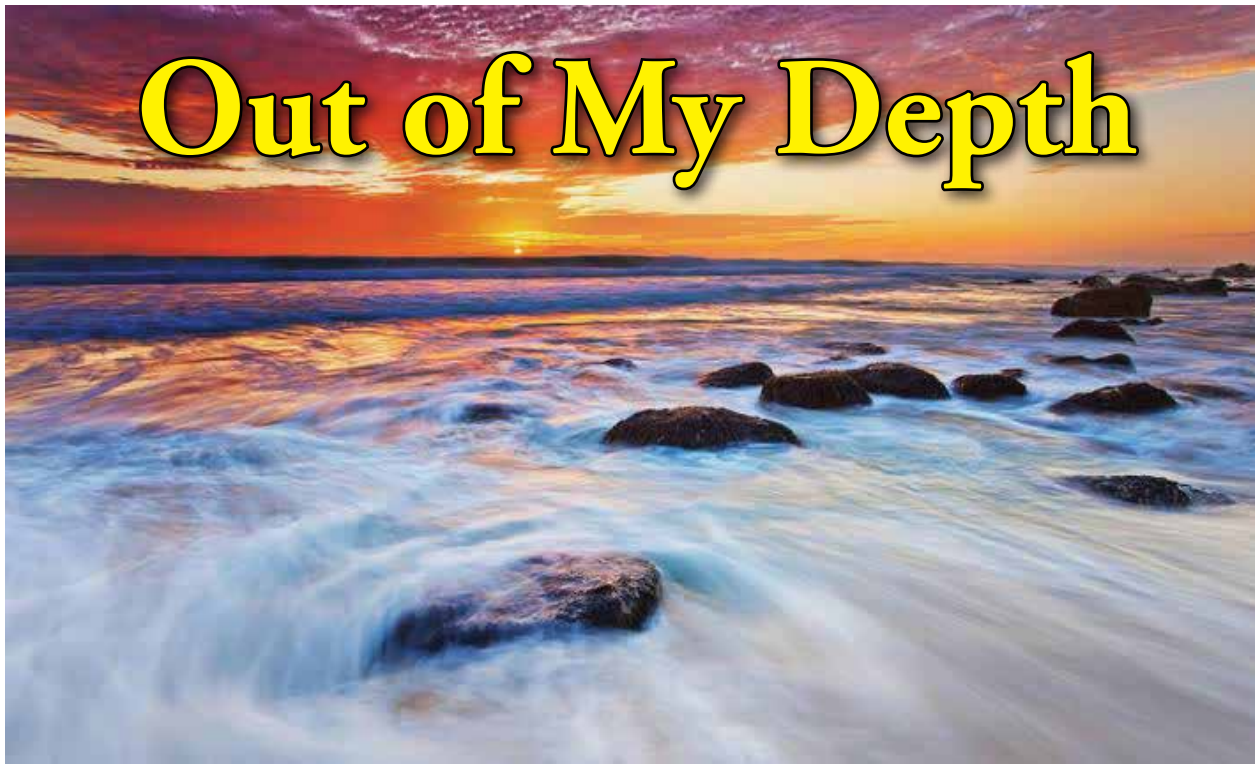

Dr. Deviyani Singh

I walked into the Seaside Cafe for high tea after watching a beautiful sunset. It was empty but for a couple sitting at the last table. The woman had her back to me. I thought the silhouette looked familiar. As the wooden floorboards creaked with my approaching footsteps she turned around... I got the shock of my life; she was my wife...

But how was that possible? I had held her firmly down by her shoulders under the water in the tub till the last breath ebbed from her body. I had made sure she was dead. She laid still, her lips slightly parted, her eyes wide open, with furrowed brows as if questioning her fate, her auburn hair curling like seaweeds upwards. She still looked so beautiful, just like the first time I saw her swimming in the sea at the very last point of the Andaman Islands…

She was a sight to behold as she swam up to me and looked right into my eyes smiling and told me her name was Anahita. It was love at first sight for us and I invited her to come and have coffee with me at the Seaside Café. She said she would join me in some time. I waited about an hour and was just beginning to lose hope when there she was, dressed in a shimmering sea green evening dress. She glided across to where I sat and we talked for hours till the Café manager said its closing time and we had to leave. I offered to drop her home but she refused saying she would check out of her hotel and come and stay in mine in the morning. Her image haunted me all night, she was a vision and so easy to talk to, the conversation flowed between us like the never ending waves of the ocean and I was mesmerized. I longed to be with her again.

The next day as promised she met me in the lobby. She had really checked into my hotel and I could not believe my luck. She had surprisingly less luggage, just a few summer dresses, a pair of flip flops, hair accessories and a huge collection of shells and some pearls. I thought her to be a beach hippie or something like that. She told me she had just been robbed of her luggage a few days back and had tried to contact her relatives to help her out but there was no news yet. So I in fact was a God send for her.

Days went by and we grew closer. Days turned to a month and I proposed to her and she gladly accepted. I went to buy her a diamond ring but she said she wanted one of the rarest pearls instead. So I got her a platinum ring with a huge blue Akoya pearl which looked perfect on her delicate finger. We had a simple wedding down by the beach

with just a few hotel guests whom we had got acquainted with and no family from either side. I anyways was an orphan and had never got any love except the unconditional one I had suddenly chanced upon from Anahita. I asked her where she would like to go for a honeymoon but she said we were in her favourite spot already so she had no wish to travel anywhere.

We toured the neighbouring islands in the daytime. It was a mutual paradise for us, and even though we were married now we were still happy to just be in each other's company just like teenagers in love.

Only the evenings were a problem. She would say she wanted to walk by the beach by herself. No matter how much I insisted she would not let me accompany her. I found this very strange but initially I was so much in love with her it didn't matter. She would return in an hour or so looking happy, so I didn't question her about it; after a while my initial curiosity died down.

But one day it got late and I grew worried. She never carried any mobile with her so I had no way of contacting her. I went down to the beach but there was no sign of her at our usual walking places I kept walking as the sky turned a dusky red and the tide was coming in. I had walked nearly a kilometer when I came to a hidden cove. During low tide this place was dry but during high tide water filled inside the many caverns of this underwater labyrinth making it dangerous for visitors. It even had a warning sign at the entrance asking visitors not to go inside.

To my shock there she was standing waist deep in water. I was about to call out to her when in the fading light I

saw she was talking to someone. There was a good looking man with the same auburn hair as hers. I retraced my steps, hid behind a rock and watched. Just then she waved goodbye and started coming out of the water. I followed her at a safe distance all the way to back to the hotel.

Once we were in the room I asked her why she got late but I did not tell her I had followed her or what I had seen. My heart sank as she lied to me without batting an eyelid. She said she lost count of time and she would be more careful in future. She tried to hug me that night but I turned away as I felt sick to the pit of my stomach. I was hurting too much inside to get any sleep. I decided not to ask her any more questions but to follow her again and get to the bottom of what she was up to before confronting her. I kept thinking one horrible thought after another. But as hard as I tried I found it difficult to think anything bad of Anahita, as I loved her so much and I was sure she loved me too. Why then was she lying to me? I just had to find out myself.

So the next day I pretended to have an upset stomach and slept in. Another weird thing about her was she avoided sea food which was strange, considering she loved the sea so much. One day she had sneaked into the hotel kitchen and set free all the live lobsters kept there for cooking!

I told her – "Anahita, I'm not feeling well today. I think those clams I had for dinner did not agree with me."

"I told you Akash, don't have so much sea food all the time but you never listen to me." she replied petulantly.

"Are you going to keep me company then and nurse me back to health?"

"No, you don't deserve it, serves you right for eating those poor clams!"She retorted.

I was crushed inside, but I managed a weak laugh. I lay curled up in bed waiting for evening to fall. I was hoping against hopes that she would not go for her beloved walk. She checked to see if I was asleep and then sure enough, she tiptoed to the door, gently opened it and let herself out.

I jumped out of bed in a flash, pulled on my jeans and t-shirt and began to follow her. She headed in the same direction as the cove and I followed from a distance. I kept dodging from her view, hiding behind the rocks. But as I reached the cove she was nowhere in sight. I kept waiting, watching the tide coming in. The sea was rough that day and I dared not go into the caverns. There was only one entrance and if she was inside I would risk being seen. To add to that was I was not much of a swimmer myself and would surely drown in the rough waves. I decided to wait and then head back to the hotel if there was no sign of her. After waiting for half hour my heart skipped a beat as she suddenly appeared like out of nowhere. She came out of the water swiftly and I had to run as fast as my legs could carry me so I could reach the hotel before her.

I reached the room and jumped in bed still sweating profusely from the effort. She came up to me and placed her hand on my forehead.

"Oh dear, I think you have fever. You are burning up and sweating. I think I should call for a Doctor."

She bent to pick up the receiver and I slammed my hand down on it.

"No don't! I'm fine I feel better already."I could not hide the irritation in my voice, but she put it down to being ill.

I was restless the whole night and didn't get a wink of sleep. All I could think of was the next evening and the events that would take place. This time I decided to go there and hide myself before she came so I could get to know who she was meeting or where she disappeared. I told her I was going to sit in the coffee shop for a while and I ran all the way to the cove and lay in wait.

As the tide came in I saw the same man swimming there in the small lagoon adjoining the caverns. He was an expert swimmer and just glided over the waves, he was strong built as well. Then I saw her approaching, she entered the water and they hugged. They seemed delighted to see each other.

I could not bear to watch anymore. Tears filled my eyes and my heart felt it was being tossed and torn apart on the sharp rocks on the beach. I trudged back to the hotel. I could barely stand up and staggered back to my room flopped down on my bed and passed out.

It must have been a few hours when I woke I could hear her singing softly. The bathroom door was ajar and she lay in the tub in a bubble bath. "Soooo, Anahita how was your evening walk today?"

"It was great as usual honey." she answered looking at me with wide eyed innocence.

"So you didn't have any company? You sure you are not meeting anyone?"

"I'm sure honey; you are my one and only true love."

The words had barely left her mouth when in a fit of rage I grabbed the towel from the rack wrapped it around her head and shoulders and held her underwater. Her legs and hands thrashed around wildly, as she tried to grab my hands but I was too strong for her. I held her like that till she stopped moving.

Then I sank down in horror at the realisation of what I had done in my fit of rage. I was panicking but I had to control myself. I wiped all my finger prints off from around the tub. I took off my clothes and put them in the laundry bag and changed into my night clothes. Then I called the Police.

When they rang the doorbell and came in I told them I had found her lying unconscious in the tub, and I thought maybe she had drowned while I slept. The Police officer went into the bathroom and shouted,

"Sir come here quick, look!"

We all rushed into the bathroom. The tub was empty! There was no body there.

The Policeman asked me -"Sir, have you gone mad? Did you imagine the whole thing? Why are you wasting our time?"

As for me I didn't know whether to be relieved or horrified that the body was missing. I felt I was going crazy myself.

I felt my head spinning; the forensic guys however did their job looking around for any clues as to where she may have gone. There were only some strange triangular shaped marks of water around and a little distance from the tub which disappeared on the carpeted surface.

"Are you sure you were in the room the whole time?" the forensic guy asked.

"Yes, I just went to the bedroom for 5 minutes to call the cops and then I waited there but I never left the room. I did not hear the door open or anyone come in either although I had left it unlocked."

"Your wife is probably roaming around somewhere. Call us in the morning, if she doesn't return we will file a missing person's report." Saying that they left, quite convinced I was imagining things.

I remained distraught, my conscience was killing me. Since the body was not found there was no crime. I almost half wished they had found out and convicted me. I had made a fatal mistake as I was not in my senses. Not

a day passed now when I would not cry my heart out in dismay at what I had done. I felt like there was no place in Hell even for an evil man like me, how in a fit of jealousy I had so easily snuffed the life out of a beautiful creature like Anahita. I stayed on for an agonizing week in the hotel and when there was still no sign of Anahita I packed my bags and left.

I took leave for three months from work as I was not able to concentrate anymore and spent my time travelling. Still my mind found no rest, so bad decision as it might be I decided to return to the Little Andaman's beach where I had first met Anahita. I checked into the same hotel once again and went for a walk down to the Seaside Café…

And there she was; I shouted in disbelief-"Anahita, you are alive?!!" The startled couple got up in a flash and started running towards the secret cove. They dived headlong into the water and disappeared.

I was left staring into space astounded. My legs were shaking. I had not had anything except for my prescription depression medicines which I could not do without. I stood looking out to the sea till my eyes could see no more and the tide began rolling in.

Anahita-

She popped her head above the waves one last time to look at her husband, treading water with her big tail fin. Her twin brother Adrian pulled her back down-

"You must never go back to that life Anahita. You were lucky we as twins have the ability to survive both on land and the sea. You must never tell any human about the existence of our species or they will capture us and put us in their aquariums as exhibits like they do with our dolphin brothers. I know you have always been fascinated with the life on land but you can never fit in there, come now let us return to our home."

But Anahita did not listen, she came running up to me and I watched in awe as I saw her tail fin convert into human legs. She hugged me one last time and told me this unbelievable tale.

"Akash I was shattered and heartbroken you tried to kill me. I could not tell you my secret as then I would endanger my entire kin. I kept going back to the cove to meet my family as I missed them and could not stop seeing them. When you were drowning me my gills opened miraculously although I was told mermaids lose the ability to breathe underwater once they have chosen to live on the land. I was saved and had to run away to avoid being discovered. I'm going back now to where I belong. You must never tell a soul or I will tell everyone how you tried to kill me."

She took off her blue pearl ring, handed it to me and was gone, with a few graceful flips over the waves she disappeared out of sight forever.

I live by the beach now in a shack. I can't tell anyone I was once married to a mermaid as they would think I'm crazy and lock me up in a mental asylum. I wouldn't get convicted for a crime I didn't commit, but the attempt to do it would land me a few years in jail. So I live with this secret for the rest of my days. I collect the shells Anahita liked so much and I run a small café down by the beach. I wear the ring around my neck strung through a black string. I keep picking up the starfish I find washed up on the beach during low tide every day, and put them back into the Ocean.

Every forlorn evening when the tide rolls in I look out to sea hoping to catch a glimpse of Anahita someday, but she never returned. I'm sure she must miss me as much as I miss her but I guess no one can see her grief and there is no one she can share it with.

Or as Hans Christian Andersen wrote -"But a mermaid has no tears, and therefore she suffers so much more.

Disclaimer : This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

MELODIES OF OUR UNIVERSE

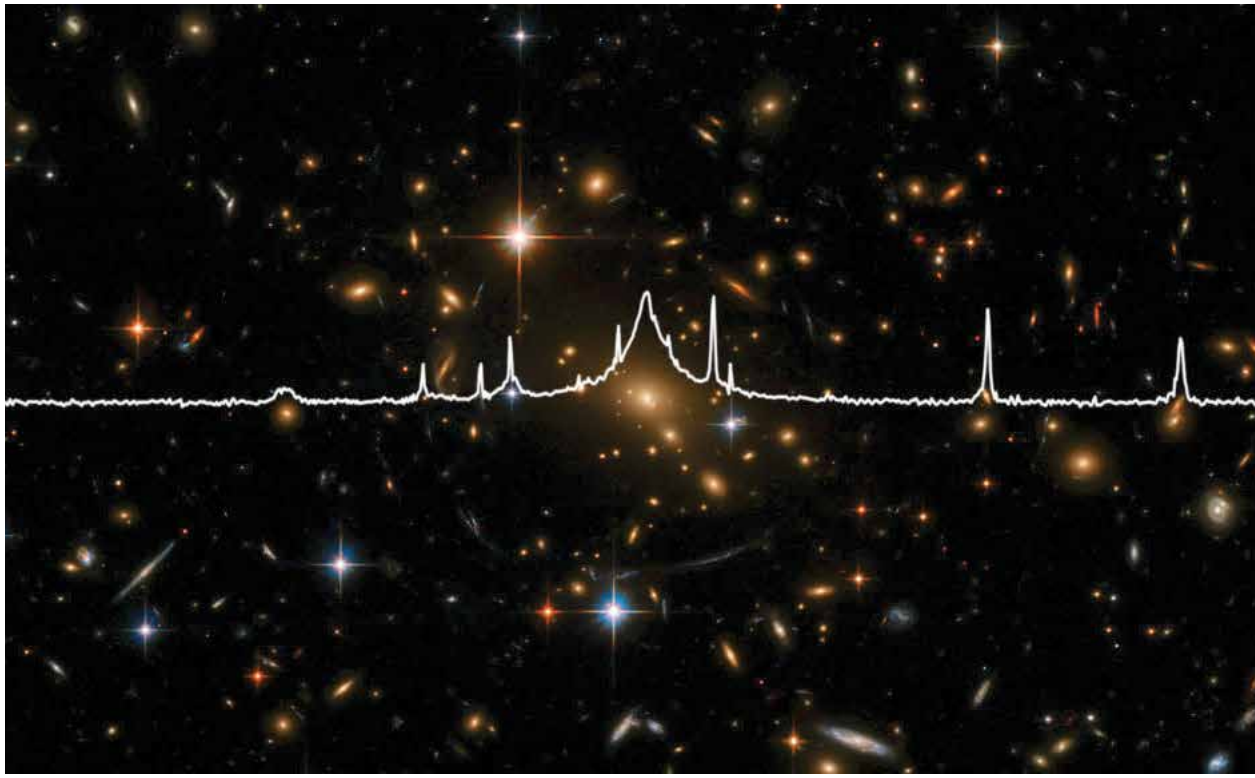

"Music is magical, to the extent, that it can bring out life from the lifeless."

It is amazing to note that musical notes have the power to change the shape of the entire universe. Until now, we were to believe that music is confined to only our realm. Astonishingly, NASA's latest discovery reveals that musical charms exist in the core of the milky way too! Scientists were till date dependent on only telescopes to study its galactic center. To reduce their dependency on optical instruments, they have successfully devised sonic instruments based on the principle of signification.

Signification is the process that translates data into sound especially of an image captured by a telescope. The translation begins on the left side and moves to the right side of the image. The light of objects located towards the top of the image are heard as higher pitches while the intensity of light controls the volume. Stars are converted to individual notes while nebulae and extended clouds of gas produce an evolving drone.

Users can listen to data from this region, roughly 400 light years across, either individually from NASA's Chandra X-Ray Observatory, or together as an ensemble in which each telescope plays a different instrument.

This project has also produced signified versions of various constellations and supernovae.

Wouldn't it be wonderful if we lend our ears to the melodies of our universe? It's worth a try. What if it takes us on a new musical journey to a parallel universe?

Atharv Shira
Class- X -B
St. Kabir Public School
Sector 26,
Chandigarh

Reopening of Schools

Schools from Kerala, Karnataka, and Assam have been reopened from 1 January. All government schools and coaching centers across the state opened from 4 January 2021 as per the order of the Bihar government. Schools opened in Maharashtra for students from 9th to 12th standard from January 4. They will strictly follow the Covid-19 guidelines. Earlier schools in Uttar Pradesh, Punjab, Madhya Pradesh, Andhra Pradesh, Jharkhand, and Sikkim have already been partially opened. Although some states have decided not to open schools yet, the government of the national capital Delhi says that it is not right to open schools until the Covid-19 vaccine is introduced. Given Corona's new strain in Mumbai, it had been decided to keep the school closed till January 15. There will be neither secondary nor higher secondary examinations in West Bengal this year, nor will schools open.

Now when schools and colleges are being opened slowly, what kind of precautions need to be taken, what precautions need to be taken because the Corona epidemic is not yet over. Universities and schools across the country were closed in mid-March when the central government announced the closure of educational institutions across the country as part of measures to prevent the spread of corona virus infection. After that, a nationwide lockdown was implemented on 25 March. From June 8, the government started gradually reducing restrictions under 'unlock'. Amid the epidemic, there is some opposition across the country to open schools and PUCs, while many people believe that opening of schools and colleges with security measures has become especially necessary in rural areas as online education is mostly absent. Due to which there have been cases of their wages.

Closure of schools worldwide to curb the spread of Covid-19 has revealed several health risks, with the most impacting on children. Many children missed school meals. Negative effects of mental health were seen on them. According to data from the Indian Council of Medical Research (ICMR) on the dashboard of the National Council for Disease Control, 11.89% of Covid-19 cases in India are under 20 years of age. School closures in India have affected 247 million children enrolled in primary and secondary education and 28 million children who were attending pre-school education at Anganwadi centers. Covid-19 poses a serious threat to India's effort in neonatal mortality (NMR) and infant mortality (IMR), which have seen improvement in recent years. Government schools across the country have already lacked better access to water quality, sanitation, and hygiene facili-

ties are not available.

Now when students and teachers return to school, with their incomplete education, the school will have to be ready to focus on the health and well-being of the communities. It will be a different challenge. It will be a big challenge to complete their learning gap with cleanliness with rotation. Students have four months. This year there will be examinations in a changed pattern as the syllabus has been reduced by 30 percent for classes X and XII. Board exams will be taken only on a reduced syllabus. Parents are also concerned that before these exams, schools attached to different boards of education are preparing to take the pre-board examinations. Pre-board exams will be taken online. School people say that by taking online examinations, children will be corrected by catching their mistakes. This will show the ability of children.

At this time, parents should not only provide full support to children in preparing for school exams but should also teach them how to face life's challenges. The tenth and twelfth examinations are an important turning point in life. These exams determine the future of students. Someone has to move forward in the field, these exams are decided by them. Passing students without exams would have played with their future. It is not a good move to give 'corona certificate' to students from large classes of colleges and schools without examinations. In the Corona era, virtual classrooms have also made the Internet an important link for education, but we have also learned that a large section of the country has neither a smart phone nor a computer nor internet facility. From which we came to know that online education is right in a time of crisis, but it cannot be made a substitute for traditional knowledge classes. We will have to open schools,

after all, otherwise, the gap of education inequality already going on will increase further.

Worldwide, 1 in 9 children and adolescents reported Covid-19 infection. These numbers break the myth that children are rarely affected by the disease, which is prevalent as an epidemic. But obstruction in key services and increasing poverty rates is the biggest threat to children and if the crisis persists for a long time, it has a profound impact on children's education, health, nutrition, and well-being. Children's vulnerabilities increased during this period, as health services were disrupted and schools remained closed, giving children free mid-day meals in schools for disadvantaged children. With the opening of schools, it may now happen that the school does not become the main driver of community broadcasting and the children get a good environment inside the school so that they can avoid the effects of corona and can also study. Nevertheless, we have to take full precautions so that along with the school opening, we do not make any big mistakes.

Dr. Satyavan Saurabh,
Freelance Journalist
Bhiwani, Haryana

Amazing Facts

1. **Mickey Mouse is known as "Topolino" in Italy.**
2. Rice is thrown at weddings as a symbol of fertility.
3. More than 90% of shark attack victims survive.
4. The average temperature on Earth is 15 degrees celcius.
5. To produce a dozen eggs, a hen has to eat about four pounds of feed.
6. Pollsters say that 40 percent of dog and cat owners carry pictures of the pets in their wallets.
7. A cockroach can change directions up to 25 times in a second.
8. Cricket chirping can tell the temperature outside. Counting how many times a cricket chirps in 15 seconds and then adding 40 to that number will approximately tell you what the temperature is in Fahrenheit.
9. After the death of the genius, Albert Einstein, his brain was removed by a pathologist and put in a jar for future study.
10. Cubic Zirconia is 55% heavier than real diamonds.
11. The fastest speed a raindrop had reached when falling is seven miles per hour.
12. Battle Creek, Michigan is referred to as the "Cereal Bowl of America." The city produces the most breakfast cereals than any other city in the world.
13. The stringy thing that is seen in egg whites is called "chalazae."
14. The city of Argentia which is located on Newfoundland's southwest coast, is Canada's most fog-bound community. It has 206 days of fog each year.
15. Seven percent of a humans body weight is made up of blood.
16. Most snails are hermaphrodites, meaning they have both female and male reproductive organs.
17. Dogs can be trained to detect an upcoming epileptic seizure.
18. In some parts of the Atacama Desert it has never rained.
19. In 1681, the last dodo bird died.
20. Strawberries are a member of the rose family.
21. It is common in Israel and Egypt to eat watermelon with feta cheese.
22. The most popular recipient of Valentine cards are school teachers.
23. The average stay for a prisoner on Alcatraz, when it was used as a prison, was five years.
24. Bird droppings are the chief export of Nauru, an island nation in the Western Pacific.
25. About twenty-five percent of the population sneeze when they are exposed to light.
26. In Japan, tipping at restaurants is not a norm. However, some restaurants might add a 5 - 10 % service charge to the bill.
27. The first automobile racetrack in America was the 'Indianapolis Motor Speedway,' which had 3 million cobblestones.
28. A cow has four compartments in its stomach.
29. The most popular place to burn candles in the house is the living room.
30. Birds have no teeth.

http://www.greatfacts.com/

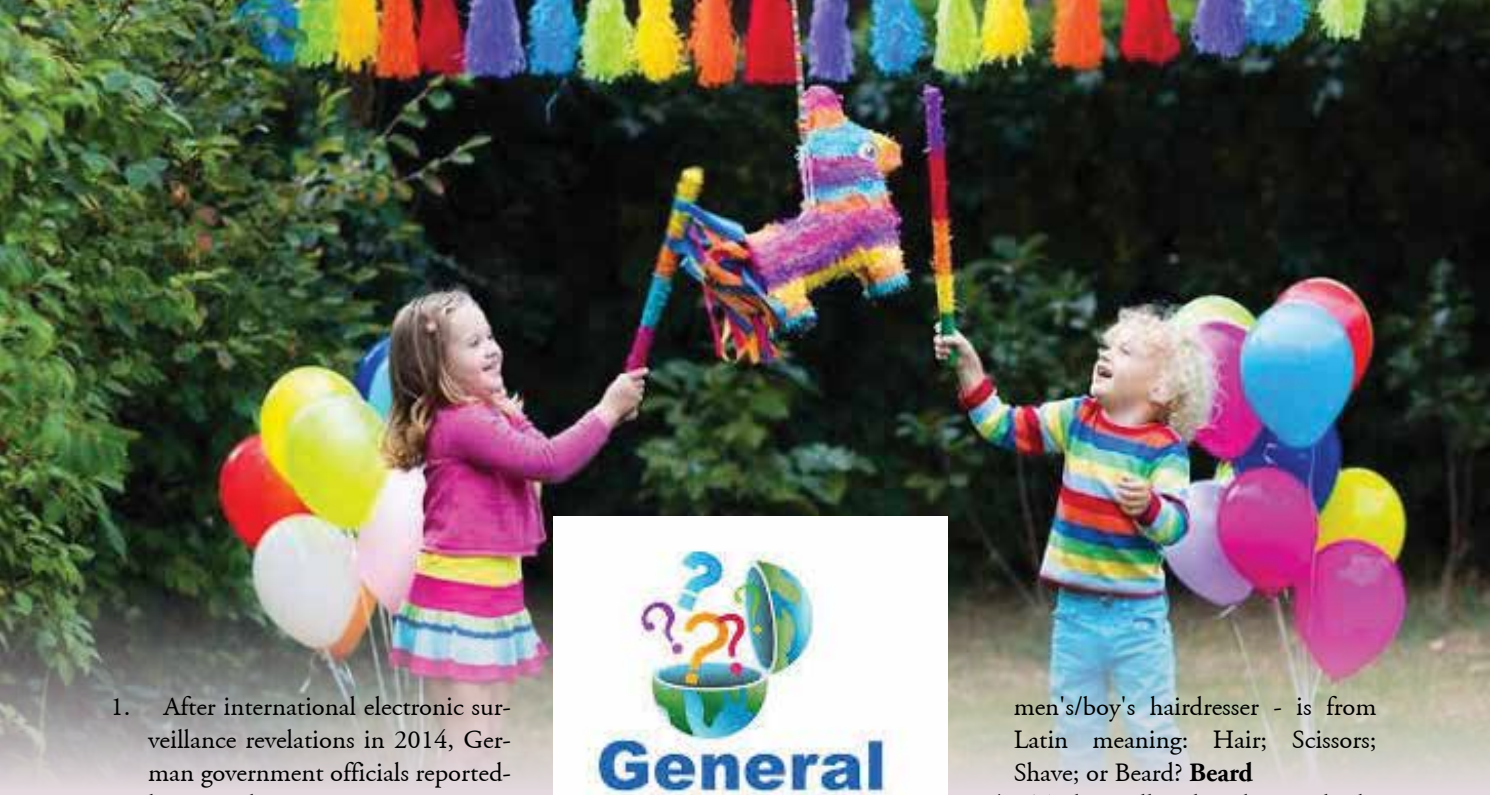

General Knowledge Quiz

1. After international electronic surveillance revelations in 2014, German government officials reportedly reverted to using: WWII Enigma code machines; Carrier pigeons; Typewriters; or Invisible Ink? **Typewriters**
2. Generally what metalwork process extracts a metal from its ore? **Smelting**
3. Which country is markedly the largest producer of garlic globally: China; India; Brazil; or Luxembourg? **China**
4. San Francisco banned a phone app in 2014 which enabled people to sell: Pier fishing positions; Alcatraz pebbles; Metered car-parking spaces; or Beach massages? **Metered car-parking spaces**
5. The HTML (HyperText Markup Language) webpage codes: '<' and '>' produce the maths symbols: Right/Left chevrons; Plus/Minus; Multiply/Divide; or Square/Cube root? **Right/Left chevrons**
6. Hinnomaki Red, Invicta, Pax and Hairy Amber are types of which Ribes genus fruit? Gooseberry
7. A 'Polski Sklep' is a: Sausage; Hat; Ice-skating move; or Retail premises? **Retail premises**
8. 20th Century Fox lost a delightful international TV/entertainment trademark dispute in 2014 to which UK comedy club chain? **Glee**
9. Jam, Wing, Acorn, T, and Hex are types of what? **Nut**
10. The eminent British economist Richard Layard is noted for pioneering work on: Equality; Sustainability; Computing; or Happiness? **Happiness**
11. The Berlin S-Bahn is what sort of system: Railway; Ring-road; Cycle-way; or Canal? **Railway**
12. As at the early 2000s (2000-12 official figures) what country is the world's biggest wine producer? **France**
13. The word barber - meaning a men's/boy's hairdresser - is from Latin meaning: Hair; Scissors; Shave; or Beard? **Beard**
14. Traditionally what do people do with a Mexican piñata: Wear it; Drink it; Ride it; or Smash it to bits with sticks? **Smash it to bits with sticks**
15. Suchen, Buscar, Rechercher and Zoeken appear commonly on German, Spanish, French and Dutch language websites, all meaning what? **Search**
16. The speed of sound in a vacuum is: Fast as light; Same as anywhere else; c.3,500mph; or Zero? **Zero**
17. Which famous city has the official website domain www.mcgm.gov.in? **Mumbai**
18. Mercosur/Mercosul is the South American: Soccer Federation; Space Agency; Common Market Agreement; or Storm System? **Common Market Agreement**
19. Which famous southern-hemisphere city centre has the postal code 2000? **Sydney**
20. What parts of the human body are surrounded by protective skin called the eponychium and paronychium? **Nails**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-316-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

शिक्षा सारथी का फरवरी-2021 अंक पढ़ने का अवसर मिला। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' विशेषांक की संपूर्ण सामग्री ज्ञान से भरपूर थी। संपादकीय से लेकर विविध आलेखों के माध्यम से नई शिक्षा नीति पर विशद चर्चा हुई। मुख्यमंत्री-शिक्षामंत्री से लेकर विभाग के उच्चाधिकारियों के साथ-साथ शिक्षाविदों के इस बारे में विचार भी पढ़ने को मिले। यह सच है कि नीति के आने पर शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन होने की एक उम्मीद जग रही है। प्रमोद कुमार का लेख 'नीति के मूल में दिख रहा है अन्त्योदय दर्शन' बहुत पसंद आया। मेरा एक निवेदन है कि अगर पत्रिका का कोई अंक किसी विशेषांक के रूप में निकाला जा रहा है, तो इसकी पूर्व सूचना दे दी जाए। ताकि लेखकों को उससे संबंधित लेख भेजने में सुगमता हो। धन्यवाद।

रीता
पीजीटी भूगोल
राजकीय आदर्श उच्च विद्यालय, नूरवाला
जिला- पानीपत, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी,
सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक बहुत पसंद आया। विभिन्न लेखों को पढ़कर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के हर पक्ष की विशद जानकारी प्राप्त हुई। डॉ. योगेश वासिष्ठ का लेख 'राष्टीय शिक्षा नीति-2020 और शिक्षक तथा डॉ.प्रदीप राठौर का लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वॉट टु थिंक पर नहीं, हाउ टू थिंक पर बल' बहुत जानकारी से भरपूर थे। सौंगल स्कूल के बारे में लिखे लेख को पढ़कर लगा कि बाकी विद्यालयों को भी ऐसे विद्यालयों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। 'बाल सारथी' के दो पन्ने सदा की भाँति बेहद आकर्षक थे। दर्शन बवेजा के लेखों से विज्ञान की गतिविधियों की नई-नई जानकारी मिलती रहती है।

-बबली यादव
जेबीटी अध्यापिका
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला, अटेली मंडी
जिला- महेंद्रगढ़, हरियाणा

ऋतुराज बसंत

लो आया ऋतुराज बसंत
हो चला पाले का अंत ।
सरसों के खिले पीले फूल,
जौ-गेहूँ के आई बालियाँ
शबनम ने धोई कली की धूल,
कोमल किसलय फूट पड़ी,
आ गया उनमें फिर से तंत।
लो आया ऋतुराज बसंत।।
माँ शारदे बुद्धि का वर दे,
अज्ञानता का घोर तिमिर
मिटा, ज्ञान उजियारा कर दे,
सदाचारी हो जीवन में
बने धीर-वीर और बलवंत।
लो आया ऋतुराज बसंत।।
फूलों पर मँडराये मधुकर,
उद्यानों की सैर करें तब
उर आनंद हो गुंजन सुनकर,
डाल आम की लदी बौर से
अब बीत चला हेमंत ।
लो आया ऋतुराज बसंत।।
दसों दिशा बासंती धूम,
ओढ़े चुनरिया रंग बसंती
यौवन रहा हो मद में झूम,
केसरिया हरि मन भाए
रहा बिखर चहुँ ओर अनंत।
लो आया ऋतुराज बसंत।।
हो चला पाले का अंत।
लो आया ऋतुराज बसंत।।

मास्टर हरिनिवास
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
परखोतमपुर
रेवाड़ी, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

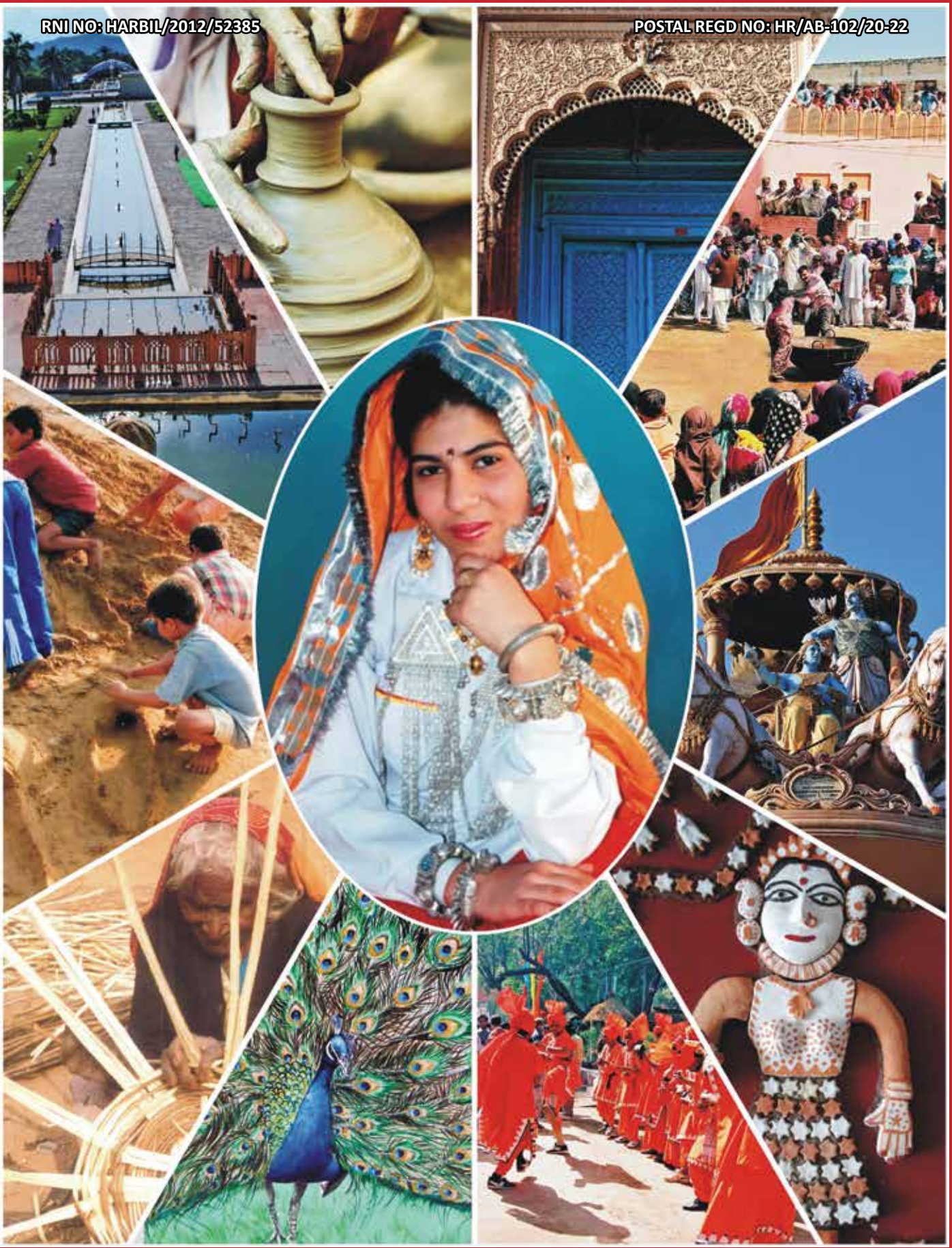

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114